www.rajsevak.com

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 01 | जुलाई, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

हो ज्ञान जहां पर मुक्त

ग्रीष्मावकाश के पश्चात विद्यालय औपचारिक रूप से प्रारम्भ हो गए हैं। नई ऊर्जा एवं अमित उत्साह के साथ गुरुजन शिक्षा के अनुष्ठान में पुनः जुट गए हैं। कोरोना महामारी की त्रासदी के बावजूद हमने शिक्षण-अधिगम के कार्य को जारी रखा और इस हेतु वैकल्पिक तरीके प्रकाश में आए। ऑनलाईन शिक्षण विधि ने पूरे प्रदेश को एक क्लासरूम बना दिया है। इससे दूरियां मिट गई हैं। जिस समय, जिन गुरुजी से जयपुर जिले का विद्यार्थी पढ़ रहा है, उसी समय, उन्हीं गुरुजी से, वही विषय व प्रकरण प्रदेश के शेष सभी जिलों के विद्यार्थी भी पढ़ रहे होते हैं। है न चमत्कार। इसे विज्ञान और वैज्ञानिक विकास कहते हैं।

कोरोना काल में स्कूल बंद रहने के बावजूद शिक्षण जारी रहा। स्माईल प्रोजेक्ट, हवा महल, ई-कक्षा, दूरदर्शन, रेडियो, आओ चलें विद्यालय की ओर आदि कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की गई। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि विगत दो वर्षों में नेशनल रैंकिंग में 20 फीसदी इजाफे के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दृष्टि से राजस्थान देश में द्वितीय स्थान पर पहुंच गया है। देश के +ONE ग्रेडिंग के पांच राज्यों में राजस्थान भी शामिल है। यह उपलब्धि हमारे लिए गर्व करने योग्य है। इसका श्रेय हमारे गुरुजन को जाता है। एतदर्थ सबको धन्यवाद एवं आभार संप्रेषत करता हूँ। बस इतना ही कहना चाहूंगा कि आप इस दिशा में अपनी चाल को धीमा न पड़ने दें। कोई भी उपलब्धि अन्तिम नहीं होती। सुधार की गुंजाईश हर समय साथ रहती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम के लिए आप नए-नए अनुसंधान करें, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

विश्व इतिहास इस बात का गवाह है कि शिक्षकों ने हमेशा सुधार एवं चेतना के कार्य किए हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधाओं में अधिकांश शिक्षक थे। शिक्षण संस्थाओं एवं शिक्षा रूपी उपकरण से उन्होंने समाज को जगाया था। वे शिक्षक के वेश में समाज सुधारक थे। शिक्षा से ही समाज का सुधार होता है और शिक्षा, शिक्षक देते हैं। अतः शिक्षक को समाज सुधारक कहा जाना कोई अतिशयेक्ति नहीं होगी। कोरोना महामारी से मुकाबला करने में शिक्षकवृंद ने बहुत सराहनीय कार्य किया है।

कोरोना के खतरनाक डेल्टा प्लस वैरिएंट की राजस्थान में आहट सुनाई दे रही है। इसका बचाव वैक्सीन और मास्क में है। दुनियाभर के मेडिकल विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं। समय की नजाकत को ध्यान में रखते हुए गुरुजन से अपील है कि वे कोरोना की तीसरी लहर से प्रदेश को बचाने के लिए चलाए जा रहे सामाजिक चेतना अभियान के अग्रदूत बनें। हमें इस बात पर गर्व करना चाहिए कि सम्पूर्ण देश में मास्क की अनिवार्यता सम्बन्धी कानून लागू करने वाला प्रथम प्रदेश राजस्थान ही है। राजस्थान के No Mask No Entry जारूकता अभियान की भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी सराहना हुई है। वर्तमान में कोरोना महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के तीन मंत्र हैं :-

1. घर से बाहर निकलें तो हमेशा मास्क पहनें।
2. आपस में दो गज की दूरी बनाए रखें।
3. अपने हाथ साबुन से धोते रहें या सेनेटाईज करें।

यह सुनिश्चित करने के लिए गुरुजन को अपने जनसम्पर्क के दौरान छात्र-छात्राओं के परिवारजन एवं अन्य व्यक्तियों को समझाईस करनी है। मुझे विश्वास है कि आपके सदप्रयास निश्चय ही फलीभूत होंगे।

मुझ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कालजयी कृति गीतांजलि की निम्न पंक्तियां याद आ रही हैं, जिन्हें गुरुजन को समर्पित करते हुए अपनी बात को विराम देना चाहूंगा :-

''हो चित्त जहाँ भय शून्य, माथ हो उन्नत,
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला यह जग हो,
घर की दीवारें बनें न कोई कारा,
हो जहाँ सत्य ही स्त्रोत सभी शब्दों का,
हो लगन ठीक से ही सब-कुछ करने की,
हे पिता! मुक्त वह स्वर्ग रचाओ हममें,
बस, उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।''

नवसत्र की हार्दिक शुभकामनाएँ!

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

“विश्व इतिहास इस बात का गवाह है कि शिक्षकों ने हमेशा सुधार एवं चेतना के कार्य किए हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधाओं में अधिकांश शिक्षक थे। शिक्षण संस्थाओं एवं शिक्षा रूपी उपकरण से उन्होंने समाज को जगाया था। वे शिक्षक के वेश में समाज सुधारक थे। शिक्षा से ही समाज का सुधार होता है और शिक्षा, शिक्षक देते हैं। अतः शिक्षक को समाज सुधारक कहा जाना कोई अतिशयेक्ति नहीं होगी। कोरोना महामारी से मुकाबला करने में शिक्षकवृंद ने बहुत सराहनीय कार्य किया है।”

www.rajsevak.com

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 1 | आषाढ़-श्रावण, २०७९ | जुलाई, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- सीखने की निरन्तरता 5

आलेख

- महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय बनेंगे भविष्य का आधार 6
  सुभाष चन्द्र
- ध्यान की शक्ति 7
  डॉ. रविबाला सोलंकी
- Mahatma Gandhi Government School (English Medium) Mansarovar, Jaipur 8
  Anu Choudhary
- सकारात्मक सोच 11
  लालचंद सोनी
- विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास 12
  भूरमल सोनी
- विद्यालय में आधारभूत विषयों का स्थान 14
  डॉ. चेतना उपाध्याय
- जीवन की नींव उत्तम स्वास्थ्य 16
  सुरेश कुमार
- गाँधी विचार और पर्यावरण 17
  विजय सिंह माली
- सीखने की पारिस्थितिकी 18
  सुभाष चौधरी
- सर्वे भवन्तु सुखिन : सर्वे सन्तु निरामया 19
  ओम प्रकाश सारस्वत
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) अब होगा ऑनलाइन 32
  मनीष गहलोत
- मानव जीवन में गुरु का महत्त्व 33
  अभय कुमार जैन
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का महत्त्व 34
  शिव प्रकाश शर्मा
- ओलंपिक तक दौड़ने वाले प्रेरणापुंज : मिल्खा सिंह 35
  आत्माराम भाटी

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : जुलाई, 2021 21-29
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 30-31
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 37-42

- अनुभव के मोती
  कवि : ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'
  समीक्षक : **आशा खत्री 'लता'**
- सौरठा सौरभ
  लेखक : नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'
  समीक्षक : **डॉ. श्रीनिवास शर्मा**
- सपनों के सच होने तक
  कवि : राजकुमार जैन 'राजन'
  समीक्षक : **प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'**
- अंतस री आवाज
  सिरजणकार : डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत';
  समीक्षक : **डॉ. प्रकाशदान चारण**
- मुगत आभौ
  लेखकः पुनीत कुमार रंगा
  समीक्षक : **डॉ. रेणुका व्यास**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

www.rajsevak.com

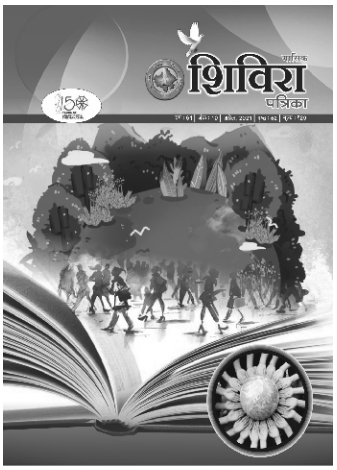

▼ चिन्तन

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्
यस्येह प्रणश्यति।
न तस्म जीवितेनार्थो न
धनेन न बन्धुभिः।।

भावार्थ : शील ही मनुष्य का प्रमुख गुण है। जिस व्यक्ति का शील नष्ट हो जाता है, उसके लिए जीवन और बंधु किसी काम के नहीं। अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है।

पाठकों की बात

● पाठक की भूमिका का निर्वहन करते हुए माह अप्रैल-21 की भूमिका के स्तंभ पाठकों की बात के लिए कुछ पंक्तियां प्रस्तुत है- सम्पूर्ण पत्रिका पठन किया। दिनांक 8 अप्रैल को पत्रिका मिली पूर्ण पत्रिका पढ़ी। मनोरम आवरण पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ चित्रांकित है। अपनों से अपनी बात, समय का मूल्य, मूल्यांकन और नया संकल्प हर पत्रिका में पढ़ने को मिल जाते हैं यह तीव्र खुशी का विषय है। समय के मूल्य में आदरणीय शिक्षा मंत्री राजस्थान का एक दोहा ही पर्याप्त है जिसको उन्होंने उद्धृत किया है। **'आछा दिन पाछा गया कियो नहीं हेत। अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।'** कबीर मनन हेतु पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करता है। श्री सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने मेरा पृष्ठ-दिशाकल्प में विद्यालयी और बोर्ड परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ रहने की कामना की है। आगामी समय में भी ऐसा ही रहे इस कामना के साथ बहुत-बहुत हार्दिक बधाई। चिंतन का श्लोक मनन करने योग्य है, इसमें कतई संदेह नहीं, परम आदरणीय भारतीय संविधान निर्माता श्री अम्बेडकर का 'भारत रत्न' सम्बन्धी आलेख प्रचुर मात्रा में पढ़ने को मिले। यह इस अंक की विशिष्टता दृष्टिगत हुई। उनका शैक्षिक चिंतन पढ़ने को मिला। यह खुशी की बात है। दोनों कविताएं गुरु शिष्य और शाला' अंक को सरस बना रही है। विनम्र निवेदन है कि कविताओं का दायरा बढ़ाए ताकि पाठक आनन्दानुभूति कर सकें। अधिकतम आलेख जो मुझे अच्छे लगे वे ये हैं- वैसे तो समस्त आलेख पठनीय व संग्रहणीय हैं। 'जन जन के मन में बसे हैं राम', 'सभी क्षेत्रों में जरूरी है एकाग्रता', 'आत्मविश्वास जो हमारे भीतर ही है' पर है सुसुप्त है उसे जगाने की जरूरत है। 'सपनों को हमेशा जीवित रखो।' 'विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका', वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार की भूमिका', 'विद्यालयी शिक्षा में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता।' आत्मरक्षा महिलाओं के सशक्तीकरण में अहम भूमिका निभाएगा। शाला प्रांगण से शिक्षक उन्नयन में सहायता मिलती है। पाठ्य सामग्री चयन अत्युत्तम है इसके लिए शिविरा सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई। मैं भी पूर्व में शिक्षक रहा हूँ। साक्षरता में काम किया है। अतः शिविरा मेरा संबल है। मुझे अत्यंत प्रिय है। मिलते ही इसे पूर्ण पढ़ता हूँ। लिखता भी हूँ। पर पढ़ने का शौक ज्यादा है। अतः इस पत्रिका की पाठ्य सामग्री पर टिप्पणी करना अपना धर्म समझता हूँ।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

रचनाएँ आमंत्रित

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 जुलाई, 2021 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

-वरिष्ठ संपादक

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

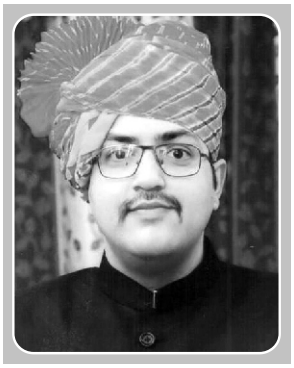

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सीखने की निरन्तरता

को विड-19 दूसरी लहर के बाद, नये शिक्षा-सत्र में आप सभी का पुनः हार्दिक अभिनन्दन!

शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक वर्ष 2021-22 में सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए दो तरफा रणनीति बनाई है पहली-जब विद्यार्थियों के लिए स्कूल बंद हैं, विभाग ने दूरस्थ शिक्षा की योजना बनाई है : ''आओ घर में सीखें''। दूसरी-जब विद्यार्थियों के लिए स्कूल फिर से खुलते हैं तो विभाग ने ''बैक टू स्कूल'' कार्यक्रम की योजना बनाई है।

दोनों ही स्थितियों में पाठ्यक्रम पूरा करने पर दक्षताओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। हमारा उद्देश्य है कि शैक्षणिक वर्ष के अंत तक अधिकतम छात्र, ग्रेड-स्तर पर हों तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करें। कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण; डेटा आधारित शासन स्कूल निरीक्षण तथा सीखने के निरन्तर डिजिटल तरीकों को अपनाना प्राथमिकता में है।

विभाग विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों (CWSN) के लिए मिशन : ''समर्थ'' नामक एक विशेष कार्यक्रम बना रहा है जिसके अंतर्गत e-कक्षा में सांकेतिक भाषा (साइन लैंग्वेज) के साथ डिजिटल सामग्री वितरित की जा रही है दूरस्थ शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को विशेष कार्यपत्रक वितरित किए जाएंगे। मिशन : ''समर्थ'' का उद्देश्य विद्यार्थियों (CWSN) को मुख्यधारा में लाकर उनकी आवश्यकता अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

कोविड-19 के दौरान दूरस्थ शिक्षा ''आओ घर में सीखें 2.0'' कार्यक्रम की तीन माह की योजना है इसे विकसित होने पर बढ़ाया। संशोधित किया जाएगा। कार्यक्रम के चार पहलू हैं। पहला-मूलभूत दक्षताओं पर ध्यान देना; दूसरा-मल्टी मॉडल शिक्षण चैनल; तीसरा-अभ्यास के लिए कार्यपत्रक और चौथा टीचर-स्टूडेंट कनेक्ट। जब विद्यार्थियों के लिए स्कूल फिर से खुलते हैं तो विभाग का फोकस लर्निंग लॉस को कवर करने के लिए विद्यार्थियों के त्वरित सीखने के माध्यम पर रहेगा इसमें तीन चरण हैं- 1. ब्रिज कार्यक्रम, 2. साल भर चलने वाली ''ब्रिज अवधि'' 3. डिजिटल लर्निंग।

आने वाला समय नये उत्साह, नई ऊर्जा, नये संकल्पों की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ हम सभी के लिए मंगलमय हो।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ!

(सौरभ स्वामी)

“शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक वर्ष 2021-22 में सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए दो तरफा रणनीति बनाई है पहली-जब विद्यार्थियों के लिए स्कूल बंद हैं, विभाग ने दूरस्थ शिक्षा की योजना बनाई है : ''आओ घर में सीखें''। दूसरी-जब विद्यार्थियों के लिए स्कूल फिर से खुलते हैं तो विभाग ने ''बैक टू स्कूल'' कार्यक्रम की योजना बनाई है।”

www.rajsevak.com

एक अनूठी पहल

महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय बनेंगे भविष्य का आधार

❒ सुभाष चन्द्र

भारतीय शिक्षा पद्धति विभिन्न चरणों शिक्षा आयोगों से नवाचारी रूप में आगे बढ़ी है लेकिन मूल रूप से शिक्षा का स्वरूप सैद्धांतिक ही रहा है जो भारत के मानव संसाधन का अल्पमय सदुपयोगी रहा है जिसके कारण विश्व में सर्वाधिक मानव संसाधन होने के बावजूद हमें आज के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी युग में विकसित राष्ट्रों पर निर्भर रहना पड़ता है।

शिक्षा का स्वरूप– शिक्षा को शाब्दिक रूप से नियोजित करना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता क्योंकि शिक्षा का वास्तविक अर्थ है व्यक्तित्व का समृद्ध रूप से प्रदर्शन। अधिकांश शिक्षाविदों ने शिक्षा को सीखने तक ही सीमित रखा है परन्तु शिक्षित होना केवल पुस्तकीय ज्ञान या उपाधि अर्जन तक ही संकुचित नहीं है। कोई भी मानव संसाधन जब तक अपने अंतर्निहित अहर्ताओं का मानव कल्याण हेतु व्यावहारिक मंचन नहीं करता, तब तक उसे शिक्षित कहना युक्तियुक्त नहीं है, चाहे वह कितना ही उपाधि प्राप्त क्यों न हो।

भारतीय अधिगम प्रणाली– हमारे राष्ट्र की मानव सम्पदा को शिक्षित बनाने हेतु काफी प्रयास किए गए जिनमें कोठारी आयोग, नई शिक्षा नीति 1986 जैसे नवाचार प्रमुख है परन्तु भारतीय सार्वजनिक अधिगम प्रणाली कभी भी उस रूप में लागू नहीं की गई जिसमें विद्यालयी अधिगम के दौरान विद्यार्थी में अन्तर्निहित कौशल को अवसर प्रदान कर उसे राष्ट्रीय सम्पदा बनाया जा सके। अपार निवेश के बावजूद विद्यालयी सैद्धांतिक शिक्षा पर्यन्त विद्याथी जीवन के उस दो राहे पर खड़ा हो जाता है जहाँ से उसको उसका गन्तव्य नजर नहीं आता क्योंकि विद्यालय में हमेशा से केवल सैद्धांतिक व पुस्तकीय अधिगम मिला। कभी भी उसकी योग्यता, रुचि और कौशल के परिमार्जन को फलीभूत होने का अवसर ही नहीं मिला। जिसकी वजह से वह विद्यार्थी नहीं केवल एक श्रोता बनकर रह गया।

शिक्षा और मानव संसाधन की साम्यता– आज विश्व की जनसंख्या सात अरब पार और हमारे राष्ट्र की डेढ़ अरब के समीप हो गई है। परन्तु यक्ष प्रश्न यही रहा है कि क्या हम समस्त जनसंख्या को मानव संसाधन में परिवर्तित कर पाए हैं? बस यही पैमाना है हमारे शैक्षिक व विकसित स्तर का। हालांकि आँकड़ों का प्रदर्शन मनमोहक है जो पुरुष साक्षरता दर 82% व महिला साक्षरता दर 65% दर्शाता है वह भी हर क्षेत्र में विभिन्नता से जो कि केवल पढ़े-लिखे लोगों का है न कि शिक्षितों का। शिक्षा का मानव संसाधन से सामीप्य है क्योंकि शिक्षित जनसंख्या ही मानव संसाधन बनती है जो राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान देती है वरन् सैद्धांतिक रूप से पढ़े-लिखे लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर केवल बेरोजगारी पैदा करते हैं जिसके कारण उनका व्यक्तिगत व सामाजिक रूप से किसी भी राष्ट्र के लिए योगदान न केवल शून्य हो जाता बल्कि वो राष्ट्र के लिए चुनौती बन जाते हैं।

शिक्षा नीति सृजनशीलता व बहुमुखी कौशल प्रदायणी हो– हर राष्ट्र के उत्थान में वहाँ की शिक्षा नीति का बहुत ही अहम योगदान रहा है क्योंकि किसी भी राष्ट्र ने अपने मानव संसाधन को अपनी अच्छी शिक्षा नीति से ही राष्ट्र हितैषी बनाया है। भारत वर्तमान में विश्व का सर्वश्रेष्ठ युवा राष्ट्र है परन्तु इतने बड़े तरुण जनसागर को संसाधन युक्त बनाने के लिए हमें अपनी शिक्षा नीति की समीक्षा करनी होगी। स्वतंत्रता प्राप्ति से ही हमारी शिक्षा नीति केवल सैद्धांतिक रही है जिसके फलस्वरूप एक शिक्षित युवा राष्ट्र के लिए कल्याणकारी संसाधन न बनकर मात्र चुनौती रह गया है। हालांकि विभिन्न आयोगों के माध्यम से नवाचारी प्रयास किए गए लेकिन सामयिक सदुपयोग आज तक अपेक्षित है। यदि हमें हमारे मानव संसाधन का उपयोग, मानव कल्याणकारी, सृजनशील व कौशलपरक बनाना है तो हमारी शिक्षा नीति को प्रायोगिक व व्यावहारिक स्वरूप देना होगा जिसके फलस्वरूप राष्ट्र के युवाओं की नैसर्गिक प्रतिभा को कौशलपूर्वक काम में लिया जा सके।

आधुनिक शिक्षा बने कौशल का पर्याय– सीखना एक सतत प्रक्रिया है परन्तु यदि इसी सीख को सुगम रूप देकर प्रेरित किया जाए तो वह स्थायी व व्यावहारिक बन जाता है जो व्यक्ति को वास्तविक मानव संसाधन बना देता है। हर जीव नित नया सीखता ही है चाहे माध्यम कोई भी हो। जब हम प्रथमतः साक्षात होते हैं तो केवल ज्ञान होता है जो केवल नाम या परिचय तक सीमित रहता है परन्तु शनैः शनैः संज्ञाओं के अनुभवों व समय के साथ समानता व तुलनात्मक भाव पैदा होने लगता है जिससे हमारी किसी विशेष संज्ञा के प्रति स्थायी समझ बनती है।

यदि हम अपने सिस्टम में बदलाव करके हमारी भावी पीढ़ी को सैद्धांतिक अधिगम के इतर उसकी अभिरुचियों के अनुसार उसका कौशल संवर्धन करें तो यही अधिगम उनकी व्यावहारिक शिक्षा व पहचान बन जाएंगे, जिसके फलस्वरूप वह व्यक्तित्व राष्ट्रहित में मानव संसाधन बन जाएगा जो हर वक्त राष्ट्र सेवा में समर्पित रहेगा। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी की रुचि अनुसार उसके कौशल को व्यावहारिक बनाना होगा जिससे वह हर समय सीखने का प्रयास करेगा और अपने हुनर में सृजनशीलता बढ़ाएगा।

आधुनिक तकनीकी व वैज्ञानिक युग में महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की उपादेयता– यह कहना कतई न्यायसंगत नहीं कि हिन्दी माध्यम के विद्यालय ग्रामीण परिवेश में अपनी उपादेयता साबित नहीं कर पाए। हिन्दी माध्यम ही है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोए हुए है परन्तु ग्रामीण परिवेश में अधिगम हेतु पर्याप्त संसाधनों यथा मानव संसाधन व भौतिक संसाधनों के अभाव व विपरीत हालातों में विद्यार्थी बमुश्किल से स्नातकीय डिग्री प्राप्त कर पाता है जो केवल मात्र यशस्वी पत्र बन कर रह जाता है और उसके सामने तो वही चुनौती का भवसागर खड़ा रह जाता है कि आखिर इतना शिक्षित होने के बावजूद मेरी योग्यता की अहमियत क्यों नहीं है? आधुनिक युग हर पक्ष में प्रौद्योगिकी के साथ अग्रेषित है जिसके साथ चलकर हम अपने आपको कैसे उपयोगी सिद्ध करें यही व्यावहारिक चुनौती है हमारे सामने।

विशेषकर इस चुनौती से ग्रामीण परिवेश सर्वाधिक रूप से प्रभावित है क्योंकि अपर्याप्त संसाधनों के चलते हमारे बच्चे, गूदड़ी के लाल होने के बावजूद अपने कौशल का उचित मंचन नहीं कर पाते हैं और सबके लिए बोझ बन जाते हैं जिसकी वजह से आज 70% आबादी राष्ट्र के लिए सुप्त बेरोजगार व आश्रित बनकर रह गयी है जिसके निर्वहन के बोझ तले 30% मानव संसाधन को दबे रहना पड़ता है।

आदर्श विद्यालय की मिसाल बनें महात्मा गाँधी विद्यालय– आधुनिक तकनीकी

www.rajsevak.com

व वैज्ञानिक प्रणाली पूरी तरह से पाश्चात्य अधिगम प्रणाली पर निर्भर है जिसमें आगे बढ़ने हेतु हमें अपने विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा व सम्प्रेषण को व्यावहारिक बनाना लाजमी है जिसके चलते वो सहजता से अपनी अभिरुचि व कौशल द्वारा अंतरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, सूचना एवं प्रौद्योगिकी तथा कम्प्यूटर शिक्षा में दक्षता सिद्ध कर सकते हैं जो हमारे राष्ट्र के उन्नत भविष्य के लिए बहुत ही जरूरी कदम होगा।

यह सब उस परिवेश के लिए कतई असंभव नहीं है जो औद्योगिक या नगरीय कलेवर में बसा हुआ है क्योंकि वहाँ हर तरह के संसाधनों की उपलब्धता है जो उसे उसकी प्रतिभा के लिए यथेष्ट अवसर प्रदान करता है। यदि हमारे पास उपलब्ध जनसैलाब को मानव संसाधन में परिमार्जित कर राष्ट्रीय धरोहर बनाना है तो हमें ग्रामीण परिवेश के सुदूर उस कोने में भी झांकना होगा जहाँ योग्यता होते हुए भी अवसर नहीं है।

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय ग्रामीण परिवेश के लिए वरदान बनेंगे। आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा व उसका सम्प्रेषण कौशल न केवल समय की मांग बन गया बल्कि वैश्विक रूप से राष्ट्र को हर स्तर पर विकसित राष्ट्र बनाना है तो हमें तकनीकी व वैज्ञानिक रूप से हमारी भावी पीढ़ी को समृद्ध करना होगा। आज के बहुमूल्य परिवेश में यदि अंग्रेजी माध्यम में सीखने का ग्रामीण प्रतिभाओं को निःशुल्क अवसर मिलता है तो यह उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यदि आधुनिक तकनीकी शिक्षा को प्रारंभिक स्तर से ही अंग्रेजी माध्यम में सीखने का अवसर मिले तो प्रतिभाओं को हर क्षेत्र में तिरंगा लहराने से कोई नहीं रोक सकता।

महात्मा गाँधी विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में बालिका शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित होगा उन्हें तकनीकी व वैज्ञानिक अधिगम प्रणाली को सुनियोजित रूप से प्रदत्त करने का अवसर मिलेगा। टिंकरिंग लैब, राजीव गांधी कॅरिअर पोर्टल, कम्प्यूटर लैब, क्लिक योजना, आधुनिक लाइब्रेरी व स्मार्ट क्लासरूम विद्यार्थियों के लिए वैश्विक पटल की भूमिका अदा कर सकते हैं। दक्ष मानव संसाधन, समृद्ध भौतिक संसाधन, हितधारकों की सक्रियता व भामाशाहों के आशीर्वाद से यदि महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों को सुनियोजित किया जाए तो हमारा राष्ट्र इस मानव संसाधन को राष्ट्रहित में फलीभूत कर सकता है। हमें मिलकर आगे बढ़ना होगा और सफलता का पथ चढ़ना होगा।

प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, बैरासर,
बीदासर, चूरू (राज.) **मो: 9784873840**

ध्यान की शक्ति

❐ **डॉ. रविबाला सोलंकी**

सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनका बालक प्रतिस्पर्धा के इस युग में सबसे अव्वल स्तर पर रहकर अपना एक मुकाम निश्चित करे। जिसमें कुछ बच्चे निश्चित वह मंजिल हासिल कर ही लेते हैं।

यह कोई आवश्यक नहीं है कि कुछ बच्चे ही जीवन में अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। वे बालक भी जिन्होंने ध्यान को केन्द्रित कर अपना शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक बदलाव करने का प्रयास किया है, वे भी निश्चित ही सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

विद्यार्थी का शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप से स्वस्थ होना भी अति आवश्यक है, जैसे- एकाग्रता, संकल्पशक्ति, विपरीत परिस्थितियों में सम रहना, मानसिक संतुलन बनाए रखना, संवेगों पर नियंत्रण आदि। आज के विद्यार्थी इस पक्ष से परिचित ही नहीं हैं।

ध्यान ही एक ऐसी शक्ति है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में सकारात्मकता का विकास किया जा सकता है जिससे वे कठिन चुनौतियों से भी दुनिया में अपनी जगह बना सकते हैं। माता-पिता अपने बच्चे को जब वह साइकिल चलाना सीखता है तो कहते हैं-साइकिल ध्यान से चलाना। या फिर परीक्षा में प्रश्न-पत्र हल करते समय ध्यान से लिखना। वास्तव में वर्तमान में जीना ही ध्यान है। अपनी स्मृतियों (अर्थात जो भूत काल में घटित हुआ) तथा कल्पनाओं (अर्थात भविष्य में क्या होगा- कल्पना करने) को छोड़कर वर्तमान में एकाग्रचित्त होकर कार्य करना ही ध्यान है।

ध्यान को मेडिटेशन शब्द से अधिक जाना जाता है। यह दिमागी अभ्यास का बेहतरीन तरीका है। वह स्वयं की क्षमताओं को समझने व उजागर करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा मन के बिखराव को रोककर एक जगह लाने का प्रयास किया जाता है।

ध्यान तीन चरणों में पूर्ण किया जाता है-

- **प्रथम चरण-** बाहर की दुनिया से भीतर की ओर मुड़ना (अर्थात स्वयं को स्वयं में स्थित करना।)
- **द्वितीय चरण-** भीतर चलने वाले शोर को शान्त करना (अर्थात आने वाले विचारों पर नियंत्रण करना)
- **तृतीय चरण-** प्राप्त होने वाले मौन और आनन्द को अनुभव करना।

इन्हीं तीन चरणों में ध्यान का सम्पूर्ण विज्ञान है। ध्यान एक शोधन की भी प्रक्रिया है। पोषण की भी प्रक्रिया है। ध्यान करने के लिए विद्यार्थी आँख बन्द कर आराम से कमर सीधी करके बैठे। केवल अपनी आती व जाती हुई श्वास को अनुभव करें। लम्बी गहरी श्वास लें, लम्बी गहरी श्वास छोड़ें (अर्थात दीर्घ श्वास प्रेक्षा करें)। अपने आपको श्वसन प्रक्रिया पर ही एकाग्र कर लें। मन में कोई विचार आए तो आने दें। लेकिन उस विचार में अपने आपको न लगाए रखें बल्कि उसे जानें दें। पुनः श्वसन प्रक्रिया पर ही अपने आपको एकाग्र कर लें। पहले इसे 5 मिनट तक करें। धीरे-धीरे समय बढ़ाते जाएं।

दूसरा प्रयोग विद्यार्थी यह भी कर सकते हैं कि अपने ध्यान को सिर के पिछले भाग पर जहाँ चोटी का स्थान होता है, पर केन्द्रित करें। मन ही मन सुझाव दें-ज्ञान तन्तु सक्रिय हो रहे हैं। मैं अनुभव कर रहा हूँ- ज्ञान तंतु सक्रिय हो गए हैं। पुनः सुझाव दें-स्मरण शक्ति विकसित हो जाए। मैं अनुभव कर रहा हूँ-स्मरण शक्ति विकसित हो रही है। स्मरण शक्ति विकसित हो गई है। इस तरह अपने ध्यान को ज्ञान केन्द्र पर केन्द्रित करने से स्मरण शक्ति का विकास होता है।

इस प्रकार ध्यान या मेडीटेशन करने से विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास, परीक्षा का तनाव कम होना, आत्मविश्वास का विकास, स्मरण शक्ति का बढ़ना, समय प्रबंधन, कार्य का शीघ्र ही पूर्ण होना, नकारात्मक विचारों के स्थान सकारात्मक विचारों का प्रबल होना, अनुशासित होना, भावों का निर्मल होना (अर्थात संवेगों पर नियंत्रण) तथा मानसिक संतुलन आदि का विकास स्वतः ही होता चला जाता है।

परीक्षा की तैयारी या परीक्षा के दौरान भी बीच-बीच में कुछ समय निकालकर कुछ-कुछ मिनट का भी यदि विद्यार्थी ध्यान कर लें तो अपने आपको तनावमुक्त कर ऊर्जा व स्फूर्ति को महसूस कर सकते हैं।

प्राचार्या
तिलक टीचर ट्रेनिंग कॉलेज (फॉर वुमन),
जयपुर (राज.) **मो: 9460150387**

www.rajsevak.com

REPORT

Mahatma Gandhi Government School
(English Medium) Mansarovar, Jaipur

❒ Anu Choudhary

Introduction:

Few decades ago, in India, English was being discarded by all as we were overruled for more than two hundred years' reign of England. But after independence we could put English away from our offices, courts, universities, schools etc. It worked in India as lingua franca between the people of north and south India because we could not make a general consensus over any single language to be our common language of the whole nation. Initially English was kept sub official language in India for a period of 15 years which was later continued for such more periods and today we have increased the use of English language in every field of life.

If we see globally we find that English has become a quite essential language of the world. All the countries, Multi-National Companies, Universities etc. are using English as Lingua-Franca. No country, no MNC, University can refrain themselves from the use of English language.

Role of English Language in India-

The role of English language in India is because of the following reasons-

1. It is an international language hence it works as lingua-franca.
2. It is used as an Associate Official Language.
3. It is used for inter-state communication.
4. Role in international relations.
5. It is a literary language.
6. At present English works as a window on the world.
7. It is useful as well as helpful in the study of science and technology.
8. English is playing a vital role in trade and commerce also.
9. English is also compulsory to get jobs globally.
10. It has also become educational language.

In India gradually the use of English language in various fields of life is increasing. The people of India, with the knowledge of English, are able to cop the global competition in education, jobs and other sectors of life.

Concept of Mahatma Gandhi Government of Schools in Rajasthan :

Keeping in view the importance of English language globally, the Government of Rajasthan initiated the process to run English medium schools in the state in government sector. We all know that, in India after independence, the governments took the responsibility to educate the people of the country as private sector was not interested in this field. Since independence, the governments were running Hindi medium schools. But the growing demand of English compelled governments in India to run English medium schools under their entrepreneurship. The Union governments are already running English Medium schools in the names of Kendriya Vidyalayas, Swami Vivekanand Model Schools etc.

In the year 2019, Hon'ble Chief Minister of Rajasthan Shri Ashok Gehlot, Hon'ble State Minister of Education, Shri Govind Singh Dotasara took a decision to run Govt. English medium schools in Rajasthan in the name of name of Mahatma Gandhi, to commemorate 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi. From July 1, 2019, 33 Mahatma Gandhi Government Schools have opened in the 33 districts of Rajasthan. The people of Rajasthan welcomed showed a great interest in these schools and throbbed to admit their children in these schools. 33 Mahatma Gandhi Government Schools proved a great success in providing English education in the society. Seeing the performance and interest of the people, the Government of Rajasthan opened 167 more Mahatma Gandhi

www.rajsevak.com

Government Schools at block level in the session 2020-21 so that the requirement of English education can reach up to block level to strengthen and upgrade the education level in Rajasthan. Again the success story followed the preceding year and showed a remarkable performance in providing English education even in the time of the Corona Pandemic either it is offline education or online education.

For the session 2021-22 the Government of Rajasthan has announced to open 1200 more Mahatma Gandhi Government Schools in the areas of requirement which shows tremendous requirement of the English education in the state.

An Introduction of Mahatma Gandhi Government School, Mansarovar, Jaipur

At initial stage English medium is started for the students of classes 1 to 8. In the following four years the promoted students of these classes will study in the higher classes. This will assist in strengthening the level of the students and improve the board results.

Before July, 2019, it was Government Girls Senior Secondary School, Kaveri Path, Mansarovar. It was converted in Mahatma Gandhi Government (English Medium) School, Mansarovar in the July, 2019. In the process of conversion, the old staff was replaced with the new staff which was selected on the interview basis by a state level panel. From the very beginning the school started reaching new heights. As the expectations of the new format of this school required multi fold tasks and challenges, all the staff jointly worked to fulfill these requirements.

Key Features of MGGS, Mansarovar, Jaipur-

1. Well qualified hard working teachers with good English efficiency.
2. Quality education in a child friendly atmosphere.
3. Free text books for classes 1 to 12.
4. Regular conduction of co-curricular activities.
5. Welfare schemes like Mid Day Meal, Scholarship schemes for various sections of the society.
6. Free Education for all students for classes 1 to 8.
7. School buildings structured on the modern patterns.
8. Natural Atmosphere with eco-friendly campus.
9. Most disciplined school in the city.
10. Outstanding performance of the students within a year.

At initial stage English medium is started for the students of classes 1 to 8. In the following four years the promoted students of these classes will study in the higher classes. This will assist in strengthening the level of the students and improve the board results.

Major Challenges of MGGS Mansarovar

1. To increase the enrollment of the school.
2. To construct new classrooms and laboratories according to the requirement.
3. To have a competent and eco-friendly school building in the school.
4. To construct barbed school boundary.
5. To secure the school campus with CCTV surveillance and guard.
6. To equip the institution with other essential infrastructural structures like separate toilets for girls and boys at sufficient level.
7. To have a clean and hygienic school premise.
8. To enhance the academic level of the students.
9. To manage and conduct co-curricular activities for the students regularly.
10. To administer and maintain the documentation of the school properly.
11. To manage financial resources in a channelized manner to cop up with the financial needs of the institution.
12. To maintain discipline among students as well among teachers.
13. To work for the professional upliftment of the teachers.

Achievements:

1. Government Girls Sr. Sec. School, Kaveri Path, Mansarovar was converted to Mahatma Gandhi Government School (English Medium) District level in 2019-20 under the state government's flagship scheme on the occasion of 150th Birth Anniversary 'Father of the Nation' Mahatma Gandhi.

   Earlier the school building was in poor condition. The rooms in the school were not sufficient in usable condition. Within a year 8 new class rooms along with furniture are constructed with the help of the Round Table India and the whole building is repaired and painted with the cooperation of the Bhamashahs.
2. The enrollment of the school has increased. In the session 2020-21 it was as follows –

(a) Classes 1 to 9- 424 (Boys- 213 Girls- 211)

(b) Classes 10 to 12- 160 (Girls-160)

Out of the total number of students 202 students took admission from the renowned private schools of the city which is a strong plea in the favour of the popularity of the school in two sessions i.e. 2019-20 and 2020-21. At the same time about 371 new students enrolled in the school in the above mentioned two sessions. It is a great achievement of the school in the government sector.

Session wise growth is shown in the following table and graph.

Session	Boys	Girls	Total
2018-19	27	186	213
2019-20	117	281	398
2020-21	213	371	584

3. School Board Result- Topper 2019-20 class-X 96.33% Yoshita Sahu, XII(Arts) Anju Verma 78.40%,XII (Science) 83.40%

Session	Class X	XII Arts	XII Science
2018-19	68	100	100
2019-20	96.90	96.40	100

4. Yoshita Sahu scored 96.66% in X Board 2020.
5. Yoshita Sahu of class X selected for Mukhyamantri Hamari Beti

www.rajsevak.com

Yojana 2020.

6. Rajeshwari secured 9th rank in STSE Exam.2020-21 in whole Rajasthan.
7. Two students are selected in Inspired Award 2020-21 (Mohit Sahu VIII and Ashutosh Soni VII).
8. Gargi Award:-

a. 9 Girls received Gargi Award (4 Students of X and 05 Students of XII) in session 2019-20.

b. 17 Girls received Gargi Award (11 Students of X and 06 Students of XII) in session 2020-21.

9. The school started online classes during lock-down period and maintained the student profile.
10. The teachers are trained to be techno-friendly. Hence the teachers use smart classes for teaching their subjects regularly.
11. Tests and Exams were conducted on the online platform using WhatsApp and Google Form.
12. During pandemic period in the session 2020-21 all the functions were celebrated i.e. Independence Day, Raksha Bandhan, Janmasthami etc. virtually.
13. Articles of Dr. Santosh Kumar Jakhar (Teacher, L-1) and Smt. Hemlata Chandolia (Teacher, L-2 Science) articles were published in Shivira Magazine published by Education Department, Rajasthan.
14. Smt. Anu Choudhary (Principal MGGS,Mansarovar Jaipur) awarded by Divisional Commissioner Jaipur Mr. Samit Sharma for outstanding work in the field of education.
15. Smt. Anu Choudhary (Principal) also awarded as Corona Warrior by The District Collector, Jaipur District.
16. Smt. Anu Choudhary (Principal) also awarded as Best State Level Principal by The Chief Minister of Rajasthan on 05 Sep.,2018
17. Smt. Anu Choudhary (Principal) also awarded as Best District Level Principal by The Collector Jaipur on 05 Sep.,2018
18. Smt. Anu Choudhary (Principal) is also awarded as Best Principal of Block Level 26 January.,2017
19. Smt. Poonam Bagga (Senior Teacher Mathematics) awarded by Divisional Commissioner Jaipur Mr. Samit Sharma for outstanding teaching.
20. Mr. Mohan Lal (PET-II) received BEST PET Award at Block Level (Jaipur West, Jaipur).
21. Two teachers Smt. Sita Kanwar and Dr. Santosh Kr. Jakhar were selected to prepare e-content for e-Kaksha, a project of Education Department of Rajasthan.

Future Plans:

- To accomplish various types of tasks of the school, a future plan was required. The school administration had to work with cooperation of the higher authorities.

(A) Academics

- To set some criterion for the admission from I to VIII.
- To make the students able to read, write and understand English.
- Orientation programme for the teachers of Mahatma Gandhi English Medium Govt. School for teaching methods.
- Boscon NGO, Azim Premji Foundation, Bodh Shiksha Sansthan are providing teaching aids for the students.
- Resuming studies during Pandemic Periods in the session 2020-21 and 2021-22.
- Environmental Lab, inculcation of technology in the teaching-learning process i.e. audio visual aids, smart classes, youtube and various other online platforms.
- Development of Linguistic skills i.e. Listening, Speaking, Reading and Writing. (Hindi, English and Sanskrit at the primary level and other Indian language at the secondary level)
- Recognition of shapes-Circle, Triangle and Square
- Compilation of work on last day of month conducting seminar of teaching methodology,

(B) Co-curricular Activities

- Inculcation of Gandhian values and moral values among the students through Bal Sabha or Assembly organizations.
- To work for the Physical, Mental, Social, Emotional and moral development of the students.
- Best Learning out of waste.
  - (a) Clay Modeling
  - (b) Stringing Beads
  - (c) Sand Play
  - (d) Building Blocks.
  - (e) Paper Folding
- To work for the scientific development of the students and giving ensuring right platform to develop as a human resource useful for the society, nation and above all the mankind.
- To motivate students to take part in various sports and games and develop as good sportsman globally.

(C) Infrastructure

- To allocate a playground for the students.
- To construct more rooms for the growing demand of the school.
- Development of Smart Classrooms for every class.
- Development of modern science labs including Biology, Chemistry, Physics, Computer and Home Science Labs.

(D) Administration

- Work division for the employees according to their interests and potential.
- Maximum use of the potential of the human resources of the institution.
- To prepare a proper and effective channel to receive and send departmental information.
- To develop school website and use it for online procedures.

(E) Discipline

(a) To develop the habit of punctuality among the students.

(b) To organize social get together of the students and development social values like respect, honesty, cooperation etc.

Principal
Mahatma Gandhi, Govt. School
(English Medium)
Mansarovar, Jaipur
Mob. 9413971184

www.rajsevak.com

सकारात्मक सोच

❒ लालचंद सोनी

'सकारात्मक' यह एक ऐसा शब्द है जो किसी मरते हुए व्यक्ति में भी जीने की उम्मीद डाल दें, जीवन में सकारात्मक सोच रखना बहुत आवश्यक है; अन्यथा नकारात्मक सोच तो एक हरे-भरे पेड़ तक को सुखा सकती है। सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति समस्याओं के बारे में नहीं, बल्कि उनके समाधान की संभावनाओं को विकसित करने में विश्वास रखता है। सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मविश्वास से कुछ कर गुजरने का साहस पैदा होता है; इसी साहस से उत्पन्न बल से व्यक्ति कठिन से कठिन समस्या को सुलझा लेता है।

जिस प्रकार काले चश्मे में देखने पर सभी ओर काला दिखाई देता है, लाल चश्मे में देखने पर सभी ओर लाल दिखाई देता है, उसी प्रकार हमारे जीवन में भी नकारात्मक सोच से देखने पर हमें चारों ओर दुःख, निराशा और असंतोष ही नजर आएगा, परंतु यदि चीजों को सकारात्मक सोच से देखा जाए तो, हमें चारों ओर सुख, खुशी और संतोष ही दिखाई देगा।

विद्यालय में सकारात्क सोच के जरिए हम विद्यार्थियों की कार्य कुशलता, उनकी दक्षता और क्षमता बढ़ा सकते हैं। किसी के भी अंदर सकारात्मक सोच जाग्रत करने के लिए हम पुनर्बलन कौशल का उपयोग कर सकते हैं। अपने सहपाठियों एवं सहकर्मियों की कार्य कुशलता से सीखकर भी हम स्वयं अपने अंदर सकारात्मकता को जाग्रत कर सकते हैं। हमारे पास इस जीवन रूपी जमीन पर लगाने के लिए दो तरह के बीज हैं, पहला सकारात्मक सोच दूसरा नकारात्मक सोच, हम जिस प्रकार का बीज इस जीवन रूपी जमीन पर उगाएँगे हमारा दृष्टिकोण एवं हमारे विचार भी उसी के अनुसार होंगे।

जीवन में विचारों का बहुत महत्त्व है चाहे वह किसी भी व्यवसाय जैसे-शिक्षण, चिकित्सा आदि। हर जगह सकारात्मकता का स्थान सर्वोपरि है। चलो क्यों न आप सभी को उदाहरण के माध्यम से कुछ सीखा जाए। हम एक गिलास लेंगे जिसे पानी से आधा भर लेंगे। अब पूछा जाए कि गिलास कितना भरा है? या कितना खाली है? कोई कहेगा यह आधा भरा है, तो कोई कहेगा आधा खाली है यही हमारा नजरिया, यही हमारी सोच है यदि हम गिलास को आधा खाली पाते हैं इसका मतलब है कि हम उस गिलास को नकारात्मक नजरिए से देख रहे हैं एवं यदि हम उस गिलास को आधा भरा हुआ पाते हैं इसका मतलब है कि हम उस गिलास को सकारात्मक नजरिए से देख रहे हैं।

सकारात्मक विचार की शुरूआत होती है धैर्य से, आशा से, विश्वास से। किसी जगह पर चारों ओर अंधेरा है और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा हो तो वहाँ पर एक छोटा सा दीपक ही अंधेरा मिटाने के लिए काफी है इसी तरह आशा की एक किरण सारे नकारात्मक विचारों को एक पल में ही मिटा सकती है। सकारात्मक सोच रखने से व्यक्ति मुश्किल परिस्थितियों में अपना आपा नहीं खोता बल्कि शांत दिमाग से मुसीबत को सुलझाने के रास्ते ढूँढ़ता है। या हम कह सकते हैं कि दुनिया में केवल एक ही चीज आपकी तकदीर बदल सकती है वो है आप की सकारात्मक सोच।

नकारात्मकता को नकारात्मकता समाप्त नहीं कर सकती, नकारात्मकता को तो केवल सकारात्मकता ही समाप्त कर सकती है। जिनसे कोई उम्मीद नहीं होती, अक्सर वही लोग कमाल किया करते हैं। ख्वाहिशें भले ही पिद्दी सी हों, पर उसे पूरा करने के लिए दिल जिद्दी होना चाहिए। **मुमकिन नहीं, हर वक्त मेहरबां रहे जिंदगी, कुछ लम्हें जीने का तजुर्बा भी सिखाते हैं।**

महाभारत के बारे में हम सभी जानते हैं जब गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर और दुर्योधन को बुलाकर, युधिष्ठिर से कहा कि इस समाज से एक बुरा आदमी ढूँढ़ कर लाओ और दुर्योधन को इस समाज से अच्छा आदमी ढूँढ़ कर लाने को कहा, किन्तु कुछ समय पश्चात दोनों खाली हाथ लौटे अर्थात युधिष्ठिर को सभी लोग अच्छे लगे इसलिए वह बुरा आदमी नहीं ढूँढ़ सका एवं दुर्योधन को सभी लोग बुरे लगे इसलिए वह अच्छा आदमी नहीं ढूँढ़ सका।

कुल मिलाकर बात यही है कि व्यक्ति जैसा होता है उसकी सोच भी वैसी ही होती है। It means "As you sow, So shall you reap"

अंग्रेजी के दो शब्द हैं "I can't " एवं "I Can" दोनों पंक्तियों में केवल "t" का अंतर है लेकिन दोनों ही हमारी सकारात्मक और नकारात्मक सोच पर निर्भर करते हैं। यदि हम किसी काम को नहीं कर पा रहे हैं और फिर भी यदि हममें सकारात्मक है तो जो काम शायद हमसे नहीं हो रहा है, हम उसी काम को पूरा करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले सकारात्मक सोच की आवश्यकता होती है कार्य पूरा करने तक यदि हम सकारात्मक हैं सफलता अवश्य ही हमारे कदम चूमेगी।

एडिसन जो कि एक महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने बल्ब की खोज की और ना जाने कितने आविष्कार किए, प्रयोग के समय उन्होंने बहुत बार प्रयास किए और अंततः वे सफल हो ही गए। यह सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक सोच का ही जादू है जिसने उन्हें कई बार प्रयास करने के लिए मजबूर कर दिया, इसी जगह वे थोड़ी सी नकारात्मक सोच रखते तो शायद एक दो बार प्रयास करके वह हार मान लेते। किसी ने कहा भी है- **'एक मजबूत सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण किसी भी, शानदार दवा की तुलना में अधिक चमत्कारी होगा।'** हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिन्होंने सकारात्मक सोच एवं धैर्य के द्वारा हमारे देश को आजादी दिला दी और हमारे देश के मिसाइल मैन श्री अब्दुल कलाम साहब जिन्होंने सकारात्मकता एवं जुनून के बल पर भारत का पहला रॉकेट बना दिया। सकारात्मक रहना सीखें, धैर्य रखना सीखे क्योंकि गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल सकती है। किसी भी विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक सोच के विचारों से शिखर तक पहुँचाया जा सकता है।

बच्चों को सकारात्मक सोच का उपयोग करके नकारात्मकता के प्रभाव से काफी दूर ले जाया जा सकता है। सकारात्मक सोच का प्रभाव न सिर्फ विद्यालय परिसर में बल्कि विद्यालय परिसर से जुड़े हुए प्रत्येक व्यक्ति के परिवार में भी दिखाई देगा।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पारापीपली,
डग, झालावाड़ (राज.)-326515
मो: 9351934915

www.rajsevak.com

शिक्षा : व्यक्तित्व विकास

विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास

❒ भूरमल सोनी

विद्यार्थी कोरे कागज के समान होते हैं, जिनमें शिक्षक, माता-पिता, समाज, परिवार के लोग रंग भरते हैं। विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक, शारीरिक व्यक्तित्व निर्माण में इनकी अहम भूमिका मानी जाती है। इसलिए स्टूडेंट्स के चहुँमुखी व्यक्तित्व विकास के लिए घर परिवार, समाज, विद्यालय का माहौल व परवरिश का सही होना बहुत जरूरी है। विद्यार्थी अपने आसपास के वातावरण से जल्दी ही कई बातें सीख जाते हैं। दूसरी बातों की अपेक्षा विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर शिक्षकों, माता पिता की बातों का सीधा असर पड़ता है। कई बार शिक्षक, माँ-बाप अनजाने में कुछ ऐसी बातें कह देते हैं जिसका उनके अर्ध चेतन दिमाग पर बुरा असर पड़ता है। लम्बे समय तक ऐसी बातें विद्यार्थी के व्यवहार और क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसलिए शिक्षकों को विद्यार्थियों से कुछ कहते समय अपने शब्दों पर ध्यान देना चाहिए।

बच्चों के मन पर हर बात की छाप बहुत जल्दी लगती है और वे अपने आसपास की घटनाओं को देखकर बहुत कुछ सीखते हैं। माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों के लिए रोल मॉडल यानि आदर्श बनना होगा।

शिक्षक और अभिभावक बच्चों को एक बेहतर इंसान के रूप में देखना चाहते हैं, लेकिन इसके लिए उनकी तुलना दूसरों से करना बिल्कुल भी ठीक नहीं है। अगर हमारे आसपास कोई बच्चा पढ़ाई या व्यवहार में अच्छा है तो हम हमेशा बच्चे को उसकी तरह बनने के लिए कहते हैं। विद्यार्थी को कभी भी यह न कहें कि उसे किसी दूसरे की तरह होना चाहिए।

हर बच्चे का स्वभाव कभी भी एक जैसा नहीं होता। हो सकता है कि कई विद्यार्थियों का स्वभाव थोड़ा शर्मीला हो या फिर वे दूसरों के सामने बात करने में हिचकिचाते हो, लेकिन इसमें कोई बुराई नहीं है। अगर विद्यार्थी बहुत अधिक सामाजिक नहीं होता तो उसके लिए उसे डांटने या गुस्सा करने के स्थान पर धैर्य रखें डर को दूर करने के लिए उसे प्रोत्साहित करें। कोई भी इंसान कभी भी परफेक्ट नहीं होता और विद्यार्थी तो थोड़ा ज्यादा ही गलती करते हैं। ऐसे में उसकी गलती के लिए सार्वजनिक कक्षा या अन्य जगह पर न कहें।

कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो पढ़ाई से पूरी तरह विमुख होते हैं, जिन्हें पढ़ना-लिखना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। पढ़ाई के नाम से वो ऐसे भागते हैं जैसे उन्हें कितना बड़ा काम करने को दे दिया गया हो। कई बार ऐसा होता है कि माता-पिता बच्चे को पढ़ाने के लिए पिटाई की बात करते हैं उन्हें लगता है कि बच्चे को डांट या मार देना ही एक ऐसा विकल्प है जिससे डरकर वह पढ़ाई करने लगेगा। लेकिन सवाल यह है कि क्या वाकई में यह सही तरीका है? जी नहीं, यह सही तरीका नहीं है। बच्चे बेहद इमोशनल होते हैं और एक छोटी-सी बात भी उनके मन पर गहरा असर डालती है। इतना ही नहीं, विद्यार्थी अपने आसपास के माहौल से भी बेहद प्रभावित होते हैं। अक्सर हम ध्यान नहीं देते और बच्चों के सामने ही कई तरह की बातें करने लगते हैं। विद्यार्थी उन बातों को बड़े ही गौर से सुनते हैं और उसे अपने मन में बैठा लेते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि हम अपने काम या पर्सनल लाइफ को लेकर डिस्टर्ब होते हैं। उस समय छात्र की छोटी-छोटी प्यार भरी शरारतें भी हमें अच्छी नहीं लगती और कहीं ना कहीं हमारा गुस्सा उन पर निकल जाता है। यह हम सभी के साथ कभी ना कभी हुआ ही है। जब शिक्षक बहुत परेशान होते हैं तो बच्चों पर बिना वजह चिल्लाने लगते हैं। यहाँ तक कि उनके लिए किन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उसका भी ध्यान नहीं होता। भले ही कुछ देर बाद दिमाग शांत होने पर अपनी गलती का अहसास हो और मन ही मन खुद को कोसते भी हैं। पर उस समय इस पछतावे का कोई फायदा नहीं होता क्योंकि आपके शब्दों से उनके मन पर नकारात्मक असर हो चुका होता है।

बालक थोड़ा ज्यादा इमोशनल होते हैं और इसलिए वह थोड़ा जल्दी रो पड़ते हैं। लेकिन अगर आप उनके रोते समय उनसे इस तरह कहते हैं कि रोना बंद करो, कुछ नहीं हुआ है या तुम तो जरा-जरा सी बात पर रोते हो तो इससे वह अपनी भावनाओं को सही तरह से प्रकट नहीं कर पाते। साथ ही इससे उन्हें लगता है कि आपको उनकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं है।

विद्यार्थी हमेशा अपने आसपास के लोगों से सीखते हैं। कई बार आस-पड़ोस, स्कूल और कोचिंग में वे कुछ ऐसी बातें भी सीख जाते हैं, जो उन्हें नहीं सीखनी चाहिए। माँ-बाप अगर अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं, तो बच्चों के बिगड़ने का खतरा ज्यादा होता है। ध्यान न देने पर विद्यार्थियों में लड़ने-झगड़ने, चिढ़ाने और मार-पीट करने जैसी गलत आदतें शामिल हो जाती हैं। जो की उनके व्यक्तित्व विकास में बाधक बन जाती हैं।

विद्यार्थी को पढ़ाने से पहले यह बात अपने दिमाग में बैठा लें कि उनको पढ़ाने का काम धैर्य वाला काम है, इसलिए आपको अपना धैर्य बनाएं रखना होगा। ऐसा हो सकता है कि बालक आपसे एक ही सवाल कई बार करे और आपको उसे कई बार समझाना पड़े। पढ़ाई के बारे में उसकी क्या राय है ये व्यक्त करने का हक दें और उसे अपनी राय व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें, चाहे आप उसकी बात से सहमत हों या ना हों, उसे सुने जरूर, झिड़के कभी नहीं।

विद्यार्थी को नियमित कम से कम बीस - तीस मिनट तक घर व स्कूल में पढ़ने की आदत डलवाएं। नियमित पढ़ने से न केवल बच्चे का विकास होगा, बल्कि उसकी शब्दावली में भी वृद्धि होगी और उसका लर्निंग प्रोसेस बढ़ेगा। बच्चे को हमेशा सही समय पर पढ़ना, ब्रेक लेना और सोना सिखाएं। बिना ब्रेक के लगातार पढ़ते रहने से वो तनावग्रस्त हो सकते हैं। विद्यार्थी को पढ़ाई करना बिल्कुल भी नहीं पसंद हैं तो उसे पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करने का सबसे पहला कदम यह होना चाहिए कि आप उसकी समस्या को पहचानें, जैसे कि विद्यार्थी को पढ़ाई के दौरान कौन सा सब्जेक्ट अच्छा लगता है और कौन सा नहीं। उसे कौन सी चीज याद करने में दिक्कत होती, क्या उसे लिखने में परेशानी होती है। जब तक आप पढ़ाई को लेकर उसकी समस्या को नहीं समझेंगे तब तक उसकी पढ़ाई के प्रति उसके नकारात्मक रवैये को नहीं समझ पाएंगे। एक बार समस्या की जड़ तक पहुँच जाएँ तो फिर उसका

www.rajsevak.com

समाधान भी निकाल जाएगा। अगर विद्यार्थी का भी मन पढ़ाई में नहीं लगता और उसे भी पढ़ना-लिखना पसंद नहीं है, तो कुछ आसान उपायों से आप उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

विद्यार्थी को अपनी किताबें, पेपर्स और असाइनमेंट्स को व्यवस्थित रखना सिखाएँ। शुरुआत के कुछ दिनों के बाद आपकी मदद से उसे व्यवस्थित रहने की आदत पड़ जाएगी। पढ़ाई में उसको आपकी मदद की जरूरत होती है इसलिए लर्निंग प्रोसेस में उनकी मदद जरूर करें। उन विषयों के बारे में जानने की कोशिश करें, जिनमें बच्चे की रुचि है और साथ ही उन विषयों के बारे में भी जानने की कोशिश करें जिनमें उनकी रुचि नहीं है।

विद्यार्थी को पढ़ाने से पहले उनका लर्निंग स्टाइल जान लें। लर्निंग स्टाइल यानि विजुअल, ऑडियो, वर्बल या लॉजिकल इत्यादि। कुछ बच्चे विजुअल देखकर ज्यादा सीखते हैं, तो कुछ ऑडियो को सुनकर चीजों को जल्दी याद कर लेते हैं। जो जैसा स्टाइल आसानी से समझता हो उसे उसी स्टाइल में सिखाएँ।

विद्यार्थी के परफॉर्मेंस पर नहीं बल्कि उसके लर्निंग प्रोसेस पर ध्यान केंद्रित करें। इस बात का ध्यान रखें कि अगर वह एक बार चीजों को अच्छी तरह से सीख-समझ लेगा तो उसके परफॉर्मेंस में अपने आप सुधार होने लगेगा। उसकी कमजोरियों पर निराश होने की बजाय उसे और सीखने के लिए प्रेरित करें और उसके स्ट्रेंथ पर फोकस करें। विद्यार्थी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहें और उनसे पूछते रहें कि क्या उसे आपकी कोई मदद चाहिए।

व्यक्तित्व विकास में बाधक बातें- अगर विद्यार्थी स्कूल, घर या पड़ोस में दूसरे बच्चों से मार-पीट करते हैं, तो ये भी उसके बिगड़ने का संकेत है। मार-पीट करने की आदत और हिम्मत अक्सर बच्चों में अपने दोस्तों, घर-परिवार के लोगों या टीवी प्रोग्राम्स, मोबाइल और फिल्में देखकर ही आती है। ध्यान दें कि मार-पीट करने पर विद्यार्थी को मारें नहीं, बल्कि उन्हें समझाएँ। विद्यार्थियों को अक्सर एक दूसरे को चिढ़ाने, कोई न कोई छेड़छाड़ करने में मजा आता है। मगर ये गलत आदत है। ऐसी आदतें भी वे ज्यादातर पास-पड़ोस के बच्चों और स्कूल के दोस्तों से सीखते हैं। अगर विद्यार्थियों में ये आदतें है, तो उन्हें प्यार से समझाएँ और बताएँ कि किसी को मुँह चिढ़ाना अच्छी बात नहीं है। ऐसी आदतें व्यक्तित्व विकास में कमी लाती हैं। अगर विद्यार्थी विद्यालय व घर में अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहा है, तो समझ लें कि उसकी संगत गलत बच्चों के साथ हैं। कई बार बच्चे घर से, अपने आस-पास से भी गाली-गलौज और गंदी जबान सीखते हैं। इसलिए गार्जियन को घर का माहौल अच्छा रखने, अभद्र भाषा का प्रयोग करने पर बच्चों को तुरंत टोकना चाहिए। ऐसे माहौल से दूर रखें, जहाँ वो गलत बातें सीखें। इससे उसका व्यक्तित्व क्षीण होता है।

अभद्र भाषा का प्रयोग, चोरी की आदत-वैसे तो माँ-बाप अपने बच्चे की हर संभव जरूरतें पूरी करते हैं। मगर फिर भी बच्चों का मन चंचल होता है। ऐसे में कई बार अपनी मनपसंद चीज खरीदने के लिए उसे पैसे नहीं मिलते हैं, तो वो घर से पैसे चोरी करता है। चोरी करना विद्यार्थी अक्सर दूसरे विद्यार्थी से ही सीखते हैं। इसलिए अगर विद्यार्थी पैसों या सामान की चोरी करता है, तो उसके दोस्तों और संगति पर ध्यान दें। जो उसके व्यक्तित्व को हमेशा दागदार बना देता।

आमतौर पर सभी बच्चे थोड़े जिद्दी होते हैं। मगर बच्चा किसी चीज के लिए जिद करते हुए खाना-पीना छोड़ दे, घंटों रोता रहे या खुद को नुकसान पहुँचाने की धमकियाँ दे, तो ये उसके बिगड़ने का संकेत है। ऐसे बच्चों को सख्ती से समझाएँ। हर बार बच्चों की जिद पूरी करना भी माँ-बाप की एक बड़ी गलती होती है। इससे बच्चों में जिद करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। यह एक बड़ा कारण भी उसके व्यक्तित्व विकास में बाधक है।

विद्यार्थी की भाषा, वेशभूषा, चाल-चलन, बोली चाली, रहन-सहन, उठने-बैठने, संगत, अदब आदि सभी बातों का व्यक्तित्व विकास से गहरा ताल्लुक होता है।

प्राईवेट स्कूलों में तो अभिभावक स्कूल प्रबंधन की हर शर्त मानने को तैयार हो जाते हैं मगर सरकारी स्कूलों में अभिभावक नाममात्र का भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए सहयोग नहीं करते। गाँवों की स्कूलों में तो यह सब स्वप्न जैसा है क्योंकि गरीब, अशिक्षित अभिभावक मेहनत मजदूरी कर रोटी-रोजी के जुगाड़ में लगे रहते हैं। स्कूलों में शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए कटिबद्ध है। समय-समय पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए उन्हें कई बार प्रार्थना सभा, कक्षाओं में हिदायत देकर समझाने का प्रयास भी करते हैं और उनके व्यक्तित्व विकास में बदलाव भी देखा जा सकता है।

व्यक्तित्व विकास हेतु विद्यार्थियों के लिए जरूरी है कुछ बातें-टाई, बेल्ट, जूता पॉलिश, साफ-सफाई, बटन टांकना, बाल कटिंग,बाल संवारना, छींक व उबासी लेते वक्त मुंह पर हाथ रखना, टेबल कुर्सी पर अलर्ट होकर बैठना, कपड़ों में सलवटें पड़े तो प्रेस करना, उन्हें धोकर साफ सुथरा रखना, बोलते वक्त मुँह से थूक न निकालना, सार्वजनिक स्थानों पर न थूकना, रूमाल, पोकिट कंघा रखना, सार्वजनिक स्थानों पर पेशाब न करना, जर्दा-गुटखा, बीड़ी सिगरेट न पीना बातचीत करते समय घर गली मौहल्ले में उपयोग किए जाने वाले अभद्र शब्दों का इस्तेमाल न करना, विनम्रता, सलीका, गलत सम्बोधन, किसी के उप नाम का प्रयोग आदि बहुत छोटी छोटी बातें हैं जो की व्यक्तित्व विकास में आवश्यक होती हैं उनका अनुसरण करना जरूरी है।

स्कूलों में छात्रों-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में सभी शिक्षक शिक्षिकाओं का प्रभाव तो विद्यार्थियों पर पड़ता है मगर शारीरिक शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उनको विशेष एक्सपर्ट द्वारा ट्रेनिंग दी जाए तो बेहतर होगा। योगाभ्यास, शारीरिक व्यायाम, पीटी के माध्यम से भी व्यक्तित्व में निखार लाया जा सकता है। शारीरिक शिक्षक स्वयं चुस्त-दुरुस्त रहकर विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास की जानकारी करवाते रहे।

विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास में जितना दारोमदार शिक्षकों, स्कूल प्रबंधन का होना चाहिए उससे ज्यादा तो उसकी परवरिश, घर व आसपास का वातावरण, संगत और अभिभावकों का होना चाहिए क्योंकि स्कूल में विद्यार्थी एक सीमित समय तक ही रहता है परन्तु घर, मौहल्ले में अधिक समय गुजारता है। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों व उसके गार्जियन अधिकतर अभावों का उदाहरण देकर छोटी-मोटी कमियों के सुधार में सहयोग नहीं करते। जैसे- स्कूल पौशाक, जूते चप्पल, कॉपी किताब, स्कूल बैग, नहाना, दांतुन, बाल संवारना, शरीर की साफ-सफाई, समय की पाबंदी आदि व्यक्तित्व विकास की प्राथमिक बातें हैं उनमें भी सहयोग की जरूरत है।

कला शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पलाना,
बीकानेर (राज.) **मो: 9252176253**

www.rajsevak.com

शैक्षिक चिन्तन

विद्यालय में आधारभूत विषयों का स्थान

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

जीवन में शिक्षा का स्थान कुछ आधारभूत विषयों में निहित है। विद्यालयी शिक्षा में इनका स्थान सर्वोपरि स्वरूप में स्वीकारने का उद्देश्य निर्धारित किया गया है। जिस प्रकार से जीवन का अपना कोई अर्थ नहीं है, यह अवसर मात्र है स्वयं को अर्थपूर्ण बनाने का। ठीक उसी प्रकार विद्यालय में पर्यावरण, शारीरिक, स्वास्थ्य, योग, कौशल विकास एवं व्यावसायिक संगीत शिक्षा आदि सामाजिक कार्य, सेवा कार्य का अपना कोई अर्थ नहीं है, औपचारिक शिक्षा के विषयों के आगे, मगर इनका अध्ययन/ अध्यापन अवसर मात्र है अपने आपको जीवित बना पाने का। अपने-आप को समाज में शिक्षित समझे व स्वीकारें जाने का।

उद्देश्य- स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि-**'हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।'** औपचारिक शिक्षा प्रदान करने वाले पाठ्यक्रमों में इन आधारभूत विषयों का शामिल होना स्वामी जी के उद्देश्यों की आपूर्ति हेतु ही सुस्पष्ट होता है। कारण कि ये आधारभूत विषय अपने आप में सक्षम हैं। इंसान को इंसान बनाए रख पाने में। अतः ये विषय शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सामर्थ्यवान हैं। हम यह अच्छी तरह से समझ सकते हैं, स्वीकार सकते हैं कि ये विषय शिक्षा के उद्देश्यों की आपूर्ति हेतु विद्यालय में अति विशिष्ट स्थान रखते हैं।

हम दावे के साथ कह सकते हैं कि उक्त आधारभूत विषय विद्यालयी औपचारिक शिक्षा की एक अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिस पर बालकों का शैक्षणिक विकास पूर्णतः निर्भर है। जैसे कि तुलनात्मक अध्ययन भाषा, गणित व विज्ञान, भाषा अध्ययन भावों की अभिव्यक्ति, सामर्थ्य प्राप्त करने हेतु किया जाता है। यहाँ आधारभूत विषय बालक को अभिव्यक्ति हेतु धरातल प्रदान करता है। उस धरातल पर ही, भाषा अभिव्यक्ति सामर्थ्य प्राप्त कर पाने का साहस जुटा पाती है।

गणित का अध्ययन गणनाओं व सांख्यिकी सूत्रों की जानकारी प्रदान करता है। आधारभूत स्वरूप में पर्यावरण गणना हेतु ज्ञात सामग्री उपलब्ध करवाता है। जिसके माध्यम से अंक ज्ञान प्राप्त किया जाता है व गणित का प्रयोग सहज संभव हो पाता है। विज्ञान का अध्ययन प्रकृति के सिद्धांतों की सूक्ष्म जानकारी देता है। यहाँ आधारभूत विषय प्राकृतिक तथ्यों से जुड़े ज्ञान को सुस्पष्ट कर स्थायी भाव प्रदान करता है।

इस तरह उक्त विश्लेषण से हमने पाया कि विद्यालयी शिक्षण में ये आधारभूत विषय ही शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नींव का पत्थर साबित होते हैं। इनके बगैर शैक्षिक विकास रूपी कंगूरा अपनी आभा बिखेर नहीं पाता व निर्मूल होने के कारण कब धराशायी हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। कुल मिलाकर इन्हीं आधारभूत विषयों में ही शैक्षिक निहितार्थ समाया हुआ है।

सह शैक्षिक गतिविधियाँ- स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में 'सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य है- व्यक्तित्व को गढ़ना।' उक्त कथन की सार्थकता सह शैक्षिक गतिविधियों में निहित है। शैक्षिक विकास हमारी ग्राह्यता को बल प्रदान करते हैं। उसी ताकत से सह शैक्षिक गतिविधियों द्वारा अभ्यास, निरंतर अभ्यास किया जा सकता है। अपनी मौलिक सृजनात्मकता को निखारा, संवारा व सहेजा जा सकता है। सहज अभिव्यक्ति को अवसर प्राप्त होने से भीतर कुंठाए भी दम तोड़ देती हैं। परिणामस्वरूप मौलिक व सुव्यवस्थित व्यक्तित्व का गठन स्वतः ही आकार प्राप्त कर पाता है। अंततः शिक्षा का उद्देश्य भी व्यक्तित्व को गढ़ना ही है। इससे यह सिद्ध होता है कि विद्यालय में आधारभूत विषयों का स्थान सर्वोपरि है।

संविधान में स्थान- हमारे संविधान में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 धारा 29 (2) में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि बालकों की मानसिक और शारीरिक क्षमता के विकास का अधिकतम अवसर हो। बालकों में ज्ञान का, अन्तःशक्ति और योग्यता का निर्माण हो। उन्हें सर्वांगीण विकास के अवसर प्राप्त हो। इन्हीं आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु विद्यालयों का निर्माण भी होता है। जहाँ पर पृथक-पृथक पृष्ठभूमि, पृथक-पृथक शारीरिक, मानसिक क्षमता वाले बालक साथ में प्रवेश पाते हैं। विद्यालयों में कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के तहत सामान्यतः सामूहिक स्वरूप में ज्ञान प्रसारित होता है। जहाँ रुचि, योग्यता, शारीरिक-मानसिक क्षमता सम हो, ना हो, ग्राह्यता की अपेक्षाएँ की जाती है। जिनका मूल्यांकन परीक्षा प्रणाली के आधार पर किया जाता है। प्राप्तांकों के आधार पर ही श्रेष्ठता सिद्ध होती है। कारण कि प्राप्तांक ही श्रेष्ठता मापन का पैमाना होते हैं। जहाँ कि बालक कतारबद्ध रूप में आगे या पीछे होते हैं। ऐसे में प्रत्येक बालक का सर्वांगीण विकास उसकी रुचि, शारीरिक-मानसिक क्षमता के आधार पर होता है। कुछ तो विकास मार्ग पर अग्रसर होते हैं कुछ पिछड़ जाते हैं। कुछ अग्रिम पंक्ति के बालक भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। चलते-चलते लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं पर वहां पहुँचकर भी सामाजिक सामंजस्य नहीं बिठा पाते। उनकी क्षमताओं का सदुपयोग संभव नहीं हो पाता।

शिक्षा विभागीय प्रयासों के आधार पर पर्यावरण अध्ययन के सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा की जा रही है। यह शत-प्रतिशत सही है। बालक अपने वातावरण/ पर्यावरण के बारे में जितना भी जानता है। वह अपने आप में सम्पूर्ण है। उसमें उसे और अधिक स्पष्ट करने हेतु वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी जोड़ने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं। वह अपने पर्यावरण के बारे में जितना भी जानता है वह उसकी व्यक्तिगत या उसके पर्यावरण की जिम्मेदारी है।

सीखने-सिखाने के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में एक यह है कि बालक को ज्ञात से अज्ञात की ओर लेकर जाना उसके सीखने को शत-प्रतिशत पुख्ता करता है। यदि यह तथ्य शिक्षकों द्वारा स्वीकार किया जाए तो पर्यावरण अध्ययन के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना सहजता से की जा सकेगी। कारण कि विद्यालय आने से पूर्व बालक को अपने परिवार व पर्यावरण की जानकारी होती है। उसी जानकारी को आधार मानते हुए यदि सम्बन्धित विषय के ज्ञान को आगे बढ़ाने का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है तो विद्यार्थी के ज्ञान में सकारात्मक वृद्धि की संभावना शत प्रतिशत दिखाई देती है। विद्यार्थी भी अपने पूर्व

www.rajsevak.com

ज्ञान के आधार पर शिक्षक से जुड़ाव महसूस करता है वह शिक्षण हेतु तत्परता प्रदर्शित करता है। इस तरह बालक की सहजता से उसकी शिक्षण के प्रति ग्राह्यता बढ़ जाती है।

शारीरिक स्वास्थ्य एवं योग– यह विषय भी एक महत्त्वपूर्ण प्रायोगिक विषय है क्योंकि शारीरिक स्वास्थ्य व योग की नियमितता से बालक को उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' यह बहुत पुरानी व शत-प्रतिशत सही उक्ति है। जिला स्तरीय या राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के दौरान अवश्य इन कालांशों का सदुपयोग हो जाता है।

इस सत्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि शिक्षक व संस्थाप्रधान हैं जो इस विषय की अहमियत को समझ उचित प्रारूप में इसके बालकों तक पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य ही करते हैं। जिससे बालकों के साथ ही संस्था भी लाभान्वित होती है। **शारीरिक शिक्षा /योग शिक्षा के लाभ–**

1. शारीरिक शिक्षा के कालांशों या गतिविधियों के माध्यम से बालक सहजता से शिक्षा या शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर प्राप्त करता है।
2. शारीरिक शिक्षा बालक को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है।
3. शारीरिक रूप से स्वस्थ बालक अध्ययन में सकारात्मक रुचि प्रकट करते हैं।
4. इसके मार्फत विद्यालय में अनुशासन व्यवस्था बड़ी सहजता से कायम हो जाती है।
5. विद्यार्थी तनाव रहित माहौल में अध्ययन करते हैं।
6. शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध सहजता से कायम हो जाते हैं जो कि उनकी शैक्षणिक समस्याओं के समाधान का हिस्सा बन पाते हैं।
7. योग के द्वारा बालकों में ध्यान केन्द्रित कर पाने की क्षमता का उचित विकास होता है। जो उनके शैक्षिक लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी रहता है।
8. बालकों की शारीरिक ऊर्जा का उचित सदुपयोग होने से उनकी नकारात्मक विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों पर अंकुश लग पाता है।
9. बालकों को समय पर भूख लगना व ग्रहण किए भोजन का समय पर पाचन होना भी निर्धारित होता है। इसका विद्यार्थियों की शारीरिक व मानसिक क्रियाशीलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
10. शारीरिक/योग शिक्षा, गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को सहज आत्मविश्वास प्राप्त होता है जो कि उन्हें अन्य शैक्षणिक प्रगतिपथ पर आगे बढ़ाने में सहायक होता है।
11. शारीरिक शिक्षा विद्यार्थियों को आनन्दमयी वातावरण देती है। यह आनंद उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों में भी सहायक होता है।

कौशल विकास एवं व्यावसायिक संगीत शिक्षा आदि सामाजिक एवं सेवा कार्य के अनुभव– ये विद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम का अटूट हिस्सा हैं। जो कि विद्यार्थियों को रुचिगत कार्यक्षेत्र में बढ़त के अवसर प्रदान करता है। जीवन को कुशलताओं के साथ जीने की काबिलियत प्रदान करता है। बालकों में निहित कुशलताओं को नवीन निखार के साथ बाहर लाने का प्रयत्न करता है। जिससे बालकों में आत्मसम्मान की भावना प्रबल होती है। आत्मविश्वास जाग्रत होता है। शिक्षा में रुचि न होने पर भी शिक्षा के प्रति सावचेत कर शिक्षित समाज का निर्माण करता है। यह इसकी बहुत बड़ी ताकत है जो कि सीधे तौर पर दिखाई तो नहीं देती मगर महसूस की जा सकती है।

संगीत शिक्षा बालकों के जीवन को लयबद्ध करते हुए दिशा बोध कराता है व उनके जीवन में हौंसलों की उड़ान भर पाने की ताकत सहज ही समाहित हो जाती है। संगीत स्वर लहरी बालकों के कण्ठ से होती हुई उनके मनोमस्तिष्क को उत्तेजित कर जीवन में तेजस्विता प्रदान कर पाने में कामयाब होती है जो कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भी है। शिक्षा की सार्थकता भी इसी में निहित है। संगीत के माध्यम से इसकी सहज आपूर्ति भी संभव हो जाती है। इस तरह से हम पाते हैं कि विद्यालयी शिक्षा में संगीत शिक्षा की महत्ता स्वयंसिद्ध होती है। इसके साथ ही विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक सेवा कार्य अनुभव का भी विशिष्ट महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। आप हम सभी जानते हैं कि 'विद्या ददाति विनयम' अर्थात विद्या विनम्रता प्रदान करती है। शिक्षा या विद्या विनयशीलता तभी प्रदान कर पाती है जब उसमें सामाजिक सरोकारों की भूमिका भी सुस्पष्ट हो। अतः विभिन्न अध्ययन विषयों के साथ ही यदि विद्यालय में समाज शिक्षा, समाज सेवा, सामाजिक सरोकारों के साथ प्राप्त हो जाती है तो बालकों में प्रारंभिक काल से ही समाज सेवा, समाज की अहमियत, समाज की समझ का बीजारोपण हो जाता है। बालक की शैक्षणिक योग्यता समाज के हित में प्रयुक्त हो पाती है और बालक की शिक्षा उसे विनयशील बना पाती है। परिणामस्वरूप शिक्षित व सुसंस्कृत समाज का निर्माण हो पाता है।

वर्तमान में परिवार/समाज के भीतर यदि सूक्ष्म दृष्टिपात किया जाए तो हम पाते हैं कि शिक्षा और समाज दो पृथक-पृथक दिशाएं हैं। ऐसा स्पष्टत दिखाई दे रहा है। शिक्षा प्राप्ति हेतु समाज तो बहुत दूर परिवार/समाज के मध्य बढ़ती दूरियों को पाटने के उद्देश्य से शिक्षा के साथ सामाजिक सरोकारों का गठबंधन वर्तमान की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक हो गया है। अतः शिक्षा के दौरान समाज सेवा का अनिवार्य जुड़ाव शिक्षा विभाग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल है। यहाँ बालक प्रारंभिक शिक्षा के साथ ही समाज सेवा का व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है तो शिक्षा के साथ ही समाज स्वतः ही जुड़ जाता है। जल सेवा, स्वच्छता, बुजुर्गों का सम्मान, जेण्डर संवेदनशीलता, बीमारों/दिव्यांगों की सहायता, साक्षरता प्रसार, वृक्षारोपण, बाल विवाह, पर्व उत्सव-त्योहार (कारण, महत्ता, उपयोगिता) प्राथमिक सहायता, जल, बिजली, ईंधन की सुरक्षा, पुरातात्विक धरोहर का संरक्षण, सांस्कृतिक परम्पराएं, परिवारों का स्वरूप, उनकी अहमियत समय रहते ही बालकों में पोषित हो जाती है तो उनकी शैक्षिक प्रगति सामाजिक अनुभूतियों के साथ सार्थक आकार प्राप्त करती है।

शिक्षा का उद्देश्य अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। यह विद्यालयों और सहशैक्षिक गतिविधियों की सक्रियता से प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप बालसभा, प्रवेशोत्सव स्काउट/गाइड/राष्ट्रीय कैडिट कोर्स, राष्ट्रीय सेवा योजना, साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद प्रतियोगिताएं कला महोत्सव इत्यादि में सक्रियता बालकों को सुशिक्षित व सामाजिक व्यक्तित्व बनाए रखने में मददगार साबित होती है।

वरिष्ठ व्याख्याता
49, गोपाल पथ, कृष्ण विहार, कुन्दन नगर,
अजमेर (राज.)-305001
मो: 9828186706

www.rajsevak.com

फिट इंडिया मूवमेंट

जीवन की नींव उत्तम स्वास्थ्य

❒ सुरेश कुमार

फिट इंडिया मूवमेंट की शुरुआत 29 अगस्त 2019 से राष्ट्रीय खेल दिवस को खेल के महान जादूगर मेजर ध्यानचंद के 114वें जन्म दिवस पर दिल्ली के इंदिरा गाँधी स्टेडियम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई थी।

फिट इंडिया मूवमेंट मुहिम का उद्देश्य स्वास्थ्य और सेहत का रखरखाव रखना है अपने आप को स्वस्थ एवं फिट रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम और संतुलित आहार के साथ तनाव मुक्त मस्तिष्क रखना है जो लोग आदर्श जीवन जीना चाहते हैं, बीमारियों से निडर रहना चाहते हैं, अपने जीवन में कोई लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें अपने आप को फिट रखना आवश्यक है साथ ही अपने आस-पड़ौस से लेकर गली-मोहल्ले, गाँव एवं राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को फिट रखना है और यह तभी संभव है जब हम शारीरिक गतिविधियों से जुड़ेंगे और लोगों को जोड़ेंगे।

यहाँ फिटनेस का मतलब शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहना ही नहीं है बल्कि स्वास्थ्य, स्वस्थ और समृद्ध जीवन की एक जरूरत है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास अर्थात शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक रूप से मजबूत होने के साथ ही कौशल में निपुणता व नैतिक दृष्टि से मजबूत मन आदि से है।

युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है- आज के युवाओं को फुटबाल के मैदान की आवश्यकता है। देश के प्रधानमंत्री ने स्वास्थ्य के बारे में कहा है सफलता और फिटनेस एक दूसरे से जुड़ी हुई है जैसे स्पोर्ट्स, बिजनेस और फिल्म आदि सभी क्षेत्रों में जो फिट है वहीं शिखर पर है। बॉडी फिट है तो माइंड फिट है क्योंकि हम अपने स्वास्थ्य के बारे में बहुत कम जानते हैं लेकिन स्वास्थ्य की ताकत का हमें पता चला है कि इसमें इन्वेस्टमेंट जीरो है लेकिन रिटर्न 100 प्रतिशत है।

फिटनेस पर ध्यान नहीं देने से समाज में एक उदासीनता आ गई। पहले लोग शारीरिक श्रम व पैदल कई किलोमीटर चल लेते थे लेकिन वर्तमान में आधुनिक साधनों व तकनीक ने लोगों की दिनचर्या में शारीरिक श्रम से लेकर पैदल चलने की क्रिया को प्रभावित किया है। इसके अलावा स्वास्थ्य की दृष्टि से फिट इंडिया मूवमेंट अभियान को मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शुरू करने के कई कारण रहे हैं- जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या के बीच शारीरिक गतिविधियों का न होना, मैदानों का अभाव होना, भागदौड़ भरी जिंदगी में समय नहीं मिल पाना, भौतिक सुविधाओं को पाने के चक्कर में अपने आप पर ध्यान ना देना, वातावरण अनुकूलित न होना, रसायन युक्त खाद्य वस्तुओं के सेवन करने से, गलत खानपान के साथ फास्ट फूड के अधिक सेवन से अनेक बीमारियां हो जाना, एक ही जगह अधिक देर तक बैठकर काम करने से शारीरिक विकृति आ जाना, बढ़ते कामकाज से मानसिक तनाव व दबाव में रहना, स्वच्छता का अभाव होना, बच्चों में थैले के बढ़ते बोझ का होना, औषधि युक्त पेड़-पौधों का सेवन कम करना, संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में रहने से, धूप में नहीं निकलने व न रहने से, शुद्ध पानी का इस्तेमाल कम करने से, मिट्टी युक्त जगह पर न रहने से, ऑक्सीजन युक्त हवा प्रचुर न मिलने से आदि कई कारण हैं जो हमारे स्वास्थ्य को कहीं ना कहीं प्रभावित करते हैं। इन्हीं कारणों की वजह से हम हमारे स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाते हैं और हम अस्वस्थ हो जाते हैं।

फिटनेस के प्रति इस उदासीनता व अस्वस्थता से बाहर निकालने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने फिट इंडिया मूवमेंट के माध्यम से एक जन आंदोलन चलाकर हम सब भारतवासियों को हमारे स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिए शारीरिक गतिविधियाँ, खेल, योग, सांस्कृतिक क्रियाकलापों आदि में हर रोज आधा घंटा देने के लिए एक अभियान चलाया है। इस मुहिम को विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों तक अनिवार्य रूप से चलाने के लिए व बच्चों के स्वास्थ्य को उत्तम बनाने के लिए एक जागरूक अभियान हमारे प्रधानमंत्री जी ने चलाया है।

इसी जागरूकता अभियान को इन गतिविधियों खेल, लोक नृत्य, पारंपरिक खेल, साइकिल, रैली, प्रार्थना सभा, एन.एस.एस., एन.सी.सी., स्कॉउट का कैम्प, निबंध, नारा लेखन, पोस्टर, अंतर सदनीय प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन कर इसके अलावा लोगों को संतुलित आहार की जानकारी देकर, पर्यावरण हितैषी योजनाओं की जानकारी देकर, ई-वेस्ट या इलेक्ट्रोनिक कचरे का प्रबंधन करके, वैश्विक समस्या के समाधान के लिए आविष्कार या इनोवेशन करके, उपवास के महत्त्व को बता करके, चिकित्सा पद्धति से भोजन करके, परिवहन की जगह पैदल व सीढ़ियों का उपयोग करके, औषधि युक्त पेड़-पौधों की जानकारी देकर, नियमित स्वास्थ्य की जांच करवाकर, स्वास्थ्यप्रद जीव जंतुओं, पशु-पक्षियों की जानकारी देकर, घर में किचन गार्डन के विकास की जानकारी देकर, विद्यालय में बाल सभा व गाँव में ग्राम सभाओं में स्वास्थ्यप्रद जानकारी देकर व्यक्तिगत स्वच्छता की जानकारी देकर, यौन शिक्षा की जानकारी देकर आदि को जागरूकता अभियान में शामिल करना है।

इनके साथ ही देश के लोगों में जागरूकता लाने के लिए फिट इंडिया मूवमेंट के तहत फिट इंडिया फ्रीडम रन, प्लोग रन, साइक्लोथोन, फिट इंडिया वीक, फिट इंडिया स्कूल सर्टिफिकेट स्वच्छ भारत अभियान, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, रन फोर यूनिटी, आयुष्मान भारत योजना आदि कार्यक्रम शुरू किए जिसमें देशभर के विभिन्न संस्थाएं व संगठन इस जागरूकता का हिस्सा बन रहे हैं और लोगों को स्वास्थ्य के प्रति सजग कर रहे हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट में फिटनेस के प्रति सजगता के लिए प्रतिज्ञा निर्धारित की है। जो इस प्रकार है-

'मैं अपने आप से वादा करता हूँ कि मैं हर दिन शारीरिक गतिविधि और खेल के लिए समय समर्पित करूँगा और मैं अपने परिवार के सदस्यों और पड़ौसियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ होने और भारत को एक उपयुक्त राष्ट्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करूँगा।'

शारीरिक शिक्षक
श्री शिवलाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मण्डावरा, झुंझुनूं (राज.)
मो: 9887499300

www.rajsevak.com

गाँधी दर्शन

गाँधी विचार और पर्यावरण

❒ विजय सिंह माली

''मुझे प्रकृति के अतिरिक्त किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं हैं। उसने कभी भी मुझे विफल नहीं किया हैं। वह मुझे चकित करती है, मुझे आनंद की ओर ले जाती है।'' – महात्मा गाँधी

गाँधीजी यद्यपि कोई पर्यावरणविद् नहीं थे तथापि प्राकृतिक नियमों के अनुरूप वे एक ऐसी जीवन पद्धति के पक्षधर थे जो नैसर्गिक रूप से पर्यावरण की हितैषी हो। गाँधीजी का दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति व्यापक था। उनकी सोच पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण थी। इस सोच में समाज के अंतिम व्यक्ति के हितों का ध्यान रखा गया है। गाँधीजी का पर्यावरणवाद नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने उन पर्यावरणीय समस्याओं का भी पूर्वानुमान लगा लिया था जिसका हम आज सामना कर रहे हैं गाँधीजी का प्रकृति के प्रति बेहद लगाव था। गाँधीजी का आश्रम जीवन उनकी प्राकृतिक जीवन शैली और निसर्गोपचार यानी कुदरती इलाज का दर्शन पर्यावरण के बारे में स्पष्ट संदेश देता है।

महात्मा गाँधी के अनुसार अहिंसा का विचार जियो और दूसरों को जीने दो से बढ़कर हैं, स्वत: जीवनयापन करें और दूसरों को जीने में मदद करें। इन दूसरों में पृथ्वी, सम्पूर्ण प्राणी जगत व प्रकृति समाविष्ट है। गाँधीजी के अनुसार प्रकृति व पर्यावरण का शोषण भी हिंसा है। इस शोषण पर आधारित अर्थशास्त्र वास्तव में अनर्थशास्त्र है, स्वार्थशास्त्र है, विपत्तिशास्त्र है। गाँधीजी शोषण रहित अहिंसक समाज रचना की बात करते थे। गाँधीजी की अहिंसा का अर्थ था प्रेम या स्नेह। वसुंधरा, पर्यावरण और निसर्ग से प्रेम यही पर्यावरण के क्षेत्र में अहिंसा का अर्थ है। उनके लिए सृष्टि की सेवा अहिंसा का ही पर्याय थी। गाँधीजी कहा करते थे यदि हमारे मन स्वच्छ और निरोगी हुए तो हम सभी प्रकार की हिंसा का त्याग कर सकते हैं। जब तक मानव संस्कृति के भौतिक विषयों के केन्द्र में अहिंसा नहीं होगी, हम प्रकृति के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए पर्यावरण सम्बन्धी गतिविधियों को नहीं चला सकते।

गाँधीजी त्यागवादी थे और त्यागवृत्ति ही निसर्ग या प्रकृति का संरक्षण-संवर्धन कर सकती है। उन्होनें समान वितरण की कल्पना प्रस्तुत की। प्राकृतिक सम्पत्ति का वितरण न्यायपूर्ण तरीके से नहीं होता तो सम्पति की परिणति विपत्ति में हो जाएगी। गाँधीजी का आवश्यकताओं पर आधारित जीवन जीने का संदेश भी पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। वे अपना जीवनयापन भी इसी प्रकार करते थे इसलिए वे कह सके-'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' गाँधीजी का कहना था-''प्रकृति में सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है परन्तु उसमें एक भी व्यक्ति की लोभ पिपासा पूर्ण करने की क्षमता नहीं है।'' गाँधीजी के अनुसार आवश्यकताओं पर आधारित सादगीमय जीवन पागलपन या दरिद्रता का सूचक नहीं है। जीवन का वास्तविक सौंदर्य पूर्ण तथा सरल जीवन में ही हैं।

गाँधीजी की इच्छा इहलोक में ही स्वर्ग के नंदनवन की स्थापना करने की थी। गाँधीजी का अध्यात्म संकुचित नहीं था। वे कहते थे-**''मेरा घर चारों ओर से किले की तरह बंद या दरवाजे, खिड़कियों से रहित न हो। मेरी इच्छा है कि विभिन्न देशों की संस्कृति की स्वच्छ हवा मेरे घर में प्रवाहित हो।''** गाँधीजी ने सात सामाजिक पापों-परिश्रम रहित धनार्जन, सदाचार रहित व्यापार, चारित्र्य रहित ज्ञान, विवेक रहित सुख, संवेदना रहित विज्ञान,वैराग्य विहीन उपासना और सिद्धान्त रहित राजनीति का उल्लेख करते हुए इनसे बचने को कहा है ताकि पर्यावरण का संरक्षण-संवर्धन हो सके, पर्यावरण की सेवा हो सके।

गाँधीजी की प्रकृति विषयक दृष्टि में सृष्टि और मनुष्य दोनों के लिए सहानुभूति, अनुकंपा और करुणावृत्ति थी। सेन्द्रिय खेती और गोसेवा भी उनकी दृष्टि में करुणा का कार्यक्रम था। उनके लिए गाय करुणा की कविता थी। गाँधीजी के मन में प्रकृति के प्रति विलक्षण प्रेम और स्नेह था। पंच महाभूत पर उनका अप्रतिम प्रेम था। उनका मानना था कि मानव जीवन पंच महाभूतों पर ही निर्भर है। ये पंच महाभूत प्राणी जगत के मित्र हैं अत: ये सभी शुद्ध और स्वच्छ रहने और रखने चाहिए।

गाँधीजी के वस्त्र आहार सब पर्यावरण के पोषक थे। वे तो खुले आसमान के नीचे बिस्तर लगाकर सोते थे। भूमि पर पैर और आँखों में आकाश दर्शन यह उनके सादे जीवन का एक अंग था। गाँधीजी के अनुसार खादी केवल वस्त्र नहीं है वरन जीवन प्रणाली है। खादी पर्यावरण हितैषी वस्त्र है। वह भारतीय वातावरण के अनुकूल है तथा मिल में तैयार कपड़े की तुलना में कम पानी में तैयार होती है। गाँधीजी कहा करते थे कि ''आपका पानी, अन्न और हवा ये सब शुद्ध होना चाहिए किन्तु केवल अपने तक स्वच्छता रखने से हमें संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। जो स्वच्छता आप स्वयं के बारे में रखना चाहते हैं, उस स्वच्छता का प्रचार-प्रसार आप अपने आसपास भी कीजिए।'' गाँधीजी ने ग्राम सफाई को भी रचनात्मक कार्यक्रम में स्थान दिया। गाँधीजी के एकादश व्रत भी गाँधीजी को पर्यावरण हितैषी सिद्ध करते हैं। गाँधीजी ने आरोग्य दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को कितना पानी चाहिए इसका हिसाब भी लगाया था। नैसर्गिक उपचार में मिट्टी पानी का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, उसी प्रकार सूर्य का भी बहुत महत्त्व है। गाँधीजी के आरोग्य के क्षेत्र में किए गए प्रयोग जिसे निसर्गोपचार या प्राकृतिक चिकित्सा कहा जाता है, उल्लेखनीय हैं। प्रकृति के साथ रहते हुए निरोगी रहना तथा आरोग्य की रक्षा करना ही निसर्गोपचार है। इसी प्रकार जैविक खाद का उपयोग करके सेन्द्रिय खेती ही गाँधी जी के लिए भू-माता का शोषण रोककर उसकी सेवा करने का साधन बना है।

महात्मा गाँधी के प्रकृति चितंन से

www.rajsevak.com

सम्बन्धित संदेश आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने आज से एक शताब्दी पूर्व 1909 में हिन्द स्वराज में लेख लिखकर पश्चिमी समाज के आनंद और संतुष्टि की अंतहीन दौड़ को समूची धरती और उसके संसाधनों के लिए गंभीर खतरा माना था। उनका मानना था कि पश्चिम के जीवन स्तर की नकल करने से पर्यावरण का संकट पनप सकता है। उन्होनें अपने प्रकृति चिंतन में ग्रामस्वराज, कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन, आयातित उपभोक्ता वस्तुओं पर नियंत्रण, कृषि में सुधार, अक्षय समाज, आर्थिक समानता, अहिंसा तथा जीवों के प्रति संवेदना और स्वच्छता के बिन्दुओं को महत्त्व दिया। गाँधीजी का मानना था कि ''पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियाँ ही नहीं हैं, वे हमारे बच्चों की धरोहर हैं, जैसी हमें मिली हैं वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा।

गाँधीजी कहा करते थे जो व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं को कई गुना बढ़ाता है वह सादा जीवन उच्च विचार के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। उनका मानना था कि विकास का त्रुटिपूर्ण ढांचा गाँवों से शहरों की ओर पलायन को प्रोत्साहित करता है। उन्होंने शहरीकरण को लेकर चिंता जताते हुए गाँवों की तरफ लौटो का संदेश दिया। गाँधीजी पृथ्वी को एक जीवित संरचना मानते थे। वे सम्पूर्ण पृथ्वी को एक ही मानते थे और सम्पूर्ण ब्रह्मांड और उनमें रहने वाले मनुष्य और जीवजगत एक ही शक्ति द्वारा संचालित हैं। गाँधीजी प्रकृति के जरुरत से ज्यादा विदोहन के धुर विरोधी थे। उनका मानना था कि प्रकृति से हमें उतना ही लेना चाहिए जितना कि हमें आवश्यकता हैं। आवश्यकता से अधिक लेकर प्रकृति की बर्बादी नहीं करनी चाहिए।

निस्संदेह गाँधीजी के पर्यावरण विषयक विचार आज ज्यादा प्रासंगिक हैं, गाँधीजी के विचारों के आलोक में हमें प्राकृतिक जीवन शैली अपनानी चाहिए, सेन्द्रिय खेती को बढ़ावा देना चाहिए, निसर्गोपचार को अपनाना चाहिए। इससे पर्यावरण का संरक्षण-संवर्धन भी होगा और पर्यावरण की सेवा भी, यह समय की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्य
श्री धनराज बदामियारा बा.उ.मा.वि.,
सादड़ी (पाली) **मो : 9829285914**

सीखने की पारिस्थितिकी

❐ **सुभाष चौधरी**

'शिक्षा सबसे ताकतवर हथियार है जिसका इस्तेमाल आप दुनिया बदलने में कर सकते है।– नेल्सन मण्डेला

व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन ही सीखना कहलाता है। निरंतर सीखते रहना व्यक्ति के जीवन, विकास एवं संवर्द्धन के लिए आधारभूत शर्त बन चुका है और जो सीखने में पिछड़ जाता है उसका अस्तित्व ही मिट जाता है। सीखना स्वयं में एक परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया है। जब कोई व्यक्ति सीखता है तो उसमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन होता है। वैसे सीखना एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म पूर्व से लेकर मृत्यु की शैया तक चलती है।

सीखने में वंशानुक्रम एवं वातावरण की महत्ता को परिलक्षित नहीं किया जा सकता है। सीखने की न तो सीमा होती है और न ही उम्र का बंधन होता है परन्तु अब इतना आवश्यक हो गया है कि सीखने की पारिस्थितिकी (Ecology) में बदलाव आया है। समय बदलने के साथ सीखने के उपकरण बदल गए हैं और सीखने की विधि एवं प्रविधि में भी बदलाव आ गया है। सीखने की विषय वस्तु (Content) में भी परिवर्तन आया है। सीखने वाला बालक न केवल सक्रिय होता है अपितु स्वयं एक अभिकर्ता (Agent) के रूप में सीखने की प्रक्रिया का अहम हिस्सा होता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि शिक्षा एकतंत्रीय नहीं है अपितु बहुतंत्रीय है जिसमें शिक्षक-विद्यार्थी, अभिभावक, माता-पिता, बालक, संस्थाप्रधान, शासक, समाज सभी की भूमिका होती है।

अतः सिखाने वाला संगठन ऐसा हो जो स्वतंत्रता-स्वायत्तता को बल देवे। आज की शिक्षा सर्व सुलभ होनी चाहिए तथा रचनात्मक एवं सृजनात्मक होनी चाहिए तभी हम बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। इस हेतु गुणात्मक शिक्षा की आवश्यकता है ताकि ज्ञान को गहराई से सीखा जा सके। जन्म के समय बालक बहुत ही सीमित शारीरिक क्षमता वाला अत्यंत सरल किस्म की शारीरिक क्रियाओं को करने वाला एक जैविक पूंज मात्र होता है। जो पूरी तरह से माता-पिता, अभिभावक, पालक, शिक्षक पर निर्भर होता है। बालक की प्रथम शिक्षक उसकी माता एवं प्रथम पाठशाला उसका घर होता है। बाद में वह शिक्षक एवं विद्यालय के सम्पर्क में आता है और सीखता है। सीखने में अनंत संभावनाएं विद्यमान रहती हैं। बालक का विकास विद्यालय के अन्दर एवं बाहर दोनों के सहयोग से होता है। विद्यालय के अन्दर बालक के विकास में जहाँ शिक्षक की भूमिका होती है वही विद्यालय के बाहर पालक, शासक, समाज, राजनैतिक संस्थाएं, बाजार, मीडिया आदि सभी का योगदान होता है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की भूमिका को भी वर्तमान परिवेश, परिस्थिति में बालक के विकास की अभिवृद्धि में नकारा नहीं जा सकता है।

कोरोना काल में शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक का योगदान बहुत अधिक बढ़ गया है। वर्तमान समय में सीखने की बदलती पारिस्थितिकी को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है-

1. वर्क फ्रोम होम का आगाज।
2. शिक्षण ऐप का प्रादुर्भाव।
3. शिक्षण में तकनीक, प्रौद्योगिकी की भूमिका में बढ़ोतरी।
4. शिक्षा में कम्प्यूटर का योगदान।
5. शिक्षण में सहायक सामग्री की उपलब्धता।
6. शिक्षा में नवाचार का समावेश।
7. शिक्षा में अनुसंधान का समावेश।
8. शिक्षा में मनोवैज्ञानिकता को बढ़ावा।
9. शिक्षा में I.C.T. की उपलब्धता सार्वभौमिक है।
10. शिक्षा में वैज्ञानिकता में बढ़ोतरी के सार्थक प्रयास।

'ज्ञान में किए गए निवेश पर सबसे अच्छा ब्याज मिलता है।' –बैंजामिन फ्रेंकलिन

'शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है, क्योंकि आने वाला कल उनका है जो उसके लिए आज से तैयारी करते हैं।' – मैल्कम

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भीनासर (राज.) **मो: 8114489352**

www.rajsevak.com

नया सत्र-नए संकल्प

सर्वे भवन्तु सुखिन : सर्वे सन्तु निरामया

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर ने मानवता को झकझोर दिया है। प्रथम लहर के पश्चात सामाजिक जीवन, अर्थव्यवस्था, शिक्षा एवं अन्यान्य गतिविधियाँ पटरी पर आने लगी थी। एक नया विश्वास और जीवन व इंसानियत के प्रति विश्वास पैदा होने लगा था। सहसा महामारी का यह रौद्र रूप। मगर इंसान का हौसला बड़ा होता है। उसका उत्साह एवं जीजिविषा सर्वोपरि होता है। बड़े से बड़े तूफान के मध्य साहस रखकर अपनी नौका को खैने वाला किनारा पा ही लेता है। तूफानों से टकराकर मंजिल पाने वाली महिमा निराली होती है।

कोविड महामारी से अभी मुक्ति मिली नहीं है। जल्दी से यह होने वाला भी नहीं है। दुनिया का इतिहास इस बात का गवाह है कि साहस और आत्मविश्वास के बल पर बड़ी से बड़ी विपदा से मुकाबला कर विजय प्राप्त की गई है। टेनिसन ने कहा है- 'आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्म संयम तीनों मिलकर जीवन को बल प्रदान करते हैं। हथियारों और युद्ध की चालाकियों जैसे समस्त पराक्रमों का मूल तत्व निसंदेह आत्म-विश्वास है। यदि हम सर्वे करके देखें तो किसी भी हार ने पीछे आत्म विश्वास में कमी आना कारण मिलेगा।

चिकित्सक दवा दे सकता है। बीमारी से बचाव के लिए आवश्यक पथ्य बता सकता है। इनका सेवन व पालन कर जीवट तो स्वयं रोगी को अर्जित करना है। गुरुजन अधिगम के सूत्र बता सकते हैं। राह दिखा सकते हैं। इन सूत्रों एवं निर्दिष्ट राह पर चलकर मंजिल तक पहुँचने में कार्य तो स्वयं विद्यार्थी को करना है। मंजिल चलकर आपके पास नहीं आएगी; आपको चलकर मंजिल तक पहुँचना है। यह सब अपने आप अथवा मनोरथ करने से नहीं मिलता; इसके लिए उद्यम करना पड़ेगा, प्रयत्न करने पड़ेंगे। संस्कृत में एक बहुत सुन्दर सूक्ति है-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि ना मनोरथे।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा।।

भावार्थः- कोई भी कार्य उद्यम करने यानी परिश्रम करने से सिद्ध होता है। केवल मनोरथ यानी मन की इच्छा करने से नहीं। जिस प्रकार जंगल का राजा होने के बावजूद शेर को स्वयं हाथ-पैर मारकर शिकार प्राप्त करना होता है। शेर हमारे जंगल का राजा है, यह सोचकर कोई हिरण स्वयं चलकर उसके मुँह में नहीं जाता। इसके लिए तो उसे उठकर प्रयास करना ही पड़ता है। जिस गृहस्थ का स्वामी रोजी रोटी कमाने के लिए नहीं निकलेगा, उसे एवं उसके बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी, यह सार बात है।

आत्मविश्वास के साथ आत्मज्ञान एवं आत्म संयम की स्थिति स्वाध्याय से आती है। इससे अन्ततः आत्म शान्ति प्राप्त होती है। स्वाध्याय का आशय स्वयं को जानने से है। हम दुनिया भर के क्रियाकलापों पर अपनी दृष्टि रखते हैं, लेकिन स्वयं को भूले रहते हैं। यह बहुत बड़ी विडम्बना है। सारे ऊहापोह एवं उठापटक का कारण यही है। स्वाध्यायी अर्थात स्वयं से संवाद कर स्वयं से साक्षात्कार कर लेने वाले व्यक्ति को इस बात की परवाह नहीं होती कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं अथवा क्या कह रहे हैं? कवि शिरोमणि रामधारीसिंह दिनकर ने लिखा है-

गौण, अतिशय गौण है, तेरे विषय में,
दूसरे क्या बोलते, क्या सोचते हैं।
मुख्य है यह बात पर अपने विषय में
तुम स्वयं क्या सोचते, क्या जानते हो।।

भावार्थः- यह बहुत गौण बात है कि दूसरे लोग आपके बारे में क्या विचार रखते हैं और क्या बोलकर कहते हैं। ये सब महत्त्वहीन है। मुख्य बात यह है कि तुम स्वयं अपने बारे में क्या सोचते और क्या जानते हो। स्वयं का मूल्यांकन स्वयं के द्वारा ही श्रेष्ठ मूल्यांकन है। आत्मविश्वास के साथ स्वयं पर निष्पक्ष नजर रखकर मूल्यांकन करने तथा मूल्यांकन के अनुरूप अंक प्रदान करने वाला व्यक्ति सदैव जयी होता है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण शब्द है- आत्मसम्मान। समस्त उपक्रमों एवं समस्त क्रियाकलापों का एक उद्देश्य है आत्म सम्मान की रक्षा करना। आत्म सम्मान की न केवल रक्षा ही करना अपितु उसे बढ़ाना, मानव का धर्म है। आत्म सम्मान की रक्षा करने वाले की बाह्य पक्षों से रक्षा अपने आप होती है, होकर रहती है, आत्म सम्मान की रक्षा करना सफलता के मार्ग पर पहला पक्का पांव रखना है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम दूसरों के अधिकारों का उचित सम्मान करते हुए अपने आत्म सम्मान की रक्षा करें। अपने 'स्व' को सुरक्षित रखें। रहीम जी इसे 'पानी राखिए' कहते हैं। वे कहते हैं-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती-मानस-चून।।

भावार्थः- रहीम जी कहते हैं कि व्यक्ति को अपने आत्म सम्मान स्वाभिमान की रक्षा करनी चाहिए। कारण बिना आत्म विश्वास के सब बेकार है। जिसका आत्म सम्मान चला जाता है, समझो उसका सब कुछ चला गया। उसका जीवन रंगहीन हो जाता है। अतः मनुष्य को चाहिए कि सब प्रकार से प्रयत्न करते हुए वह अपने 'पानी' (आत्मसम्मान) की रक्षा करें। दर्शनशास्त्र में एक शब्द और आता है- 'आत्म-स्वरूप'। यह स्थिति आत्मा से एकीकार होने की है। गीता में भगवान श्री कृष्ण इसे स्थिति प्रज्ञता एवं ऐसे व्यक्ति को स्थित प्रज्ञ कहते हैं। आत्मस्वरूप पुरुष को बाह्य जगत की

www.rajsevak.com

चिन्ता नहीं रहती। शंकराचार्य ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है- 'आत्म स्वरूप में लगा हुआ चित्त बाह्य विषयों की चिन्ता नहीं करता (जैसे कि दूध में से निकला हुआ घी दुग्धभाव को फिर से प्राप्त नहीं होता।)' वह सुख-दुख, लाभ-हानि से ऊपर बिल्कुल स्थित प्रज्ञ होता है।

व्यक्ति के स्व (Self) से सम्बन्धित आत्मानुशासन, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मज्ञान, आत्मदर्शन, आत्मतत्त्व, आत्म निरीक्षण, आत्म बल, आत्मनिर्भरता, आत्म निरीक्षण, आत्म प्रेम, आत्मरक्षा, आत्म संतुष्टि, आत्म शान्ति, आत्म संयम, आत्म स्वरूप, आत्मानंद, आत्मानुभव, आत्म विजय आदि पर चिंतन शास्त्र में व्यापक विस्तार पढ़ने-समझने को मिलता है। दार्शनिकों ने बहुत गूढ़ विचार इन संधारणाओं पर प्रकट किए हैं। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के चिन्तन में इनका पर्याप्त विस्तार दिया गया है। अपनी विदेश यात्राओं के समय राधाकृष्णन् इन पर विचार प्रस्तुत करते तो तत्कालीन वैश्विक ताकतों यथा रूस, अमेरिका आदि के शासनाध्यक्ष डॉक्टर साहब के कायल हो जाते थे। राधाकृष्णन् का सदंर्भ इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वे शिक्षक थे और उनका जन्मदिन (5 सितम्बर) शिक्षक दिवस के रूप में भारत में मनाया जाता है। शिक्षकों को इसी संदर्भ में इसे देखना एवं समझना चाहिए।

कोरोना (कोविड-19) महामारी से त्रस्त इस काल में आत्म नियंत्रण परमावश्यक है। कोई भी विपदा आए, उसका जाना ठीक उसी प्रकार से निश्चित है जैसे घोर अंधकारमयी अमावस्या की रात का जाकर सुनहरी सुबह का आना है। ये कष्ट एवं झंझावत के दिन चले जाएंगे। संघर्ष ही जीवन है। संघर्ष नहीं तो कैसा जीवन। कोरोना के इस दौर में हमने देखा है कि जिन्होंने धैर्य एवं संयम का दामन थामकर पथ्य-परहेज किया, उन्होंने कोरोना को हराया है। आत्मविश्वास की चाबुक से कोरोना को मार भगाया तथा धैर्य एवं अमिट उत्साह की चाबी से सुख-समृद्धि पर पड़े ताले को खोला है।

इस विवेचन को शिक्षा एवं शिक्षकों के परिप्रेक्ष्य में समझना आवश्यक है। शिक्षा एक तरह से रास्ता है जो मुक्ति की मंजिल दिलाती है और गुरुजन रास्ता दिखाने (पथ प्रदर्शक) एवं रास्ते को कंटक मुक्त करने वाले महापुरुष हैं। विगत डेढ़ वर्ष के काल खण्ड (जनवरी 2020 से लगातार) में आत्म/स्व से सम्बन्धित उपर्युक्त संदेश अधिकारपूर्वक समाज में आप गुरुजन ने ही दिया है। उनके इस अतुल्य योगदान की प्रशंसा उच्च स्तर पर हुई और हो रही है।

ग्रीष्मावकाश के पश्चात औपचारिक रूप से विद्यालय खुल गए हैं। राज्य सरकार में माननीय मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री और शिक्षा सचिव तथा विभाग स्तर पर विभागाध्यक्ष शिक्षा निदेशक एवं उनके सहयोगी अंधेरे में प्रकाश तलाशते हुए शिक्षा व्यवस्था में विकल्प प्रकाश में ला रहे हैं। पिछले सत्र के अनुभव हमारे सामने हैं। 'Good out of bad' धारणा के अनुसार करणीय कार्यवाही का ताना बाना रचना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर भविष्य में संभावित निर्णयों का वह आधार बन सके। वास्तविक कार्यक्षेत्र (field) से वास्तव में नीतियों/कार्यक्रमों को धरातल पर उतारने वाले व्यक्तियों (workers) द्वारा प्रस्तुत सुझाव एवं तथ्य जब नवीन नीतियों के आधार बनते हैं, तब सार्थक नए कार्यक्रम सामने आते हैं और यह गुरुजन ही कर सकते हैं।

कोरोना ने हमारे अनेक संस्कारों को लोक मानस में मान्यता प्रदान कर दी है। सामान्यतः शारीरिक सफाई (नहाने, कपड़े धोने, हाथों को बार-बार धोने, भीड़-भाड़ से बचने) (Social Distancing) जैसी बातों को हमारे यहां हल्के में लेते हैं। डब्ल्यूएचओ मल्टी मॉडल हैंड हाइजीन सुधार रणनीति के तहत प्रतिवर्ष 5 मई के दिन विश्व हाथ स्वच्छता दिवस मनाया जाता है। राजस्थान में सर्व शिक्षा परियोजना के द्वारा हाथ धुलाई से सम्बन्धित एक कार्यक्रम में जाने पर उपस्थित ग्रामीणों के मुँह से उलाहना सुनने को मिला कि अब यही रह गया है स्कूलों में सिखाने के लिए। वे एक तरह से हाथ धुलाई कार्यक्रम का निरर्थक एवं गैर शैक्षणिक कार्य मान रहे थे। कोरोना महामारी ने निसंदेह यह प्रमाणित कर दिया है कि बार-बार हाथ धोना कितना महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है। अब इस मान्यता को सतत बनाए रखना तथा जीवनचर्या में शुमार किया जाना अपेक्षित है। यह एक कहावत है कि जितनी उपयोगी एवं श्रेष्ठ शिक्षाएं दुश्मनों से मिलती हैं, उतनी दोस्तों से नहीं। कोरोना दुश्मन ने हमें सिखा दिया है कि बार-बार हाथों को धोना है। दो गज की दूरी बनाए रखनी है। भीड़ से बचना है। बिना काम घर से बाहर नहीं निकलना है। अपने खान-पान एवं जीवनशैली को स्वास्थ्यवर्द्धक बनाना है आदि-आदि।

शिक्षा के संदर्भ में देखे तो Online स्व प्रेरित शिक्षण अधिगम का महत्त्व अब समझ में आया है। Self Study की बात हम शुरू से ही करते रहे हैं; लेकिन इसकी महत्ता जितनी कोरोना काल में समझ में आई, उतनी पहले कभी नहीं आई। हमें इन व्यवस्थाओं के दोषों से मुक्ति पाने के लिए शोध एवं उचित समाधान करने चाहिए। स्कूली शिक्षा क्षेत्र में उच्चतर कक्षाओं, महाविद्यालयी शिक्षा एवं कोचिंग जैसी सारी शिक्षा ऑनलाइन हो सकती है। नवीन परिवेश एवं परिस्थितियों को देखते हुए हमें ऐसा करना ही होगा।

नए शैक्षिक सत्र 2021-22 में न केवल पढ़ाने-लिखाने अपितु उच्च स्तर W.H.O. से लेकर राज्य/केन्द्र सरकार, स्थानीय प्रशासन) से जारी एडवाइजरी का अनुश्रवण करने के लिए प्रभावी माहौल बनाने का कार्य भी शिक्षकवृन्द को करना चाहिए। छात्र-छात्राओं के अभिभावकों के रूप में सामाजिक सम्पर्क में वे रहते हैं। उनकी वाणी एवं व्यवहार में ताकत है। उसके प्रति परम सम्मान एवं विश्वास समाज में रहता है। सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा शिक्षक ही रहे हैं। विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बना रहे, उत्कृष्टता की ओर उनकी ललक में कोई कमी न आए, यह सुनिश्चित करना शिक्षक होने के नाते हमारा धर्म है। राजस्थान के शिक्षकों में ऊर्जा एवं उत्साह की कोई कमी नहीं है। उनमें अथाह ऊर्जा है। उनकी विशिष्ट थाती एवं प्रतिष्ठा इनके बल पर सामाजिक परिवर्तन का ध्वजवाहक बनकर जागरण की अलख जगानी है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि नया सत्र 2021-22 आधि-व्याधि से मुक्त होकर सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया का अमृत संदेश संपूर्ण जगत में चरितार्थ करे।

संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेवजी रोड,
गंगाशहर (बीकानेर)
मो: 9414060038

www.rajsevak.com

आदेश-परिपत्र : जुलाई, 2021

1. द्वितीय श्रेणी अध्यापकों की राज्यस्तरीय वरिष्ठता के संबंध में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं संशोधन हेतु पुनः निर्देश जारी करने के सम्बन्ध में।
2. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजनान्तर्गत वर्ष 2021–22 की प्रीमियम राशि के संदर्भ में।
3. राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।
4. सत्र 2021–22 में विद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के आरम्भ के संबंध में।
5. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन के सम्बन्ध में।
6. बोर्ड कक्षा 10 व 12 का परीक्षा परिणाम घोषित करने के सम्बन्ध में निर्देश।
7. एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत असमिया भाषा के 5 वाक्य/शब्द विद्यार्थियों को ONLINE भेजने बाबत।
8. कोरोना पॉजिटिव होने के दौरान शिक्षा विभागीय कार्मिक की मृत्यु होने पर 1.50 लाख रुपये की अतिरिक्त सहायता राशि हितकारी निधि से प्रदान करने बाबत।

1. द्वितीय श्रेणी अध्यापकों की राज्यस्तरीय वरिष्ठता के संबंध में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं संशोधन हेतु पुनः निर्देश जारी करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि/के-2/11968/मानदण्ड/2019-20 दिनांकः 08.04.2021 ● आदेश ● विषयः द्वितीय श्रेणी अध्यापकों की राज्यस्तरीय वरिष्ठता के संबंध में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं संशोधन हेतु पुनः निर्देश जारी करने के सम्बन्ध में।

निदेशालय स्तर से जारी हो चुकी द्वितीय श्रेणी अध्यापकों की राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं संशोधन के प्रस्ताव निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं जिनके कारण नियमित वरिष्ठता सूचियों के निर्माण का कार्य बाधित हो रहा है तथा प्रकरणों के विलंब से प्रस्तुत करने के कारण रिव्यू डीपीसी के प्रकरणों की संख्या में अनावश्यक वृद्धि हो रही है। अतः इस संबंध में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं संशोधन हेतु पुनः निर्देश जारी किए जाते हैंः-

1. योग्यता अभिवृद्धिः- किसी कार्मिक के द्वारा यदि चालू वर्ष में योग्यता अर्जित की जाती है, तो संबंधित कार्मिक योग्यता अभिवृद्धि किए जाने के छः माह (परीक्षा परिणाम जारी होने की तिथि) के भीतर अपना आवेदन सीबीईओ कार्यालय को प्रेषित करेंगे एवं सीबीईओ कार्यालय आवेदन पत्र को 10 दिवस के भीतर संभाग कार्यालय को प्रेषित करेंगे एवं संभाग कार्यालय प्राप्त आवेदन पत्रों के परीक्षण उपरांत निस्तारण /आदेश प्रसारित कर 10 दिवस में निदेशालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे। किसी कार्मिक द्वारा योग्यता अर्जित करने के पश्चात परीक्षा परिणाम तिथि से छः माह के भीतर जुड़वाने पर किसी प्रकार की रोक नहीं रहेगी। छः माह से पूर्व अर्जित योग्यता अभिवृद्धि को जुड़वाने की अंतिम दिनांक 20.02.2021 निर्धारित की गई थी। अतः इस प्रकार के प्रकरणों पर अब विचार नहीं किया जाएगा।

2. संशोधनः- किसी कार्मिक की प्रकाशित वरिष्ठता सूची में नाम/उपनाम/जन्मतिथि/वर्ग/लिंग आदि के लिए कार्मिक के द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार संशोधन किए जाने हेतु किसी प्रकार से तिथि की बाध्यता नहीं रहेगी। परन्तु कार्मिक द्वारा प्रस्तुत आवेदन संस्थाप्रधान के माध्यम से सीबीईओ कार्यालय एवं सीबीईओ कार्यालय से 10 दिवस में संभाग कार्यालय द्वारा 10 दिवस में परीक्षण कर निस्तारण उपरांत वांछित आदेश जारी कर निदेशालय को 10 दिवस में प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

3. नामांकन/विलोपनः- किसी कार्मिक का संभाग परिवतर्न/रिव्यू डीपीसी/न्यायायिक प्रकरण के कारण नवीन नामांकन/विलोपन होता है तो ऐसे प्रकरणों के लिए किसी प्रकार की तिथि की बाध्यता नहीं होगी, लेकिन ऐसे प्रकरणों का निस्तारण संभाग कार्यालय यथाशीघ्र करें तथा यदि प्रकरण में विलम्ब हुआ है तो प्रकरण में देरी किस स्तर पर हुई का स्पष्ट निर्धारण कर यथोचित कारण सहित आदेश प्रसारित कर निदेशालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 09.01.2020 के निर्देशानुसार वरिष्ठता सूचियों में योग्यता-अभिवृद्धि, नामांकन, विलोपन, संशोधन सम्बन्धी भेजे गए प्रकरणों का मण्डल स्तर पर प्रभावी मॉनिटरिंग के तहत अपने अधीनस्थ समस्त सीबीईओ कार्यालय से प्रति माह मासिक सूचना प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

● **(सौरभ स्वामी)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजनान्तर्गत वर्ष 2021–22 की प्रीमियम राशि के संदर्भ में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छा.पो.प्र/सेल-D/विद्यार्थी दुर्घटना बीमा/2020-21 दिनांकः 23.06.2021 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय ● आदेश ● विषयः राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजनान्तर्गत वर्ष 2021-22 की प्रीमियम राशि के संदर्भ में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के पत्रांकः प.5 (6) वित्त/ बीमा/2020 जयपुर दिनांकः 17.02.2021 व

www.rajsevak.com

22.06.2021 के द्वारा राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के दुर्घटना जोखिम को वहन करने के उद्देश्य से विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों से 10/- रुपये प्रति छात्र एवं 5/- रुपये प्रति छात्रा प्रति वर्ष एक लाख रुपये बीमाधन के आधार पर विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा पॉलिसी कवरेज उपलब्ध कराने की अनुमति प्रदान की गई है। यह स्वीकृति वित्त विभाग की आई.डी. संख्या 322100067 दिनांक : 11.02.2021 के अनुसरण में की गई है। इसी क्रम में राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग जयपुर के पत्रांक दिनांक 02.03.2021 (प्रति संलग्न) में वर्णित प्रावधान एवं शर्तों के अध्यधीन वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए इसकी प्रीमियम राशि एक मुश्त विद्यालय द्वारा अपने स्तर विभाग के निम्न राजस्व मद में जमा करवाई जानी है।

0202 - शिक्षा, खेलकूद, कला संस्कृति
01 - सामान्य शिक्षा
102 - माध्यमिक शिक्षा
(03) - अन्य प्राप्तियाँ
(01) - विविध

अतः आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों को निर्देशित करें कि उक्तानुसार विद्यार्थियों से अंशदान वसूल कर विभाग के राजस्व मद में जमा कराकर चालान की प्रति संस्थाप्रधान अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखे।

● **(सौरभ स्वामी)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/पी-2/2012 दिनांक : 25.06.2021 ● कार्यालय आदेश ● विषयः राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 10.12.2020 एवं 01.02.2021 द्वारा माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान दिनांक 01.01.2021, 31.03.2021 तक चलाने के निर्देश दिए गए थे। उक्त अभियान की अवधि 30 जून 2021 तक बढ़ाई जाती है। उक्त अभियान के शेष निर्देश यथावत रहेंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. सत्र 2021-22 में विद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के आरम्भ के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/गुणवत्ता/2020-21 दिनांक : 20.06.2021 ●1. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी समस्त जिले 2. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी समस्त ब्लॉक 3. समस्त संस्थाप्रधान राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय ● निर्देश ● विषयः सत्र 2021-22 में विद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के आरम्भ के संबंध में। ● संदर्भः इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक 04.06.2021 तथा 11.06.2021।

राज्य के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में 7 जून से विद्यालयों में नवीन शैक्षणिक सत्र 2021-22 का प्रारम्भ हुआ है। संदर्भित पत्र द्वारा दिनांक 19.06.2021 तक किए जाने वाले निम्नांकित कार्य सभी विद्यालयों में पूर्ण कर लिए गए होंगे-

1. आगामी कक्षा में क्रमोन्नत, विद्यार्थियों की प्रविष्टि स्कॉलर रजिस्टर एवं कक्षावार उपस्थिति रजिस्टर संधारित किया जाना।
2. आगामी कक्षा में क्रमोन्नत विद्यार्थियों का प्रमाण पत्र शाला दर्पण अथवा पीएसपी पोर्टल से डाउनलोड किया जाना।
3. विद्यार्थियों को टेलीफोन कॉल किया जाना एवं उसका रिकॉर्ड संधारण किए जाने का प्रारंभ करना।
4. कक्षावार स्माइल व्हाट्सऐप समूह का निर्माण।
5. क्रमोन्नति प्रमाण पत्रों का वितरण।
6. स्माइल मॉड्यूल पर स्टूडेंट रीच फार्म की वन टाइम एंट्री।

विद्यालय संचालन- कोविड-19 की परिस्थितियों के दृष्टिगत स्वास्थ्य विभाग एवं गृह विभाग की गाइडलाइन के अनुरूप ही कक्षा-कक्ष शिक्षण अभी प्रारंभ नहीं किया जा सकेगा। शिक्षक एवं अन्य कार्मिक गृह विभाग की गाइडलाइन के अनुसार इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक 15.06.2021 के अनुसार ही दिनांक 21 जून 2021 से 50 प्रतिशत स्टाफ ही विद्यालय में शालाप्रधान द्वारा निर्धारित नियमित आवर्तन (Rotation) में विद्यालय में उपस्थिति देंगे, शेष स्टाफ फील्ड में 'आओ घर में सीखें-2.0' कार्यक्रम हेतु ड्यूटी देंगे, इस प्रकार सम्पूर्ण स्टाफ कर्त्तव्यबद्ध रहेगा। उपस्थिति रजिस्टर एवं शाला दर्पण पर उपस्थिति संदर्भित पत्र दिनांक 11.06.2021 के अनुसार ही करनी है। दिनांक 21.06.2021 से 'बैक टू स्कूल' एवं 'आओ घर में सीखें-2.0' कार्यक्रम का प्रारम्भ हो रहा है। विद्यार्थियों को बैक टू स्कूल कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों के अध्ययन की निरन्तरता के संबंध में विविध कार्यवाही की जानी है।

गत सत्र भी कक्षा कक्ष शिक्षण बाधित रहने से टीचर विद्यार्थी इंटरेक्शन प्रारंभिक तौर पर कम हुआ, जिससे बच्चों में लर्निंग गैप्स उत्पन्न हुए हैं। अतः विभाग द्वारा इस नवीन सत्र 2021-22 के प्रारम्भ से ही विद्यार्थियों के सीखने और समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए एवं लर्निंग गैप्स की क्षतिपूर्ति की दिशा में सुनियोजित व क्रमिक कार्ययोजना का निर्माण किया गया हैं, जिसके अनुरूप शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सकेगा।

www.rajsevak.com

नवीन सत्र में शिक्षण हेतु निर्धारित टाइम लाइन

गतिविधि	निर्धारित तिथि
प्रवेशोत्सव-प्रथम चरण	31 जुलाई 2021 तक
विशेष योग्य विद्यार्थियों (सीडब्ल्यूएसएन) हेतु प्रवेशोत्सव प्रथम चरण	31 जुलाई 2021 तक
पाठ्य पुस्तकों का वितरण	30 जुलाई 2021 तक
कलस्टर लेवल वर्कबुक का वितरण	15 अगस्त 2021 तक
प्रथम परख	अगस्त के तीसरे सप्ताह में

वर्तमान कोविड-19 की परिस्थितियों के दौरान नियमित कक्षाकक्ष शिक्षण के अभाव की स्थिति में विभाग द्वारा **21 जून 2021 से अगस्त 2021** के लिए रिमोट लर्निंग प्लान के अनुसार **'आओ घर में सीखें-2.0'** 21 जून 2021 से आरंभ किया जा रहा है।

'आओं घर में सीखें-2.0' कार्यक्रम में निम्नांकित कार्य होंगे-

- बुनियादी दक्षताओं का ध्यान।
- बहुविध शिक्षण प्रणाली 'Multimodel teaching channel'- whatsApp के साथ TV और Radio से होगी पढ़ाई।
- विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए होमवर्क वर्कशीट।
- अभ्यास के लिए व्हाट्सऐप आधारित क्विज एवं अगस्त के अंत में आंकलन।
- टीचर कॉलिंग (टीचर-स्टूडेंट कनेक्ट)
- Textbook समय पर वितरण।
- CWSN विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षणिक प्रयास।

बुनियादी दक्षताओं पर ध्यान- गत सत्र 2020-21 में कोरोना काल में अनियमित कक्षा शिक्षण तथा रिड्यूस्ड सिलेबस से विद्यार्थियों में जो लर्निंग गैप रह गए हैं, सत्र 2021-22 के आरंभ में प्रथम दो माह में विद्यार्थी के लर्निंग गैप्स का भी चिह्नीकरण किया जाना तथा उस अनुसार उनके लर्निंग गैप्स को कम कर विद्यार्थी को कक्षा की Competency (दक्षता) के योग्य बनाने की दिशा में कार्य किया जाना है।

बहुविध शिक्षण प्रणाली ''Multimodel teaching'' channel - कोविड-19 के दौरान विद्यार्थियों की बुनियादी दक्षताओं को ध्यान में रखकर **'आओ घर में सीखें-2.0'** के तहत घर पर रहकर संचालित होने वाली बहुविध अर्थात व्हाट्सऐप, टीवी तथा रेडियो आदि के माध्यम से विभिन्न Online शैक्षणिक गतिविधियाँ जैसे स्माइल-3.0, ई कक्षा, शिक्षा-दर्शन, शिक्षा वाणी एवं हवामहल आदि संचालित की जानी हैं जिसके तहत कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री एवं गृहकार्य उपलब्ध कराया जाना है, जिससे कि विद्यार्थियों में अध्ययन की निरंतरता बनी रहे।

(1) SMILE 3.0 कार्यक्रम:- विद्यार्थियों को घर पर ही डिजिटल माध्यम से स्टडी मैटेरियल पहुँचाने के लिए स्माइल प्रोग्राम चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत स्कूलों द्वारा स्टूडेंट्स/पैरेंटस के साथ व्हाट्सऐप ग्रुप बनाए गए हैं जिसमें 21 जून 2021 से हर दिन सुबह 8 बजे अध्ययन सामग्री समूहों पर अपलोड की जाएगी जिसे माता-पिता, विद्यार्थी इसे एक्सेस कर सकते हैं। SMILE-3.0 के तहत निम्नलिखित कार्य किए जाने हैं-

1. स्माइल 3.0 व्हाट्सऐप ग्रुप्स का निर्माण (दिनांक 19.06.21 तक किया जा चुका हैं।)

- सभी कक्षा शिक्षकों द्वारा कक्षावार व्हाट्सऐप ग्रुप निर्माण।
- पिछले वर्ष के व्हाट्सऐप ग्रुप का उपयोग किया जा सकता है लेकिन समूह का नाम तथा विद्यार्थियों के नामांकित ग्रेड के साथ अपडेट किया जाना चाहिए।
- उस कक्षा के सभी शिक्षकों को व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ना।
- स्कूल के एचएम/प्रिंसिपल को स्कूल के सभी व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ना।
- सभी ग्रुप में कक्षाध्यापक के साथ विषयाध्यापक भी अवश्य जुड़ेंगे।

2. स्माइल 3.0 व्हाट्सऐप ग्रुप्स में डिजिटल अध्ययन सामग्री प्रेक्षण

- स्माइल और e-कक्षा वीडियो के साथ **दैनिक व्हाट्सऐप** संदेश सुबह 8 बजे भेजा जाएगा।
- व्हाट्सऐप संदेश सभी विद्यार्थी समूहों में सुबह 8.15 बजे तक उपलब्ध होना चाहिए।
- वीडियो सामग्री कक्षा 1 से 12 तक भेजी जाएगी।
- कक्षावार डिजिटल अध्ययन सामग्री का वितरण निम्नानुसार किया जाना हैं-

कक्षा	डिजिटल अध्ययन सामग्री का स्तर
कक्षा 1 और 2	नामांकित विद्यार्थियों को पूर्व-प्राथमिक स्तर की सामग्री प्राप्त होगी।
कक्षा 3	नामांकित विद्यार्थियों को कक्षा 1 के स्तर की सामग्री प्राप्त होगी।
कक्षा 4 और 5	नामांकित विद्यार्थियों को कक्षा 3 स्तर की सामग्री प्राप्त होगी।
कक्षा 6 से 12	नामांकित विद्यार्थियों को उनके कक्षा स्तर (at grade) की सामग्री प्राप्त होगी।

3. स्माइल 3.0 होमवर्क वर्कशीट तथा विद्यार्थी पोर्टफोलियो निर्माण:-

- प्रत्येक सोमवार को कक्षा 1 से 5 के लिए स्माइल मोबाइल संदेश के साथ होमवर्क वर्कशीट साझा की जाएगी। (सप्ताह में एक बार)
- प्रत्येक सोमवार और बुधवार को कक्षा 6 से 12 के लिए स्माइल संदेश के साथ होमवर्क शीट साझा की जाएगी। (सप्ताह में दो बार)
- यह होमवर्क वर्कशीट उस सप्ताह साझा की गई डिजिटल सामग्री पर आधारित होगी। जहाँ भी संभव हो, इन कार्यपत्रकों/वर्कशीट्स को विद्यार्थी के साथ डिजिटल रूप से (व्हाट्सऐप ग्रुप के माध्यम से) साझा किया जाना है।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों द्वारा भरी गई वर्कशीट्स को व्हाट्सऐप ग्रुप्स से एकत्र करना हैं और उन्हें स्कूल में बनाए गए **विद्यार्थी पोर्टफोलियो** में रखना हैं।

www.rajsevak.com

- जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, शिक्षकों को विद्यार्थी के घर विजिट के समय वर्कशीट को भी प्रिंट करके विद्यार्थियों को वितरित करना है तथा अगली विजिट में, शिक्षकों को वह वर्कशीट (जो विद्यार्थियों ने भरी हैं) एकत्र करनी हैं और उन्हें स्कूल में बनाए गए विद्यार्थी पोर्टफोलियों में रखना हैं। इसके लिए व्यय कम्पोजिट स्कूल ग्रान्ट एवं विद्यार्थी कोष में से किए जाने की अनुमति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

4. स्माइल 3.0 प्रश्नोत्तरी (व्हाट्सऐप आधारित क्विज)

- विद्यार्थियों को सप्ताह में साझा की गई सामग्री के आधार पर प्रत्येक शनिवार को व्हाट्सऐप आधारित क्विज प्राप्त होगा। विद्यार्थी स्कूल NIC कोड से भी भाग ले सकेंगे।
- जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, उन्हें शिक्षकों द्वारा उनके घर विजिट के समय व्हाट्सऐप आधारित क्विज को भी प्रिंट करके विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाया जाएगा। विद्यार्थी के लिए दिए गए उत्तरों को शिक्षक द्वारा रिकॉर्ड किया जाएगा।
- क्विज का लिंक प्रत्येक शनिवार को स्माइल के मैसेज के साथ आएगा, जिस पर क्लिक करने विद्यार्थी क्विज दे सकेगा। जो विद्यार्थी क्विज नहीं दे पा रहे हैं, उन विद्यार्थियों के लिए क्विज का प्रिन्ट आउट लेकर शिक्षक उन्हें सोमवार को उपलब्ध कराएगा एवं विद्यार्थियों से उसी समय उत्तर प्राप्त कर रिकॉर्ड करेगा एवं बच्चे के पोर्टफोलियो में भी लगाएगा।
- व्हाट्सऐप क्विज के आधार पर मार्किंग की जाएगी। रिजल्ट के आधार पर आकलन किया जाएगा कि विद्यार्थी कौनसे टॉपिक में कमजोर रहे।
- अगस्त के अंत तक क्विज की संख्या लगभग 10 से 12 हो जाएगी, जिनमें से बेस्ट ऑफ 7 के आधार पर विद्यार्थी का आकलन किया जाएगा, जो कि प्रथम परख होगा।
- इस संबंध में प्रत्येक 15 दिवस में सभी सीडीईओ/सीबीईओ के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा की जाएगी, जिस ब्लॉक की प्रगति न्यून रहेगी, उसके विरुद्ध कार्यवाही की जा सकेगी।
- क्विज में भाग लेने के लिए सहायता हेतु एक वीडियो भी भेजा गया है, जिसे देख कर प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

5. स्माइल 3.0 टीचर–स्टूडेंट कनेक्ट:–

- शिक्षकों को फोन कॉल अथवा घर विजिट के जरिए सप्ताह में कम से कम एक बार प्रत्येक विद्यार्थी से जुड़ना होगा।
- सभी विद्यार्थियों के फोन नंबर शाला दर्पण पर अपडेट करने होंगे।
- फोन कॉल के दौरान शिक्षकों को इन बातों पर ध्यान देना चाहिए–
  - ❖ विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की चर्चा करें।
  - ❖ विद्यार्थियों को साझा की गई सामग्री का उपयोग करके प्रतिदिन कम से कम 2 घंटे अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें।
  - ❖ विद्यार्थियों को अगले सप्ताह कॉल करने से पहले कार्यों को पूरा करने के लिए विशिष्ट लक्ष्य दें।
  - ❖ जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, उनसे शिक्षकगण घर विजिट के समय वर्कशीट देकर आए तथा उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तक का उपयोग करके वर्कशीट को हल करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करें।

● शाला दर्पण पर स्माइल मॉड्यूल के तहत स्टूडेंट रीच फार्म से ट्रेकिंग:– विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क की ट्रेकिंग के लिए, शाला दर्पण पर उपलब्ध स्माइल मॉड्यूल को शिक्षकों द्वारा पाक्षिक रूप (15 दिन में एक बार) से अद्यतन किया जाएगा।

● शिक्षादर्शन:– डीडी राजस्थान पर निर्धारित समय (दैनिक 3.15 घण्टे) के लिए स्लॉट प्राप्त कर सामग्री का प्रसारण नीचे दी गई समय सारिणी के अनुसार किया जाएगा, जिससे अधिकतम विद्यार्थियों तक पहुँच बनाई जा सके। (संलग्न कलैण्डर–परिशिष्ट 1)

समय	कक्षा
12.30 PM से 1.30 PM	कक्षा 9 और 10
1:30 PM से 2:30 PM	कक्षा 11 और 12
3:00 PM से 3:30 PM	कक्षा 1 से 5
3:30 PM से 4:15 PM	कक्षा 6 से 8
प्रत्येक शनिवार की सामग्री शिल्प, कला आदि पर आधारित होगी।	

● शिक्षावाणी:– कक्षा 1–2 के लिए 'मीना की कहानी' व कक्षा 3–12 के लिए पाठ्यक्रम आधारित कंटेंट का ऑल इंडिया रेडियो पर निर्धारित समय 11 AM से 11:55 AM (दैनिक 55 मिनट) के लिए दैनिक सामग्री का प्रसारण नीचे दी गई समय सारिणी के अनुसार किया जाएगा। (संलग्न कलैण्डर–परिशिष्ट 2)

समय	कक्षा
पहले 15 मिनट	कक्षा 1 और 2
16 मिनट से 35 मिनट	कक्षा 3 और 8
36 मिनट से 55 मिनट	कक्षा 9 से 12
हवामहल (प्रत्येक शनिवार)	

● पाठ्यपुस्तकों का समय पर वितरण:– समस्त विद्यालयों में 30 जुलाई 2021 तक पाठ्यपुस्तकों का वितरण किया जाए, ताकि विद्यार्थियों की अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने को सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिए पृथक से निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

● 'मिशन समर्थ' विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों हेतु घर पर अध्ययन हेतु कार्यक्रम–

- प्रत्येक जिला स्तर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा मिशन समर्थ हेतु एक आरपी/पीओ को नॉडल नियुक्त करें।
- प्रत्येक नोडल अपने अधीन ब्लॉक स्तर पर ब्लॉक आरपी की सहायता से ब्लॉकवार विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों का पृथक से व्हाट्सऐप ग्रुप निर्माण करेगा।
- जिन ब्लॉक में इन विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो वहाँ पीईईओ स्तर पर भी पृथक वाट्सएप ग्रुप बनाए जा सकते हैं।
- यह व्हाट्सऐप ग्रुप सामान्य स्माइल व्हाट्सऐप ग्रुप से अलग होंगे। इन पर प्रतिदिन समर्थ कार्यक्रम के ऑडियो/वीडियो मैसेज भेजे जाएँगे।
- सीडीईओ/एडीपीसी/सीबीईओ/आरपी/पीओ यह सुनिश्चित करेंगे कि अधिकाधिक विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी समर्थ व्हाट्सऐप

www.rajsevak.com

ग्रुप में जुड़े।

- प्रत्येक पीईईओ क्षेत्र में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की पहचान की जाकर उनके विद्यालय में दिनांक 31 जुलाई तक संचालित प्रवेशोत्सव प्रथम चरण में नामांकन का प्रयास किया जाए।
- ऐसे बालक-बालिका के अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें विभाग द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाई जा रही कल्याणकारी एवं प्रोत्साहन योजना से अवगत कराकर उन्हें औपचारिक रूप से विद्यालय में नामांकित कराने का प्रयास किया जाए।
- विद्यार्थियों के लिए सप्ताह में एक बार अर्थात प्रति सोमवार वर्कशीट दी जाएगी। यह गृहकार्य शिक्षकों द्वारा आगामी सप्ताह पुनः संग्रहित कर पोर्टफोलियो संधारित किया जाएगा। इन पोर्टफोलियो पर पृथक सी.डब्ल्यू.एस.एन. अंकित करें, जिससे निरीक्षण के समय इन्हें पृथक से अवलोकन किया जा सके। यह वर्कशीट स्माइल के होमवर्क मैसेज के साथ समर्थ वर्कशीट के नाम से भेजी जाएगी।
  (एक शिक्षक को 15-20 विद्यार्थियों की जिम्मेदारी दी जाए जो इन विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों एवं इनके अभिभावकों की कॉउन्सलिंग करे।)
- वर्कशीट के अलावा माह में एक बार ब्रैल एवं लॉर्ज टैक्ट्स में वर्कशीट समसा के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी, जिसे भी विद्यार्थी के पोर्टफोलियो में संधारित किया जाना है।
- प्रबोधन एवं सामग्री निर्माण संबंधी दायित्व चार्ट संलग्न किया गया है।

● e-कक्षा

- राज्य सरकार के e-कक्षा कार्यक्रम के तहत हिन्दी माध्यम की कक्षा 1 से 12 के तहत वीडियो अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।
- e-कक्षा (CWSN) के तहत साइन लैंग्वेज में भी कक्षा 1 से 12 के लिए वीडियो अध्ययन सामग्री बधिर विद्यार्थियों के लिए बनाई जा रही है।
- e-कक्षा के कक्षा 3 से 12 के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए भी अध्ययन सामग्री तैयार की जा रही है, जिसे महात्मा गाँधी विद्यालयों एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में प्रति दिवस स्माइल के माध्यम से पहुँचाया जाना है।
- संस्थाप्रधान एवं समस्त शिक्षक अनिवार्यत e-कक्षा हेतु मिशन ज्ञान ऐप अपने मोबाइल में डाउनलोड करेंगे एवं जिन विद्यार्थियों के पास मोबाइल उपलब्ध है उन अधिकाधिक विद्यार्थियों को डाउनलोड कराना सुनिश्चित करेंगे।
- जिला एवं ब्लॉक अधिकारियों से अपेक्षित है कि वे e-कक्षा हेतु मिशन ज्ञान ऐप स्वयं के मोबाइल में डाउनलोड करें तथा विद्यालय विजिट अथवा शिक्षकों के साथ वार्ता में उनके द्वारा इसके उपयोग की पुष्टि करते हुए उपयोगी सुझाव भी प्राप्त करें।
- e-कक्षा हेतु मिशन ज्ञान ऐप डाउनलोड करने के लिए गूगल प्ले स्टोर पर जाकर 'Mission Gyan' टाइप करेंगे और ऐप डाउनलोड कर लेंगे अथवा निम्नांकित QR कोड को स्कैन करके भी इस ऐप को डाउनलोड किया जा सकता है।

(उक्त QR Code स्कैनर से उपर्युक्त कोड स्कैन करने पर आप सीधे गूगूल प्ले स्टोर के मिशन ज्ञान ऐप पर पहुँच जाएँगे, जहाँ से आप इस एप को डाउन लोड कर इच्छित कक्षा/विषय के वीडियो लेसन को देख सकते है।)

● नवीन सत्र में विद्यालय संचालन एवं आओ घर से सीखे-2.0 के लिए मुख्य बिन्दु

1. समस्त PEEO उपर्युक्त निर्देशों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे, अपने अधीनस्थ विद्यालयों के स्माइल कंटेंट की पहुँच सुनिश्चित करेंगे तथा कक्षावार स्माइल व्हाट्सऐप ग्रुप में अनिवार्य रूप से जुड़ेंगे।
2. ब्लॉक स्तर पर 'आओ घर से सीखें-2.0' कार्यक्रम की सुनिश्चितता मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी करेंगे। वे स्वयं अपने स्टाफ के अन्य सदस्यों, पीईईओ और यूसीईईओ (शहरी नोडल) के माध्यम से विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री की पहुँच सुनिश्चित करेंगे।
3. उक्तानुसार सीडीईओ भी स्वयं अपने कार्यालयों के अधिकारियों को ब्लॉक आवंटित कर प्रति दिवस मॉनिटर करेंगे।
4. जिला स्तर पर व्हाट्सऐप ग्रुप पृथक से बनाया जाए जिसमें 'आओ घर से सीखे-2.0' मिशन समर्थ आदि कार्यक्रम के तहत धरातल पर होने वाले कार्यों के छायाचित्र साझा किए जाएं। इस व्हाट्सऐप ग्रुप में अधोहस्ताक्षरकर्ता को अवश्य जोड़ा जाए।
5. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, निदेशालय, समसा कार्यालय, एससीईआरटी कार्यालय में कार्यरत RCSE जिला प्रभारी अधिकारी प्रति दिवस प्रभाग वाले किसी न किसी एक विद्यालय के शिक्षकों के साथ वीडियो कॉल द्वारा जुड़कर उनसे 'आओ घर से सीखे-2.0' कार्यक्रम की प्रगति जानेंगे, मार्गदर्शन देते हुए संबल प्रदान करेंगे। उक्त कॉल का रिकॉर्ड भी रखा जावे तथा यह भी ध्यान में रखा जावे कि प्रति दिवस पृथक विद्यालय में कॉलिंग हो।
6. जिला एवं ब्लॉक कार्यालय के अधिकारियों में विद्यालयों को आवंटित किया जाकर उनके व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ा जाए तथा उन विद्यालय में विजिट कर विद्यार्थियों, अभिभावकों से ऑनलाइन/ऑफलाइन सम्पर्क स्थापित करे।

कोविड के दौरान शिक्षकों एवं संस्थाप्रधानों द्वारा किया गया कार्य अत्यंत सराहनीय रहा है। आप सभी, समाज की धरोहर एवं मार्गदर्शक है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए सुरक्षित रहें। विद्यार्थियों की अध्ययन की अनवरतता हमारा दायित्व है, अतः इसे भी नवीन चुनौतियों के अनुरूप अपना श्रेष्ठतम देते हुए उक्तानुसार विद्यार्थियों के अध्ययन की निरन्तरता हेतु अपने उपर्युक्त दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करावे।

● (सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

www.rajsevak.com

5. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/22444/विविध/2019/455 दिनांक : 18.06.2021 ● 1. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, 2. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) ● निर्देश ● विषयः 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : भारत सरकार का पत्रांक : F.N-1-7/2019-IS-5 (pt-3) KT दिनांक : 15.03.2021 एवं आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् का पत्रांक : रा.स्कू.शि.प्र./जय /गुणवत्ता/20682, जयपुर दिनांक : 23.03.2021

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्रों के क्रम में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, नई दिल्ली द्वारा जारी किए गए बैठक के कार्यवृत्त के अनुसार निम्नलिखित कार्य किए जाने हैं-

1. प्रत्येक माह के किसी भी एक शनिवार को अथवा प्रार्थना सभा के दौरान गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इस हेतु आगामी शिविरा कैलेण्डर में प्रदत्त निर्देशों की पालना की जाए।
2. एक भारत श्रेष्ठ भारत क्लब का गठन विद्यालय स्तर पर किया जाए।
3. आर.एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार आसाम राज्य की भाषा में सौ वाक्यों का निर्माण पूरा किया जाएगा। तद्नुरूप एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत इन्हें विद्यालय में बताया जाए।
4. कम बजट/शून्य बजट वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देते हुए आयोजन कराया जाए।
5. आर.एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा सांस्कृतिक साझेदारी हेतु भोजन, वन्य जीव, वनस्पति, जीव जन्तु, पौधे, संगीत, नृत्य, नाटक, सिनेमा, शिल्प कला, वस्त्र, खेल, साहित्य, पर्व, चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि से सम्बन्धित विभिन्न डिजिटल सामग्री का निर्माण किया जाएगा।
6. अधिक से अधिक विद्यार्थियों को खेल खिलौने से सम्बन्धित गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाए।
7. एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम का सोशल मीडिया के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए।

अतः स्कूल शिक्षा परिषद् एवं साक्षरता विभाग भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों की पालना हेतु निम्न कार्यों को कराया जाना सुनिश्चित किया जाए-

1. जून, 2021 तक आगामी छः माह की गतिविधियों का निर्धारण कर निम्न प्रारूप में कैलेण्डर बनाया जाकर एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के पोर्टल पर अपलोड करें-

S.No.	Name of the event	Start Date End Date	Venue	Remarks if any

नोटः-उपर्युक्त गतिविधि कैलेण्डर को परिषद् की ई-मेल आईडी (ebsbmhrd19@gmail.com) पर आवश्यक कार्यवाही हेतु भेजा जाना है।

2. प्रत्येक माह की 10 तारीख तक एक भारत श्रेष्ठ भारत सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन की माहवार रिपोर्ट स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग को प्रेषित करना। एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के दिशा निर्देश में दिए गए समयानुसार वार्षिक रिपोर्ट प्रेषित करना।
3. आर.एस.सी.ई.आर.टी. उदयपुर के सहयोग से आसाम राज्य की भाषा में 100 वाक्यों एवं सांस्कृतिक साझेदारी हेतु डिजिटल सामग्री का निर्माण करवाना।
4. एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अन्तर्गत Best Practices को एक भारत श्रेष्ठ भारत पोर्टल पर अपलोड करना।
5. आप द्वारा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के अन्तर्गत की गई समस्त गतिविधियों की सूचना निदेशालय को प्रतिमाह की 05 तारीख तक भिजवाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. बोर्ड कक्षा 10 व 12 का परीक्षा परिणाम घोषित करने के सम्बन्ध में निर्देश।

● राजस्थान सरकार, शिक्षा (ग्रुप-6) विभाग● क्रमांकः प.3 (4) शिक्षा-6/2021 जयपुर, दिनांक : 25.06.2021 ● आदेश ● विषयः बोर्ड कक्षा 10 व 12 का परीक्षा परिणाम घोषित करने के सम्बन्ध में निर्देश।

राज्य सरकार के निर्णयानुसार राज्य में बोर्ड कक्षाओं (कक्षा 10 व 12) की सत्र 2020-21 की परीक्षाएँ निरस्त की जा चुकी है। इन कक्षाओं का परिणाम घोषित करने के लिए समसंख्यक आदेश दिनांक 18.06.2021 को समिति का गठन किया गया। समिति द्वारा दिनांक 22.06.2021 को प्रस्तुत प्रतिवेदन के अनुसार परीक्षा परिणाम निम्नानुसार अंक विभाजन के आधार पर जारी करने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती हैः-

अंक निर्धारण हेतु आधार :-

कक्षा 12 के परीक्षा परिणाम हेतु अंक निर्धारणः-

गैर प्रायोगिक विषय हेतुः-

कक्षा 12 का सत्रांक - सैद्धांतिक भाग का 20 प्रतिशत भारांक

कक्षा 12 के सतत स्व मूल्यांकन- सैद्धांतिक भाग का 20 प्रतिशत भारांक (विद्यालय स्तर पर समिति द्वारा)

कक्षा 11 के कुल बने प्राप्तांक- अंतिम प्राप्तांकों के 20 प्रतिशत भारांक

कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांक- प्राप्तांकों के 40 प्रतिशत (जिन तीन विषयों में अधिकतम अंक है, का औसत)

कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा 2019 का अंकभार	विगत वर्ष कक्षा 11 हेतु प्रदत अंकों का अंकभार	कक्षा 12 का अंकभार	सत्रांक
40 प्रतिशत अंक	20 प्रतिशत	20 प्रतिशत	20 प्रतिशत
40 अंक	20 अंक	20 अंक	20 अंक

www.rajsevak.com

प्रायोगिक विषय हेतुः– अंकों का वितरण विषयानुसार होगा। प्रायोगिक विषयों में पूर्व के वर्षों की भाँति सत्रांक सैद्धांतिक परीक्षा के कुल अंकों का 20 प्रतिशत रहेगा।

कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा 2019 का अंकभार	विगत वर्ष कक्षा 11 हेतु प्रदत अंकों का अंकभार	कक्षा 12 का अंकभार	सत्रांक	प्रायोगिक
40 प्रतिशत	20 प्रतिशत	20 प्रतिशत	पूर्व के वर्षों की भांति 20 प्रतिशत अंक	प्रायोगिक परीक्षा
28/12	14/6	14/06	14/06 अंक	30/70

(नोट– उपर्युक्त उदाहरण में प्रायोगिक परीक्षा में 30 अथवा प्रायोगिक परीक्षा में 70 अंक हेतु उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।)

कक्षा 10 के परिणाम में अंक निर्धारण के लिएः–

कक्षा 10 का सत्रांक –सैद्धांति भाग का 20 प्रतिशत भारांक
कक्षा 10 के सतत स्वमूल्यांकन–सैद्धांतिक भाग का 10 प्रतिशत भारांक (विद्यालय स्तर पर समिति द्वारा)
कक्षा 09 के कुल बने प्राप्तांक–अंतिम प्राप्तांकों के 25 प्रतिशत भारांक
कक्षा 08 की बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांक–प्राप्तांकों के 45 प्रतिशत – (जिन तीन विषयों में अधिकतम अंक है का औसत)

कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षा 2019 का अंकभार	विगत वर्ष कक्षा 9 हेतु प्रदत अंकों का अंकभार	कक्षा 10 का अंकभार	सत्रांक
45 प्रतिशत अंक	25 प्रतिशत	10 प्रतिशत	पूर्व के वर्षों की भांति 20 प्रतिशत अंक
45	25	10	20

विद्यार्थियों के सतत मूल्यांकन अंक निर्धारण हेतु समितिः– वर्तमान सत्र में तमाम विपरीत परिस्थितियों के चलते विद्यार्थियों द्वारा स्माइल, स्माइल–2, आओ घर से सीखें, e–कक्षा तथा कक्षा शिक्षण के माध्यम से अपनी शिक्षा में निरन्तरता बनाए रखनी है। अतः उक्त आधारों पर विद्यार्थी की ओवर ऑल परफारमेंस के आधार पर अंक निर्धारित किए जाएँगे। उक्त अंकों के निर्धारण हेतु शाला स्तर पर अंक निर्धारण समिति का गठन किया जाएगा। यह समिति विद्यार्थियों के सतत प्रदर्शन एवं भागीदारी के आधार सत्र पर्यन्त किए अवलोकन के आधार पर आकलन कर अंक निर्धारण करेगी।

अंक निर्धारण समिति निम्नांकित प्रकार से रखी जाएगी– 1. शाला प्रधान– अध्यक्ष, 2. कक्षाध्यापक–सदस्य, 3. विषय अध्यापन करवाने वाला शिक्षक–सदस्य ।

कक्षा 12 की प्रायोगिक परीक्षाएँ– विद्यालयों हेतु ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन जैसी अनुमति गृह विभाग एवं चिकित्सा विभाग द्वारा प्राप्त होती है तद्नुसार शेष रही प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन करवाया जाएगा।

प्राइवेट विद्यार्थी एवं श्रेणी सुधार हेतु पूर्व में पंजीकृत विद्यार्थी– प्राईवेट अथवा ऐसे विद्यार्थी, जिन्होंने श्रेणी सुधार हेतु अथवा किसी एक विषय की परीक्षा हेतु आवेदन किया है। बोर्ड द्वारा जब भी परीक्षा आयोजन हो उन्हें अवसर प्रदान किया जाएगा। नियमित परीक्षा हेतु आवंदेन के अतिरिक्त अन्य सभी श्रेणियों के विद्यार्थियों को भी बोर्ड द्वारा जब परीक्षा आयोजित की जाएगी, उसमें सम्मिलित होना होगा।

अंक योजना में पूरक आए अथवा प्राप्तांक से असंतुष्ट विद्यार्थी– बोर्ड परीक्षा में पूरक रहे विद्यार्थियों को बोर्ड द्वारा जब पूरक परीक्षा का आयोजन किया जाएगा तब परीक्षा देनी होगी। इस अंक विभाजन से असंतुष्ट विद्यार्थी को बोर्ड द्वारा जब परीक्षा का आयोजन किया जाएगा तब परीक्षा दे सकेंगे। इस हेतु वैकल्पिक परीक्षा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करवाया जाएगा तथा वैकल्पिक परीक्षा के ही अंकों को ही अंतिम परिणाम के रूप में माना जाएगा।

कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार दिनांक 31.07.2021 तक जारी किया जाना है एवं कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम 45 दिवस में जारी किया जाएगा।

उक्त स्वीकृति के संदर्भ में प्रायोगिक परीक्षा के आयोजन हेतु गृह विभाग की स्वीकृति उपरान्त पृथक से आदेश जारी किए जाएंगे।

● **(अपर्णा अरोरा)** प्रमुख शासन सचिव

7. एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत असमिया भाषा के 5 वाक्य/शब्द विद्यार्थियों को ONLINE भेजने बाबत।

● कार्यालय–निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/माध्य/SIQE/60834/भाषा संगम/ 2017–18/97 दिनांक : 18–06–2021 ● समस्त प्रधानाचार्य/ प्रधानाध्यापक, राउमावि/राबाउमावि/रामावि/राबामावि/राउप्रावि/ राबाउप्रावि/राप्रावि ● विषय : एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत असमिया भाषा के 5 वाक्य/शब्द विद्यार्थियों को ONLINE भेजने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निर्देशित किया जाता है कि भाषा संगम (एक भारत श्रेष्ठ भारत) के अन्तर्गत विद्यार्थियों को हमारे देश की विभिन्न भाषाओं की जानकारी दी जानी है, ताकि उनमें भाषा समृद्धि के साथ–साथ सभी भाषाओं का सम्मान व राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित हो सके। अतः युग्म राज्य के अन्तर्गत राजस्थान के विद्यार्थियों को असमिया भाषा से परिचय एवं अभ्यास करवाया जाना है इसलिये स्माईल–2 कार्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा 1 से 12 के विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री हेतु भेजे जाने वाले Online link के साथ असमिया भाषा के संलग्न सूची के अनुसार पाँच वाक्य/शब्द भेजना सुनिश्चित करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● उपनिदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

Some Common words in Assamese and Rajasthani language

असमिया एक भारतीय–आर्य भाषा है जो भारतीय राज्यों असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में लगभग 20 मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती है। यह बांग्लादेश और भूटान में भी बोली जाती है। असमिया का बंगाली और उड़िया से गहरा संबंध है।

www.rajsevak.com

S.No.	Hindi	English	Assamese
1.	आज	Today	Aji (अजी)
2.	आने वाला कल	Tomorrow	Ahakali (अहकाली)
3.	बीता हुआ कल	Yesterday	Jowakali (जोबाकाली)
4.	दिन	Day	Din (दिन)
5.	चाय	Tea	Cha (चा)
6.	ब्रेड या रोटी	Bread	Ruti (रूति)
7.	जाओ	Go	Jauk (जाउक)
8.	कार	Car	Gari (गारी)
9.	सीधा जाइये	Go Straight	Cidha Jauk (सिधा जाउक)
10.	मोड़	Turn	Ghuriba (घुरिबा)
11.	आप	You	Tumi (तुमि)
12.	क्या	What	Ki (की)
13.	क्यों	Why	Kiyo (कियो)
14.	बायीं तरफ	Left Side	Bao Phale (बाओ फले)
15.	दायी तरफ	Right Side	Kho Phale (खो फले)
16.	हाँ	Yes	Hoi (होई)
17.	नहीं	No	Nohoi (नोहाई)
18.	मैं	I/Me	Moy/Muk (मोय/मूक)
19.	सुप्रभात	Good Morning	Nomaskhar (नोमसखार)
20.	शुभ संध्या	Good evening	Nomaskhar (नोमसखार)
21.	धन्यवाद	Thank you	Dhanyabad (धन्यबाद)
22.	अलविदा	Goodbye	Ahu (अहु)
23.	मैं कुशल हूँ	I am fine	Mor Bhal (मार भाल)
24.	मैं समझ सकता हूँ	I understand	Moi Bujisu मोई बुजिमु
25.	मैं समझ नहीं सक्ता	I do not understand	Moi Aito Buja Nai मोई आईतो बुजा नाइ
26.	कृपया क्षमा कीजिये	Excuse me	Khayama Karibo खायमा कोरीबो
27.	कोई बात नहीं	Don't mention it	Aito Uilakh Nakariba उल्लख नकरीबा
28.	आपका नाम क्या है?	What is your name?	Aponar Nam Ki? अपनार नाम की?
29.	आप कैसे हैं?	How do you do?	Aponar Bhalna अपनार भालने
30.	आप क्या कर रहे हैं?	What are u doing?	Tumi ke kori asa तुमि के कोरी असा
31.	मैं अच्छा हूँ	I am good	Muir khaubur boul मुइक खाउबूर बाउल
32.	क्या मैं भीतर आ सकता हूँ	May I come in?	Ami ki syara asale pari एसी की सबारा असते पारी
33.	कृपया बैठिये	Please Sit	anugrah kri bahak अनुग्रह करी बहक
34.	आप कैसे है?	How are you?	Apuna ke khaubur? अपना के खाउबुर
35.	मैं जरूर आऊंगा	I Will definitely come	mai nischit aahim मय निश्चित अहिम
36.	कृपया क्षमा कीजिये	Please forgive me	moka ksama karaka मोका क्षमा करका
37.	कृपया प्रतीक्षा कीजिये	Please wait	alapa rabacona अलापा रबकोना
38.	कृपया शांत रहे	Please keep quiet	anugraha karai mane thaka अनुग्रह कराइ मने थाका
39.	मैं असमी भाषा पढ़ रहा हूँ	I am studying Assamese	Moi Akhomea porhe asa मोई अखोमा पोरहे असा
40.	मैं अममी के कुछ शब्द जानता हूँ।	I know a few Assamese words.	Moi katomon akhomea hobdah zano. अमोई कटोमो अखोमा हॉबडेह जानो

Numbers Talk

41.	एक	One	Ek एक
42.	दो	Two	Doi दोई
43.	तीन	Three	Tini तीनि
44.	चार	Four	Chari चारि
45.	पाँच	Five	Pach पाच
46.	छः	Six	Choy चोय
47.	सात	Seven	Khat खत
48.	आठ	Eight	Ath अथ
49.	नौ	Nine	No नो
50.	दस	Ten	Dos दोस

8. कोरोना पॉजिटिव होने के दौरान शिक्षा विभागीय कार्मिक की मृत्यु होने पर 1.50 लाख रुपये की अतिरिक्त सहायता राशि हितकारी निधि से प्रदान करने बाबत।

www.rajsevak.com

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/हिनि/28232/आक्षेप/ 2021-22 दिनांक : 28.06.2021 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा), समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाइट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ ● विषय : कोरोना पॉजिटिव होने के दौरान शिक्षा विभागीय कार्मिक की मृत्यु होने पर 1.50 लाख रुपये की अतिरिक्त सहायता राशि हितकारी निधि से प्रदान करने बाबत।

उपर्युक्त विषय में निर्देशानुसार लेख है कि हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से शिक्षा विभागीय कार्मिक की मृत्युपरान्त उनके आश्रितों को 1.50 लाख रुपये सहायता राशि दिए जाने का प्रावधान है।

दिनांक 26.06.2021 को निदेशालय में माननीय शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में निर्णय लिया गया कि जिन शिक्षा विभागीय कार्मिकों की मृत्यु कोरोना पॉजिटिव होने के दौरान हुई है, उन्हें हितकारी निधि से 1.50 लाख की अतिरिक्त राशि सहायता राशि के बतौर प्रदान की जाए अर्थात शिक्षा विभागीय कार्मिक जिनकी कोरोना पॉजिटिव होने के कारण मृत्यु हुई है, परन्तु वह ड्यूटी पर नहीं थे एवं 50 लाख रुपये के अनुदान के पात्र नहीं है, उनके आश्रित को (1.50 लाख + 1.50 लाख) 3.00 लाख रुपये सहायता राशि प्रदान की जाए। उपर्युक्त निर्णय के अनुसार इस पत्र के साथ एक आवेदन पत्र जारी किया जा रहा है, इसके सभी बिन्दुओं की पूर्ति कराई जाकर सक्षम के मार्फत आवेदन भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

उक्त योजना, योजनान्तर्गत सहायता हेतु वे कार्मिक जिनकी दिनांक 01.04.2021 को या उसके पश्चातवर्ती दिनांक को मृत्यु हुई हो, पात्र होंगे।

इस योजना की आप अपने अधीनस्थ समस्त को जानकारी प्रदान करे। अपूर्ण आवेदन पत्र के कारण सहायता राशि वितरित नहीं होती है, तो समस्त जिम्मेदारी कार्यालयाध्यक्ष/नियंत्रण अधिकारी की होगी।

● संलग्न : प्रपत्र

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.**, निदेशक एवं अध्यक्ष, हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि (राजस्थान शिक्षा विभाग, बीकानेर) से कर्मचारी के कोरोना के कारण निधन पर वित्तीय सहायता प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र

1. प्रार्थी/प्रार्थिनी (कर्मचारी पर आश्रित/आश्रिता) का नाम एवं सम्बन्ध.....
2. स्थाई पता एवं मोबाइल नम्बर.....
3. मृतक कर्मचारी का नाम.....
4. मृतक कर्मचारी का पद एवं पदस्थापन स्थान.....
5. कर्मचारी की मृत्यु तिथि (मूल मृत्यु प्रमाण पत्र संलग्न करे).....
6. क्या मृतक कर्मचारी की मृत्यु राज्य सेवा में रहते हुए हुई (सेवा समाप्ति आदेश की प्रति संलग्न करें।)
7. कोरोना पॉजिटिव होने के प्रमाण की सत्य प्रतिलिपि.....
8. कोरोना पाजिटिव होने एवं कोरोना से मृत्यु होने का प्रमाण-पत्र (मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा जारी).....
9. दिनांक 01.04.2021 के बाद निधन होने पर पूर्व में हितकारी निधि से सहायता राशि प्राप्त हुई या नहीं, विवरण प्रस्तुत करें.....
10. अंशदान कटौती वर्ष 2018-19, 2019-20, 2020-21 से ई.सी.एस. एवं शेड्यूल की प्रति संलग्न करें.....
11. परिवार के सदस्यों का विवरण (निम्न प्रपत्र में प्रस्तुत करें).....

क्र.सं.	नाम	आयु	मृतक से सम्बन्ध	विवाहित/ अविवाहित	विशेष विवरण

12. प्रार्थी/प्रार्थिनी का बैंक खाता विवरण
    बैंक खाता (पास बुक प्रथम पृष्ठ की प्रति या निरस्त चैक संलग्न करें).....
13. मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता हो तो हितकारी-निधि शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा यह मुझे स्वीकार्य होगी। कोरोना ड्यूटी पर पॉजिटिव होने के पश्चात मृत्यु होने पर राज्यादेश के अनुसरण में राशि 50 लाख रुपये की अनुग्रह राशि हेतु मेरे द्वारा आवेदन नहीं किया गया है।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

(मोहर) आश्रित (प्रार्थी/प्रार्थिनी के हस्ताक्षर)

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)/मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा अग्रेषित करवाया जाना है।

प्रमाणित किया जाता है कि प्रार्थी/प्रार्थिनी द्वारा प्रस्तुत विवरण सही है। इनकी मृत्यु कोरोना के दौरान हुई है। अतः प्रार्थना पत्र अध्यक्ष, हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर को सहायता हेतु अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

स्थान :

दिनांक :

हस्ताक्षर जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)

(मोहर)

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी : जुलाई माह प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.07.2021 से 31.07.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

			प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
क्र.स	दिनांक	वार	मीना की कहानियां	डाइट/ यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/ सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्य् पुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री
1	01.07.21	गुरूवार	पूरी बात	यूनिसेफ	4	पर्यावरण अध्ययन	19	स्वच्छ घर स्वच्छ गांव	उदयपुर	डॉ0देवेन्द्र सिंह राठौड	भावना मेड़तवाल	10	सामा0 विज्ञान लोकतांत्रिक राजनीति–II	2	संघवाद	उदयपुर	ओम प्रकाश भट्ट	अनुराग मेड़तवाल
2	02.07.21	शुक्रवार	पॉकेटमार	यूनिसेफ	7	गणित	1	पूर्णांक	जयपुर	विश्वेन्द्र प्रताप ब्रह्म भट्ट	महेश बाबू शर्मा	9	सा0विज्ञान– भारत और समकालीन विश्व	1	फ्रांसीसी क्रांति	जयपुर	बसंत कुमार कानूनगो	विजयश्री कंवर
3	03.07.21	शनिवार	मीना और रस्साकस्सी	यूनिसेफ	No Bag Day							DIET JODHPUR						
4	05.07.21	सोमवार	सबसे बढ़िया निबंध	यूनिसेफ	3	पर्यावरण अपना परिवेश	1	रिश्ते नाते	बीकानेर	जितेन्द्र सिंह राठौड़	मोनिका गौड़	11	इतिहास– विश्व इतिहास के मुख्य विषय	1	समय की शुरूआत	बीकानेर	अनिल कुमार स्वामी	डॉ0 ओमप्रकाश विश्नोई
5	06.07.21	मंगलवार	तोहफा	यूनिसेफ	4	हिन्दी	3	झीलों की नगरी	जयपुर	सीमा खत्री	छुट्टन लाल मीणा	9	हिन्दी क्षितिज	3	श्यामाचरण दुबे– उपभोक्तावाद की संस्कृति	जयपुर	संजय जैन	महेश कुमार शर्मा
6	07.07.21	बुधवार	कुंभकरण	यूनिसेफ	8	सा. विज्ञान	1	संसाधन	जोधपुर	वाज़िद हसन	मजाहिर	12	भौतिक विज्ञान	1	वैद्युत आवेश	जोधपुर	डॉ0महेश चंद्र	संयुक्ता गुप्ता
7	08.07.21	गुरूवार	टीपू बना मॉनीटर	यूनिसेफ	7	हिन्दी बसंत 2	15	नीलकंठ	उदयपुर	डॉ. नीना यादव	दीपिका त्रिवेदी	11	भूगोल	8	वायुमंडल का संघटन तथा संरचना	उदयपुर	नीरज सिंह खूंटेला	नरेन्द्र सिंह झाला
8	09.07.21	शुक्रवार	सुनहरी को बचाओ	यूनिसेफ	6	विज्ञान	1	भोजन– यह कहाँ से आता है	कोटा	नरेन्द्र पहाड़िया	मंजेश चौरसिया	12	हिन्दी साहित्य अंतरा	1	देवसेना व कार्नेलिया का गीत	कोटा	आकांक्षा शर्मा	डॉ. अतुल चतुर्वेदी
9	10.07.21	शनिवार	काकी की कहानी	यूनिसेफ	7	No Bag Day						DIET BIKANER						
10	12.07.21	सोमवार	लड़कियां कहां जाए	यूनिसेफ	7	विज्ञान	1	पादपों में पोषण	कोटा	मदन मोहन मेड़तवाल	अल्का शर्मा	12	अंग्रजी Flamingo	1	The last lesson	कोटा	संकेत बंसल	मंजूषा यादव
11	13.07.21	मंगलवार	बीतानी फर्स्ट आयी	यूनिसेफ	7	सा0विज्ञान– हमारे अतीत	2	नए राजा और नए राज्य	बीकानेर	नत्थूराम हटीला	रेणुबाला चौहान	9	संस्कृत शेमुषी	2	स्वर्णः काक	बीकानेर	वीरेन्द्र मोहन शर्मा	मुक्ता तेलंग
12	14.07.21	बुधवार	चॉक की लड़ाई	यूनिसेफ	6	हिन्दी–वसंत I	3	बचपन	जयपुर	मिथिलेश सविता	छुट्टन लाल मीणा	11	हिन्दी साहित्य– अंतरा भाग–I	1	ईदगाह	जयपुर	राखीरानी जैन	महेश कुमार शर्मा

www.rajsevak.com

13	15.07.21	गुरूवार	नये दोस्ता	यूनिसेफ	6	संस्कृत	4	विद्यालयः	जोधपुर	महेश कुमार दवे	मजाहिर सुल्तान ज़ई	10	विज्ञान	1	रासायनिक अभिक्रियाऐं एवं समीकरण– भाग 1	जोधपुर	अनिल कुमार धींगरा	डॉ0श्याम सुन्दर सोलंकी
14	16.07.21	शुक्रवार	अखबार से क्या सीखा	यूनिसेफ	8	हिन्दी–वसंत III	2	लाख की चूड़ियाँ	उदयपुर	किशन लाल गुर्जर	डॉ0नीना यादव	12	हिन्दी अनिवार्य आरोह	13	काले मेघा पानी दे	उदयपुर	शिवशंकर खण्डेलवाल	अक्षय मेहता
15	17.07.21	शनिवार	दोस्ती का रहस्य	यूनिसेफ	No Bag Day								DIET KOTA					
16	19.07.21	सोमवार	दोस्ती का रहस्य	यूनिसेफ	8	संस्कृत रूचिरा	1	सुभाषितानी	कोटा	संज्ञा शर्मा	नेहा पालीवाल	12	अंग्रेजी Flamingo	2	Lost Spring	कोटा	नीरज महाराजा	मंजूषा यादव
17	20.07.21	मंगलवार	सबसे बड़ा इंसान	यूनिसेफ	7	हिन्दी वसन्त– II	2	दादी मां	उदयपुर	प्रवीण श्रीमाली	अंजना जैन	10	सा0विज्ञान–भूगोल	1	संसाधन और विकास	उदयपुर	सीता मोंगिया	अनुराग मेड़तवाल
18	22.07.21	गुरूवार	गुल्लक भरो	यूनिसेफ	3	पर्यावरण अध्ययन	2	मित्रता	बीकानेर	माया पारीक	मोनिका गौड़	9	संस्कृत शेमुषी	5	सूक्ति मौक्तिकम्	बीकानेर	कैलाश कुमार व्यास	मुक्ता तेलंग
19	23.07.21	शुक्रवार	कौन बनेगा स्टार	यूनिसेफ	8	संस्कृत रूचिरा	2	विलस्ये वाणी न कदापि मे श्रुता	कोटा	नीलम शर्मा	नेहा पालीवाल	10	विज्ञान	2	कार्बन एवं उसके यौगिक– भाग1	कोटा	ज्योति शर्मा	डॉ0 गिरिराज किशोरी दाधीच
20	24.07.21	शनिवार	राजकुमार की कहानी	यूनिसेफ	No Bag Day								DIET JAIPUR					
21	26.07.21	सोमवार	राजकुमार की कहानी	यूनिसेफ	5	पर्यावरण अध्ययन	1	रिश्तों की समझ	उदयपुर	भूमिका चौबीसा	डॉ. सत्यनारायण सुथार	10	सामाजिक अध्ययन इतिहास 2	1	यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय	उदयपुर	ललिता चौधरी	अनुराग मेड़तवाल
22	27.07.21	मंगलवार	भोला भाला भालू	यूनिसेफ	8	सामाजिक विज्ञान	2	भूमि, मृदा,जल, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव संसाधन	जोधपुर	नीतु सिंह	डॉ. श्याम सुन्दर सोलंकी	11	अर्थशास्त्र	1	स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था	जोधपुर	मंजू वर्मा	संयुक्ता गुप्ता
23	28.07.21	बुधवार	दादी ने कहा	यूनिसेफ	7	विज्ञान	2	प्राणियों में पोषण	कोटा	निर्मल बियानी	अल्का शर्मा	12	हिन्दी साहित्य अंतरा	2	गीत गाने दो मुझे व सरोज स्मृति	कोटा	नन्दकिशोर महावर	डॉ. अतुल चतुर्वेदी
24	29.07.21	गुरूवार	जूता बड़ा काम का	यूनिसेफ	6	हिन्दी बसंत 1	11	जो देखकर भी नहीं देखते	जयपुर	सुनीता शर्मा	महेश बाबू शर्मा	11	राजनीति विज्ञान	2	भारतीय संविधान में अधिकार	जयपुर	जन्सी मीणा	संतोष यादव
25	30.07.21	शुक्रवार	मधुमक्खी का छत्ता	यूनिसेफ	7	संस्कृत रूचिराः	2	दुर्बुद्धि विनश्यति	बीकानेर	शिवांगी तिवाड़ी	रीता आहुजा	9	विज्ञान	3	परमाणु एवं अणु	बीकानेर	संजीव कुमार यादव	नीलम पारीक
26	31.07.21	शनिवार	ट्रॉफी का राज	यूनिसेफ	No Bag Day								DIET UDAIPUR					

www.rajsevak.com

विभागीय नवाचार

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) अब होगा ऑनलाइन

❒ मनीष गहलोत

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने शिक्षा विभाग में कार्यरत कार्मिकों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन को शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन करने के मॉडयूल का उद्घाटन दिनांक 26.06.2021 को माध्यमिक शिक्षा कार्यालय में आयोजित बैठक में किया। निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री सौरभ स्वामी ने इस मॉड्यूल की महता बताई।

कार्यरत कार्मिकों की संख्या की दृष्टि से राजस्थान राज्य का सबसे बड़ा सरकारी महकमा है। राज्य सरकार के कार्मिक विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक विभाग में प्रतिवर्ष कार्मिक के वर्षपर्यंत किए गए कार्यों, निर्वहन किए गए दायित्वों एवं अपने से उच्च अधिकारियों की नजर में उसकी कर्त्तव्यपरायणता, ईमानदारी, कार्य के प्रति लगन इत्यादि गुणों को प्रदर्शित करने के साथ-साथ कमजोरियों/कमियों में सुधार लाने हेतु वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) संधारित किया जाता है। इसी की अनुपालना में शिक्षा विभाग में लम्बे समय से ऑफलाइन APAR संधारित की जाती रही है। विभाग के ध्यान में आया कि क्यों न प्रतिवर्ष संधारित किए जाने वाले वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) को ऑनलाइन कर न केवल डिजिटल युग के साथ कदम से कदम मिलाया जावे बल्कि कार्मिकों एवं कार्यालयों के समय को बचाते हुए रिकार्ड संधारण को भी व्यवस्थित किया जा सके। पूर्व के वर्षों में ऑफलाइन वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) संधारण में कार्मिकों की बड़ी संख्या एवं कई चैनलों के रहते काफी समय खर्च होता था साथ ही कार्यालय स्तर पर प्रत्येक कार्मिक का अलग-अलग रिकार्ड संधारण करना एवं APAR की वर्तमान स्थिति को खोजना भी बहुत मुश्किल प्रतीत होता था। अधिकारियों के वर्षपर्यन्त चलने वाले स्थानान्तरण, पदोन्नति, सेवानिवृत्ति अन्य कारणों के चलते वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में टिप्पणियाँ अपूर्ण रह जाती थी एवं कार्य की अधिकता के चलते उसे तुरंत दुरस्त करवाना भी दुष्कर कार्य होता था। इस कारण से कई कार्यो में अनावश्यक विलम्ब होता था। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) की कार्मिकों की पदोन्नति, एसीपी, राज्य/राष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं विशेष परिलाभों के मामलों में महती आवश्यकता रहती है। ऑफलाइन संधारण के चलते ऐसे मामलों में नियोक्ता कार्यालय द्वारा चाहने पर तुरंत-फुरंत में उपलब्ध करवाना कार्मिक/नियंत्रण कार्यालय के लिए कठिन कार्य था। इन सभी कठिनाइयों एवं दुविधाओं को मध्यनजर रखते हुए शिक्षा विभाग ने प्रक्रिया को समयोपयोगी, कम्प्युटर युगीन एवं कागज की बचत कर इको फ्रेण्डली बनाने हेतु नई पहल के रूप में वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) को ऑनलाइन करने का जिम्मा लिया। इससे न केवल प्रक्रिया सरल होगी बल्कि समय की बचत, रिकार्ड का भी व्यवस्थित संधारण के साथ अनावश्यक पत्राचार से भी बचा जा सकेगा। शिक्षा विभाग का यह कदम मील का पत्थर साबित होने के साथ अन्य विभागों के लिए भी अनुकरणीय होगा।

वर्ष 2020-21 से ही समस्त राजपत्रित अधिकारियों यथा व्याख्याता, प्रधानाध्यापक (मा. वि.) एवं प्रधानाचार्य की APAR ऑनलाइन माध्यम से ही भरी जानी है। अतिशीघ्र इसे वरिष्ठ अध्यापक एवं अध्यापक ग्रेड तृतीय स्तर पर भी लागू किया जाएगा।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) क्या है? : वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो एक लोकसेवक के विभागीय भविष्य के विकास के लिए बुनियादी और महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। प्रत्येक लोकसेवक का उसकी राजकीय सेवा में प्रदर्शन का मूल्यांकन उसके वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के माध्यम से प्रतिवर्ष किया जाता है। लोकसेवक के कार्य, आचरण, चरित्र और क्षमताओं को वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में दर्ज किया जाता है। यह लोकसेवक, प्रतिवेदक अधिकारी, समीक्षक अधिकारी और स्वीकार करने वाले अधिकारी के लिए अत्यन्त जिम्मेदारी पूर्ण कार्य है।

APAR प्रणाली का एक अन्य उद्देश्य कर्मचारियों के गुणों, लक्षणों, शक्तियों और कमजोरियों के बारे में उच्चतर अधिकारियों को जानकारी प्रदान करना है ताकि उन्हें उन पदों पर रखा जा सके जहाँ उनकी सेवाओं का सबसे अधिक उपयोग किया जा सके। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन को केवल आलोचनात्मक रूप में उपयोग करने के बजाय कॅरियर योजना और प्रशिक्षण के एक उपकरण के रूप में समझना चाहिए। प्रतिवेदक अधिकारी को इस समझ के साथ प्रतिवेदन तैयार करना चाहिए कि संबंधित लोकसेवक का विकास ही इसका मुख्य उद्देश्य है, जिससे वह अपनी स्वाभाविक क्षमता को समझ सके। यह एक छिद्रान्वेषण प्रक्रिया न होकर एक विकासात्मक उपकरण है। प्रतिवेदक अधिकारी को फॉर्म में आवश्यक रूप से और बुद्धिमानी से सूचित व्यक्ति के प्रदर्शन और क्षमताओं का आंकलन करना चाहिए।

कैसे होगा ऑनलाइन कार्य:- शिक्षा विभाग में गत कुछ वर्षों से शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से विभिन्न कार्य ऑनलाइन किए जा रहे हैं। साथ ही प्रत्येक कार्मिक की शाला दर्पण पोर्टल पर व्यक्तिगत लॉगिन भी है। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन कार्मिक द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर व्यक्तिगत लॉगिन से भरा जाएगा। APAR भरते समय कार्मिक को स्वयं का नाम, पदनाम, विषय, पदस्थापन स्थान एवं जन्मतिथि से संबधित कॉलम शाला दर्पण पर संधारित रिकार्ड अनुसार स्वत: भरा हुआ मिलेगा। कार्मिक को एपीएआर में निर्धारित कॉलम अनुसार आलोच्य अवधि में किए गए कार्यों/लक्ष्य प्राप्ति/परीक्षा परिणाम/सम्पत्ति इत्यादि का विवरण अंकित करना है।

कार्मिक स्वयं वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन देख सकेगा : कार्मिक द्वारा भरा गया वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन पूर्व की भांति ही क्रमश: प्रतिवेदक, समीक्षक एवं स्वीकारकर्ता अधिकारी द्वारा ऑनलाइन टिप्पणी अंकित करने पर पूर्ण होगा। सम्पूर्ण प्रक्रिया पूर्ण होने के उपरांत APAR 15 दिन तक कार्मिक की स्वयं की शाला दर्पण लॉगिन पर अवलोकन हेतु प्रदर्शित होगा जिसे वह आवश्यकता अनुसार डाउनलोड भी कर सकेगा। 15 दिन की अवधि उपरांत APAR प्रदर्शन स्वत: ही कार्मिक लॉगिन से हट जाएगा।

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9772461621

www.rajsevak.com

गुरु महिमा

मानव जीवन में गुरु का महत्त्व

❒ अभय कुमार जैन

शोषंक पाप पंकस्य दीपनं ज्ञानतेजसाम्।
गुरुपादोदकं सम्यक संसारार्णवतराकम्।।

–गुरुगीता

गुरु पाप से दूर करने वाला और ज्ञान के तेज के दीपक को प्रकाशित करने वाला है इससे मनुष्य संसार सागर को पार कर जाता है।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।

–श्रीरामचरितमानस

गुरु के चरण–नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है।

बिन गुरु तत्तु न पाइये,
अलखू बसै सब माहिं।
सतगुरु मिलै त जांणिए,
जा सबदु बसै मन माहिं।।

–श्री गुरुनानक वाणी

गुरु कृपा बिन परमतत्व की प्राप्ति संभव नहीं। उस तत्व को सबद कहा जाता है जो सबके भीतर गूँज रहा है, पर उसकी कुंजी केवल सद्गुरु के हाथ में है।

कुछ वर्ष पूर्व दीक्षा लेने से पूर्व सी.ए. अभय जी भण्डारी ने गुरु पूर्णिमा के बारे में जो कहा– 'गुरु अर्थात जो गुणों में रुचि बताए, जो दोष से हमको छुड़ाए, जो दुर्गुणों से हमको बचाए, जो व्यसनों से दूर रखे, सदाचार का पालन करवाए, शील सम्पन्नता बढ़ाए, विषयों से विरक्ति दिलाए, समभाव में रमण कराए, वैसे गुरु को हम सद्गुरु कह सकते हैं जो हमारे हितैषी होते हैं, जिनकी सन्निधि से हमारे विचारों में शुभता, धवलता, उज्ज्वलता आती है वैमनस्यता, संकीर्णता के काले बादल हट जाते हैं, परस्पर व्यवहार में मधुरता मैत्री भावना बढ़ती है, न तन में त्याग, विनय, सेवा का अचार प्रकट होता है।'

अंधकार में भटकते हुए, ठोकरे खाते हुए मनुष्य के लिए दीपक का जितना महत्त्व है उससे भी बढ़कर महत्त्व है, अज्ञान अंधकार में भटकते

हुए जिज्ञासु मानव के लिए गुरु का। जिज्ञासु और विनयशील मानव को गुरु ध्येय की पहचान कराता है। गुरु का पद बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना गया है, यह पद जितना बड़ा है उतनी ही इस पद की जिम्मेदारी बड़ी है; गुरु पद की महिमा का बखान करते हुए एक कवि ने कहा है–

अज्ञानतिमिरान्ध्यानां, ज्ञानां, जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलिंत येन, तस्मे श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात अज्ञान रूपी अंधेरे के कारण अंधे बने हुए लोगों को आँखे जिन्होंने ज्ञान रूपी अजन आँजने की सलाई डालकर खोल दी उन श्री गुरु को मेरा नमस्कार हो।

कविवर अजहर हाशमी ने कुछ वर्षों पूर्व एक व्याख्यान माला में कहा था–**'गुरु है तो ज्ञान है, गुरु है तो ध्यान है, गुरु है तो मान है, गुरु है तो यश है, गुरु है तो कीर्ति है, गुरु है तो साहित्य है, गुरु है तो चिंतन है, गुरु है तो संस्कार है, गुरु है तो संस्कृति है, गुरु है तो विकृतियों का विनाश है, गुरु है तो संस्कृति का सृजन है, गुरु है तो प्रेम का प्रकाश फैलता है, गुरु है तो ध्यान की ज्योति जलती है, गुरु है तो गरिमा का गुलाब खिलता है, गुरु है तो महिमा के मोगरे महकते हैं।** जिस तरह से नदी के जल को लहरों के बिना नहीं जान सकते है, जिस तरह से हम दृष्टि के बिना वस्तुओं को नहीं जान सकते, जिस प्रकार से ध्रुव तारे को आकाश के बिना नहीं समझ सकते, उसी प्रकार से हम मानवीय जीवन की उन्नति को गुरु के बना नहीं समझ सकते है।''

गुरु जीवन का महान कलाकार होता है जैसे भोड़े, भद्दे, टेढ़े–मेढ़े और खुरदरे पत्थर को लेकर मूर्तिकार अपनी छैनी एवं औजारों से काट छीलकर सुन्दर मूर्ति बना देता है जो भविष्य में पूजनीय बन जाती है वैसे ही गुरु असंस्कृत, अन्धड़, अप्रशिक्षित शिष्य को अपनी काया, वाणी और मन से घड़कर सुन्दर, स्वस्थ, सुसंस्कृत व प्रशिक्षित जीवन का रूप दे देता है, इसलिए त्रिलोक काव्य संग्रह में गुरु को शिष्य के जीवन का सुधारक निर्माणकर्ता एवं परम उपकारी बताया गया है।

गुरु के उत्तरदायित्व मूलक लक्षण बताते हुए कहा गया है, गृणाति धर्म शिष्यं प्रतीति गुरु अर्थात जो शिष्य को उसका धर्म बताता है, सिखाता है, वह गुरु है, कुमार संभव में भी गुरु का उत्तरदायित्व मूलक अर्थ बताया गया है।

सत्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थ देश को गुरुच्यते जो एकांत हित वृद्धि से प्रेरित होकर जिज्ञासु जीवों को सभी शास्त्रों का सच्चा अर्थ समझता है, वही गुरु कहलाता है। वास्तव में गुरु–शिष्य का जन्मदाता नहीं परन्तु माता–पिता से भी बढ़कर निर्माणकर्ता है, वह जीवन जीना सिखाता है यही कारण है कि माता–पिता की अपेक्षा गुरु के प्रति शिष्य विशेष ऋणी होता है।

गुरु महिमा के सम्बन्ध में धीरज व्यास ने बहुत सुंदर पंक्तियां लिखी हैं:–

हमारे लिए है सब कुछ गुरु,
उन्हीं से हुआ हमारा जीवन शुरू।
गुरु हमारे हैं महान,
करते हैं वो विद्यादान।।
गुरु बाँटते हैं ज्ञान,
ताकि सभी हो विद्वान।
गुरु में है ज्ञान अपार,
जिससे खुले उन्नति के द्वार।।
गुरु बिन ज्ञान नहीं,
ज्ञान बिन जीवन नहीं।

www.rajsevak.com

गुरु से है हमारा मान,
उनसे होता है उत्थान।।

एक लेखक ने बताया गुरु क्या है? गुरु हर सवाल का जवाब है। गुरु हर मुश्किल की युक्ति है। गुरु ज्ञान का भण्डार है। गुरु मार्गदर्शक है। गुरु एक अहसास है। गुरु प्यार है। गुरु ज्ञान की वाणी है। गुरु हमारे जीवन का चमत्कार है। गुरु मित्र है। गुरु भगवान रूप है। गुरु अध्यात्म की परिभाषा है।

एक शिष्य ने बहुत प्यारी बात कही है:- गुरु जी आप हमारी शंका दूर करते हो तब आप शंकर लगते हो। जब मोह दूर करते है तो मोहन लगते हो। जब विष दूर करते हो तो विष्णु लगते हो। जब भ्रम दूर करते हो तो ब्रह्मा लगते हो। जब दुर्गति दूर करते हो तो दुर्गा लगते हो। जब गरुर दूर करते हो तो गुरु जी लगते हो इसलिए कहा है-

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वर।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मे श्री गुरुवे नमः।।

गुरु ही सांस है, गुरु ही आस है, गुरु ही प्यास है, गुरु ही ज्ञान है, गुरु ही संसार है, गुरु ही प्यार है। गुरु ही गीत है, गुरु ही संगीत है, गुरु ही लहर है, गुरु ही बहार है, गुरु ही अन्दर है, गुरु ही प्राण है, गुरु ही ज्ञान है, गुरु ही वंदन है, गुरु ही चंदन है, गुरु ही अभिनन्दन है, गुरु ही गरिमा है, गुरु ही महिमा है, गुरु ही चेतना है, गुरु ही भावना है, गुरु ही संबल है, गुरु ही अवलंबन है, गुरु ही धर्म है, गुरु ही कर्म है, गुरु ही मर्म है, गुरु ही नर्म है, गुरु ही समाधान है, गुरु ही आराधना है, गुरु ही उपासना है, गुरु आदि है, गुरु अन्त है, गुरु अनंत है, गुरु विलय है, गुरु प्रलय है, गुरु ही आधि है, गुरु ही व्याधि है, गुरु ही समाधि है, गुरु ही जप है, गुरु ही तप है, गुरु ही यज्ञ है, गुरु ही हवन है, गुरु ही समिधा है, गुरु ही आरती है, गुरु ही भजन है, गुरु ही भोजन है, गुरु ही साज है। गुरु ही प्यारा है, गुरु ही न्यारा है, गुरु ही दुलारा है, गुरु ही मनन है, गुरु ही चिंतन है।

अंत में हम कबीर दास के गुरु के महत्त्व को दर्शाने वाले निम्न दोहों से इस आलेख को पूर्ण करते है।

कबीरा ते नर अध है गुरु को कहते और
हरि रूठे गुरु ठौर है गुरु रुठे नही ठौर।।
यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिए जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।।

तृप्ति बंदा रोड, भवानीमण्डी (राज.)
मो: 9829296962

स्वास्थ्य शिक्षा

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का महत्त्व

❒ शिव प्रकाश शर्मा

अब बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति सजग होने का समय आ गया। टेक्नोलॉजी ने हम सबको कहीं न कहीं कमजोर कर दिया। अब हमारे बच्चे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक रूप से मजबूत हों इसलिए उनमें स्वास्थ्य की समझ पैदा करनी होगी। यह तभी संभव हो पाएगा, जब बच्चों में शारीरिक शिक्षा के प्रति लगाव होगा। यह लगाव तब होगा जब विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एक विषय के रूप में अनिवार्य होगी।

आज से कुछ वर्षों पूर्व वैज्ञानिकों ने भी कह दिया था कि मानव शरीर से पसीना निकलना बहुत जरूरी है, नहीं तो मानव बीमारियों से ग्रसित हो जाएगा। इसलिए हमें समझना चाहिए शारीरिक श्रम, व्यायाम, ध्यान, प्राणायाम, आसन, खेलकूद, मनोरंजन जीवन का अहम हिस्सा हैं।

इस कोरोना काल में बहुत कुछ सीखने को मिला है, हमने बहुत कुछ खोया भी है। अब समय हमारे देश के भविष्य को बेहतर बनाने का है। इसके लिए हमें हमारे बच्चों को शारीरिक,

मानसिक, बौद्धिक रूप से मजबूत बनाना होगा। उनमें बीमारियों से लड़ने की ताकत पैदा करनी होगी। उनमें खेल खेलने की इच्छा पैदा करनी होगी। उनमें नित्य प्राणायाम, आसन, ध्यान करने की उत्साह पैदा करना होगा। उनकी अंतरात्मा तक स्वच्छता की समझ पैदा करनी होगी।

जब विद्यार्थियों में स्वयं को शारीरिक रूप से प्रबल बनाने की क्षमता विकसित होगी तब वे स्वास्थ्य की परिभाषा में सटीक उतरेंगे। यह कोरोना काल हमें सबक दे रहा है-स्वयं की आदतों को बदलने का, साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों की आदतों में भी परिवर्तन करने का। जिससे सभी का स्वास्थ्य बेहतर हो सके।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए व्यायाम के साथ, योग (प्राणायाम, आसन, ध्यान) नियमित रूप से करने पर शरीर में एकाएक परिवर्तन नजर आएगा। आसन (शरीर के लिए), प्राणायाम (श्वास, फेफड़ों के लिए) ध्यान (मन के लिए)। विद्यार्थी इसका लाभ लेंगे तो निरोगी भी होंगे और आनंदित भी रहेंगे। इन सबके लिए विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य हो, तभी भारत का भविष्य बेहतर होगा।

'एक तंदुरस्ती हजार नियामत' 'पहला सुख निरोगी काया' स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है' के तर्कों को हम सभी को समझना होगा।

वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
मण्डाना, कोटा (राज.) **मो: 7597317314**

www.rajsevak.com

मैदान का महानायक

ओलंपिक तक दौड़ने वाले प्रेरणापुंज : मिल्खा सिंह

❒ आत्माराम भाटी

जब भी ओलंपिक या एशियाई खेलों में भारतीय एथलीट भाग लेने के लिए रवाना होते हैं तो खेल प्रेमियों के मन में ही नहीं खिलाड़ियों के मन में भी एक नाम प्रेरणा के रूप में सामने आता है वो नाम है फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह का। ओलंपिक के दौरान सभी की नजरें इस ओर लगी रहती है कि क्या कोई एथलीट मिल्खा सिंह द्वारा ओलंपिक में जो बेहतरीन प्रदर्शन की रेखा अब तक खींची हुई है उसको क्रास कर देश के खाते में दौड़ में पदक ला पाएगा। अभी तक यह सपना कोई भी एथलीट पूरा नहीं कर पाया है। इस बात का अफसोस फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह को अपने जीवन की ली गई अंतिम सांस 18 जून 2021 तक रहा। जब उन्होंने चंडीगढ़ की पीजीआई अस्पताल से कोरोना की निगेटिव रिपोर्ट लेकर घर आने के बाद 18 जून 2021 अंतिम को सांस ली। उनकी तमन्ना थी कि उनके जीते जी यह सपना पूरा होता लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। दुखद बात यह रही कि 5 दिन पूर्व 13 जून को ही उनकी पत्नी निर्मल कौर जो कि भारतीय वॉलीबाल टीम की खिलाड़ी रह चुकी हैं उनका भी निधन हो गया था।

जहां तक मिल्खा सिंह के जीवन में दौड़ के शुरूआत की बात है, 1947 में हुए देश के विभाजन की त्रासदी के दौरान हुए दंगों ने जब 12 साल के मिल्खा सिंह के माता-पिता को इस धरा से अलविदा कर दिया। उस समय मिल्खा ने पाकिस्तान में अपने गांव लायलपुर से दौड़ते हुए बेमौत मारे जा रहे लोगों की चीख-पुकार के बीच ट्रेन की सीट के नीचे छिपकर भारत में कदम रखा। तभी से इनके जीवन में भाग-दौड़ का सिलसिला चलता ही रहा। बाद में समय के साथ चलते हुए इन्होंने दौड़ के लिए ही अपने को समर्पित कर दिया और भारत का नाम दौड़ में विश्व स्तर पर चमका एक नया अध्याय लिख दिया।

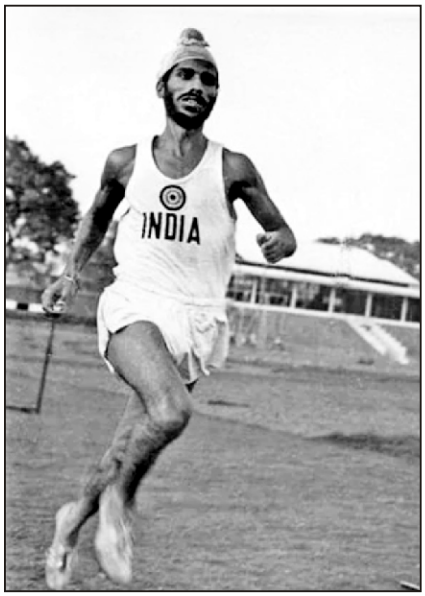

भारतीय एथलेटिक्स जगत में आदरणीय मिल्खा सिंह के प्रारंभिक जीवन की बात करें तो इनका जन्म 8 अक्टूबर 1935 को गोविंदपुरा (वर्तमान पाकिस्तान के लायलपुर) में हुआ था। जब भारत की आजादी के दौरान सांप्रदायिक बंटवारे का राक्षस पैदा हुआ तो उसने इनके परिवार माता-पिता सहित आठ भाई-बहिनों को अपना ग्रास बना लिया। जबकि इनके खुद के गांव में बिल्कुल शांति थी। लेकिन अचानक बाहर से कबीलाई लोगों ने गांव में सबकुछ समाप्त कर दिया। इसके बाद मिल्खा सिंह वहां से दंगों की आग से जूझ रहे लोगों की चीख-पुकार और मारकाट के बीच दौड़ते हुए ट्रेंन में सीट के नीचे अपने को छिपाते हुए भारत आ गए उसके बाद दिल्ली को अपना ठिकाना बनाया।

दिल्ली में भी मिल्खा सिंह का जीवन आसान नहीं रहा। रहने के लिए फुटपाथ ही इनका मकान व बिस्तर रहा। पेट की ज्वाला को शांत करने के लिए इन्हें होटलों में बर्तन मांजने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन यह सब मिल्खा को अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए वो अपनी मेहनत के बल पर अपने जीवन की एक अच्छी कहानी रचेंगे। बस, मिल्खा के इसी प्रण ने आगे बढ़ने के लिए दौड़ को ही अपना लक्ष्य बनाया।

मिल्खा सिंह की इच्छा थी कि अगर भारतीय सेना में उनका चयन हो जाए तो उनके लिए खेल में आगे बढ़ना आसान हो जाएगा। लेकिन तीन बार उन्हें सेना की भर्ती में असफलता हाथ लगी। लेकिन मिल्खा यहां रूके नहीं। चौथी बार फिर से इन्होंने आर्मी में भर्ती के लिए आवेदन किया जिसमें इन्होंने अपने आपको एथलीट की बजाय इंजीनियरिंग विभाग के लिए पंजीकृत करवाया जिसमें इनका चयन हो गया। 1951 में मिल्खा सिंह की नियुक्ति 'ईएमई' क्रेंद सिंकदराबाद में हुई।

मिल्खा के खेल जीवन के शुरूआत की बात करें तो आर्मी में नियुक्ति के बाद ही, सही मायने में इनके बेहतरीन एथलीट बनने के सपने की शुरूआत हुई थी। सिंकदराबाद में नियुक्ति के बाद इन्होंने पूरे जोर-शोर से दौड़ में अपना पूरा ध्यान लगा दिया। दौड़ के प्रति मिल्खा सिंह का कितना जूनून था वो इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि जब सारे सैनिक आराम किया करते थे तो मिल्खा सिंह उस समय मीटर गेज ट्रेन के साथ दौड़ लगाकर अपने आपको एथलेटिक्स का नायाब हीरा बनाने को जी जान से मेहनत करते थे। इस दीवानगी में कई बार अभ्यास के दौरान इनके मुंह और नाक के साथ पेशाब से खून तक आने लग जाता था। कई बार बेहोश भी हो गए। यहां तक कि एक बार बेहोशी के बाद इनकी स्थिति बहुत ज्यादा खराब हो गई। फिर भी इन्होंने दौड़ना नहीं छोड़ा। अपने लक्ष्य से मुंह नहीं फेरा।

अपने आपको बेहतरीन एथलीट बनाकर देश का नाम रोशन करने की इनकी जिद ने आखिर सफलता की सीढ़ी पर कदम रखना उस समय शुरू कर दिया जब राष्ट्रीय स्तर पर मिल्खा सिंह विजेता स्टेंड पर खड़े होने लगे। इसके बाद

www.rajsevak.com

इन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए इनका चयन भारतीय टीम में होना शुरू हो गया।

मिल्खा सिंह के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे पहली बड़ी उपलब्धि 1956 के ओलंपिक में भाग लेना रहा। उसके बाद 1958 के एशियाई खेलों में इन्होंने 200 मीटर की दौड़ 21.6 सेकेंड में और 400 मीटर की दौड़ 47 सेकेंड में पूरी करते हुए दो स्वर्ण पदक भारत की झोली में डालकर नया इतिहास बना दिया। यही नहीं 1958 में ही कार्डिफ राष्ट्रमंडल खेल में 400 मीटर दौड़ को 46.16 सेंकेंड में पूरी करते हुए आजाद भारत के लिए राष्ट्रमंडल खेलों में पहला स्वर्ण पदक भारत के नाम करने का श्रेय भी मिल्खा सिंह को है।

अपने जीवन काल में 80 दौड़ों में से 77 में विजेता बनने वाले मिल्खा सिंह के लिए 1960 में रोम ओलंपिक में लगाई गई दौड़ जीवन की सबसे बेहतरीन दौड़ रही जब वे 400 मीटर दौड़ में मामूली अंतर से पदक से चुकते हुए चौथा स्थान प्राप्त करने में सफल रहे। इसके बाद 1962 के एशियाई खेलों में भी अपनी जीत का डंका इन्होंने बजाया जब पाकिस्तान के सबसे तेज धावक अब्दुल खालिक को पछाड़ते हुए लगातार दूसरे एशियाई खेलों में भारत के नाम स्वर्ण पदक किया। इसके बाद मिल्खा सिंह ने तीसरी बार 1964 में टोक्यो ओलंपिक में भारत की ओर से अंतिम बार ओलंपिक में दौड़ लगाई।

भारतीय एथलेटिक्स जगत ही नहीं दुनिया के हर आदमी के लिए फीजिकल फिटनेस के रूप में प्रेरणा बन चुके मिल्खा सिंह के खेल जीवन के साथ कुछ अन्य रोचक किस्से भी हुए। 1962 के एशियाई खेलों में जब मिल्खा ने पाकिस्तान के धावक अब्दुल खालिक को परास्त कर स्वर्ण पदक जीता तो उसके बाद मिल्खा सिंह को पाकिस्तान में दौड़ने का निमंत्रण मिला। एक बार तो अपने बचपन की बूरी यादों के कारण वहां जाने से मना किया, लेकिन राजनीतक दबाव के चलते उन्हें वहां जाना पड़ा। लाहौर के स्टेडियम में दौड़ का आयोजन किया गया था। इस दौड़ में मिल्खा सिंह के लिए एक बार फिर से अब्दुल खालिक को पछाड़ने की चुनौती थी। लेकिन खचाखच भरे स्टेडियम में जब मिल्खा सिंह ने 200 मीटर व 400 मीटर दोनों दौड़ों में अब्दुल खालिक को परास्त कर दिया तो स्टेडियम में उपस्थित पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल अयूब मिल्खा सिंह से इतने अभिभूत हो गए कि उन्होंने मिल्खा सिंह को एक नया नाम फ्लाइंग सिख दे दिया। एक किस्सा इस स्टेडियम में हुई दौड़ का यह भी बताया जाता है कि जब मिल्खा सिंह ने दौड़ आरंभ की तो इनको दौड़ते हुए देखने के लिए स्टेडियम में मौजूद बुर्कानशीन महिलाओं ने अपना नकाब तक हटा लिए। मिल्खा सिंह कितने मिलनसार हैं इसका उदाहरण यह है कि जब 1965 के युद्ध में पाकिस्तान के धावक अब्दुल खालिक को बंदी बनाकर मेरठ जेल में बंद किया गया तो वे मिल्खा से मिलना चाहते थे। मिल्खा सिंह वहां जाकर न केवल उनसे मिले बल्कि दोनों गले मिलकर खूब रोये भी।

फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह की अपनी पत्नी निर्मल कौर से हुए पहले प्यार की घटना भी रोचक है। 1960 के ओलंपिक में जब मिल्खा सिंह पदक से चूक गए तो मिल्खा सिंह की बहुत बड़ी फैन भारतीय महिला वॉलीबॉल टीम की कप्तान निर्मल उनसे ऑटोग्राफ लेने गई। तभी पहली ही नजर में मिल्खा से निर्मल को प्यार हो गया। इस तरह उस समय के सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और सुंदर मिल्खा सिंह को भी निर्मल अच्छी लगी और दोनों आगे चलकर एक-दूसरे के जीवन साथी बन गए। खेल के स्तंभ मिल्खा और निर्मल के एक पुत्र जीव मिल्खा और तीन पुत्रियां डॉ मोना सिंह, अलीजा ग्रोवर और सोनिया सांवल्का हुई जिनमें जीव मिल्खा ने अपने माता-पिता की राह पर चलते हुए गोल्फ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन किया।

मिल्खा सिंह ने खेल क्षेत्र में जिस तरह से भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। उनके इस बेहतरीन योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पदमश्री की उपाधि से सम्मानित किया। मैदान में ट्रेक पर अपनी दौड़ को विराम देने के बाद मिल्खा सिंह सेना छोड़ना चाहते थे लेकिन जब तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल के. एस. थिम्मैया और रक्षा मंत्री कृष्णा मेनन इसके लिए राजी नहीं हुए तो परेशान होकर मिल्खा सिंह ने प्रधानमंत्री नेहरु जी से बात की उसके बाद उनके कहने पर इन्हें सेना से मुक्त किया गया। सेना में नौकरी छोड़ने के बाद इन्हें चडीगढ़ में पंजाब का उपनिदेशक, खेलकूद बनाया गया।

मिल्खा सिंह के जीवन का एक किस्सा यह भी है, जो वे अपनी आत्मकथा मिल्खा सिंह में लिखते हैं कि जब वे टोक्यो ओलंपिक से लौटे तो जो जूते उन्होंने दौड़ में पहने थे उन्हें वो वहां होटल में ही छोड़ आए थे। भारत में आने के बाद उनके पास पत्र, तार, पार्सल और दूरभाष पर बधाई संदेश मिल रहे थे। इसी दौरान एक पार्सल टोक्यो से भी आया। इसे इन्होंने 85 रूपये देकर कस्टम विभाग से छुड़ा कर खोला तो यह देखकर दंग रह गये कि इसमें तो इनके वे जूते हैं जिन्हें इन्होंने फटने के कारण टोक्यो के होटल में ही छोड़ दिया था। इस पार्सल के साथ आए पत्र से पता चला कि होटल प्रबंधन ने ये जूते इसलिए भेजे कि उनको लगा कि मैं इन्हें वहां पर भूल आया हूं। जबकि मिल्खा सिंह ने जानबूझकर यह जूते छोड़े थे। रोचक बात यह रही कि यही जूते बाद में 24 लाख में नीलाम हुए।

भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी फ्लाइंग से पहचान दिलाने वाले मिल्खा सिंह का जीवन में एक बार जेल जाने का अवसर भी आया जब वे बिना टिकट के रेल यात्रा करते हुए पकड़े गए थे। जिसके कारण उन्हें तिहाड़ जेल के दर्शन करने पड़े। बाद में उनकी बहन ने उन्हें अपने गहने बेचकर वहां से छुड़वाया। जिस तरह से मिल्खा सिंह ने संघर्षपूर्ण जीवन को जीते हुए खेल के मैदान में नई ऊंचाईयों को छूते हूए देश का नाम रोशन किया, ओलंपिक में भारत के लिए अब तक का एथलेटिक्स में बेहतरीन प्रदर्शन किया, निश्चित रूप से वे भारत के उन युवाओं के लिए प्रेरणा हैं, जो खेल क्षेत्र में अपना नाम कमाना चाहते हैं।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
जीपीएफ ऑफिस बीकानेर
वरिष्ठ खेल समीक्षक
पंडित धर्म कांटे के सामने वाली गली में,
गजनेर रोड, बीकानेर (राज.)
मो :9413726194

www.rajsevak.com

पुस्तक समीक्षा

अनुभव के मोती

कवि : **ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'**; प्रकाशक : **बोधि प्रकाशन, जयपुर**; संस्करण : **2021**; पृष्ठ संख्या : **128**; मूल्य : ₹ **250**

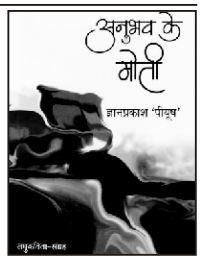

अनुभव के मोती लघुकविता संग्रह अभी-अभी पढ़कर पूरा किया और पढ़कर जो अनुभव हुआ वह आपके लिए प्रस्तुत है।

'अनुभव के मोती' श्री ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' जी का लघुकविताओं का संग्रह है जिसमें जीवन अनुभवों से सुसज्जित भावों की नाव में तैर रही 119 छोटी-छोटी कविताएं संग्रहीत हैं। परमात्मा में आस्था, प्रकृति के प्रति आभार, प्रकृति के विविध रूप, प्रकृति का आकर्षण, अपनों के प्रति अपनत्व, मानवता में विश्वास, मानवीय मन का विश्लेषण, जीवन में अभिनय, कविता, साहित्य का महत्त्व, कविता की ताकत, सत्य, प्रेम और नफरत, आशा, निराशा, आत्मबोध जैसे मानवीय संवेगों का मानव जीवन पर प्रभाव के साथ-साथ किसान, मजदूर की स्थिति, गरीब की दशा, राजनीति, हिंसा, भ्रूण हत्या, गांव और शहर की जिंदगी, भारतीय पर्वों, जनसंख्या विस्फोट जैसे विषयों पर गंभीर चिंतन से लबरेज कविताएं पाठक मन को भी हृदय की गहराइयों तक छूती हुई विचारों के अनन्त सागर में ले जाती हैं।

बचपन, बुजुर्गों, माँ, बेटी आदि पर लेखनी खूब चली है। उपमाओं का शृंगार किए शब्द जीवन में विविध सम्बन्धों के रूप में उपमाओं का भण्डार शीर्षक कविता में नारी का कुछ यूं रूपायन कवि करते हैं-

कन्या पवित्र-दूब-सी
नारी उज्ज्वल दूध-सी
बेटी सुगंधित फूल-सी
बहन कलाई पर सजी राखी-सी
माँ आँगन में फैली छाँव-सी
पत्नी मर्यादा की ठाँव-सी
दादी धरोहर संस्कृति सी
महिमामयी पुरातत्व विभाग-सी

मनुष्य का मन विचारों की शक्ति से सशक्त होता है तभी कवि कह उठता है-

'मन जटायु डरता नहीं'
जिंदगी सीता को
बचाने के लिए
लगा देता है
स्वयं को
दाँव पर
अंतिम साँस तक
करता है अत्याचारी का
डटकर मुकाबला।

जब मानव चिंतन का प्रवाह इतिहास का विवेचन करता है तो कवि कह उठता है-

'महाभारत तो होना ही था'
भीष्म पितामह
कर्ण, कृपाचार्य
बँधे थे सभी
निजी स्वार्थों के खूंटे से
दुर्योधन करता रहा मनमानी
देता रहा राजकार्यों में दखलन्दाजी
शकुनि उसे हवा देता रहा
नीति विदुर की होती कैसे सफल
महाभारत तो होना ही था।

यदि मन साहस देता है तो अंधेरे में उजाले की किरण फूट पड़ती है। तो कवि जीवन में घिर आई विसंगतियों को देख कराह भी उठता है, कह बैठता है 'शांति दूर है'

आदमी सुखी व संतुष्ट था
नहीं कोई अभाव था
जगी फिर महत्त्वाकांक्षा
लोभ, लालच, तृष्णा
काटे उसने असंख्य पेड़
विकास के नाम पर
लगा करने प्रकृति का
असीमित दोहन
मानव का शोषण
आज शांति उससे दूर है।

प्रकृति के प्रति चिंता और चिंतन कविताओं में सर्वत्र व्याप्त है। मेघालय, मनाली यात्रा पर तो कवि ने पूरी 15 कविताएं लिखी हैं जो वहाँ के प्राकृतिक अवयवों-पर्वत, झरने, झील, पेड़, गुफाओं, बादलों तथा वहाँ के लोगों के जन-जीवन को उकेरती है। इन अति सुंदर कविताओं के शीर्षक नहीं दिए गए मात्र क्रमांक दिए गए हैं। पंद्रह क्रम की कविता देखिए-

पर्वत हैं बड़े उदार
सृष्टि में लाते हैं बहार
इरादे भी हैं नेक
करते पर्यटकों का अभिषेक
देते तोहफा ताजगी का
शीतल मन्द बयार से
हर लेते सारी थकान
सुनाकर संगीत-भरा
झरनों का मधुरिल गान।

विचारों के अनमोल मोती सहेजे हैं, कवि ने संग्रह की कविताओं में। मन की शक्ति को अपरिमित मानते हुए कवि आह्वान करता है साहस का, संघर्षों का, आशा का, उजालों का और कह उठता है-

जिंदगी में संघर्ष उतने
जितने हमने मानें
पीयूष की भी बहती धारा
नजर यदि उस पर डालें
तमस-पथ को त्याग कर
प्रकाश-पथ अपना लें।

कवि ने अनेक कविताओं के माध्यम से पिता, माँ, बेटी, पत्नी के रिश्तों के महत्त्व को जीवन में प्रतिपादित किया है। एकल परिवार की तरफ बढ़ रहे मनुष्य के लिए परस्पर-सद्भाव की पहचान हो यह जरूरी है।

'परस्पर के सद्भाव से' कविता में कवि कहता है-

करो तुम फिक्र मेरी
मैं भी करूँ तुम्हारी
करो तुम भला मेरा
मैं भी करूँ तुम्हारा
परस्पर के सद्भाव से
गुजर जाए जिंदगी का सफर सुहाना
मत करना कोई बहाना।

प्रेम का जीवन में अनन्य महत्त्व है। 'वक्त अकेला कुछ नहीं होता' में एक बानगी देखिए-

वक्त गुजर जाता वसंत में
पता भी नहीं चलता
वक्त गुजर जाता पतझर में
झरते पात-सा पता भी नहीं चलता
पता चलता है तब
जब तुम बसंत-सी महकती
आती हो मेरे पास
या बिछुड़ कर छोड़ जाती
सूनेपन का अहसास।

कवि के हृदय में जगी आस्था का उच्च स्वरूप 'आस्था' कविता में कुछ यूँ शब्दाकार पाता है-

दीपक की लौ-सी

www.rajsevak.com

होती है आस्था
तम से बाहर निकलने का
दिखाती है रास्ता
निराशा से नहीं
कोई उसका वास्ता।

विस्तृत और प्रभावी विषयवस्तु के साथ-साथ कविताओं के शीर्षक भी बहुत आकर्षक बन पड़े हैं। जैसे-

जिंदगी अभिनय की चित्रशाला सी, सूर्य प्रभा-सी कविता, कृपा बरस रही परमात्मा की, बालक लघु कविता-सा, रोशनी के छंद, खिलेंगे कैसे गुलाब, प्यार का सावन, वक्त अकेला कुछ नहीं होता, जीए कैसे आदमी, मन जटायु डरता नहीं जैसे शीर्षक अनायास ही वाह कहने को विवश कर देते हैं।

कविताओं की भाषा सुबोधगम्य है, अंग्रेजी शब्दों के समावेश के बिना सहज, सुन्दर, त्रुटिरहित, सम्प्रेषणीय, आलंकारिक शब्दावली विषयवस्तु को गरिमा प्रदान करती है। उपमा, प्रतीक कविताओं का सौन्दर्यवर्धन करते हैं। आवरण चित्र, चित-आकर्षक है। 'अनुभव के मोती' विचारों की गहराई से निखरे हैं तो पुस्तक का शीर्षक यत्र-तत्र-सर्वत्र साकार दिखाई देता है।

समीक्षक : **आशा खत्री 'लता'**
2527, सेक्टर-1 रोहतक (हरियाणा)-124001
मो: 8295951677

सौरठा सौरभ

लेखक : **नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'**; प्रकाशक : **मंथन प्रकाशन, 85/175, जी-1, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर-302033**; संस्करणः **2016 (प्रथम)**; पृष्ठ संख्या : **177**; मूल्य : **₹ 200/-**

श्री नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य' द्वारा प्रणीत 'सोरठा सौरभ' निस्संदेह सौरभ ही है। यह (सोरठा सौरभ) श्री मेहता का चतुर्थ संग्रह है इस संग्रह में श्री मेहता ने राजस्थानी भाषा के प्रिय एवं मुक्तक काव्य के प्राण कहे जाने वाले सोरठा छंद को आधार बना अपने हृदयोद्गारों को वाणी दी है। सोरठा छंद की प्रसिद्धि का अनुमान राजस्थान में प्रचलित इस पंक्ति से ही लगाया जा सकता है-

सोरठियो दूहो भलो, भला मरवण री बात।
जोबन छायी धन भली, तारा छायी रात।।

सोरठा अर्द्ध सम मात्रिक छंद है जिसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 11-11 मात्राएं है तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएं होती हैं। इतने छोटे से छंद में अपने मन की बात की पूर्ण अभिव्यक्ति कर पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसे वही सम्भव कर सकता है जो भाषा की समाहार शक्ति से भलीभांति परिचित हो और यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि श्री मेहता अपने इस प्रयास में पूर्ण सफल हुए हैं।

लेखक ने प्राक्कथन में 'अपनी बात' कहते हुए अपने काव्य प्रयोजन को स्पष्ट किया है- मातृशक्ति, युवाशक्ति का ध्येय फैशन और जमाने की हवा के संग चलने का हो गया है। अंधानुकरण और परमुखापेक्षी होने की हसरत किस दिशा में ले जाएगी और क्या दशा करेगी यह कल्पना और संवेदना ही यथार्थ रूप में मुझे काव्य प्रणयन की ओर बढ़ाती रही है।' कवि श्री नगेन्द्र का यह प्रयोजन मुझे अकस्मात् ही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन की स्मृति दिला देता है जिसमें उन्होंने काव्य प्रयोजन सम्बन्धी अपने विचार प्रकट किए हैं-'जो वाग्जाल मनुष्य की दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुःखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।' यह प्रयोजन 'सोरठा सौरभ' के सातों खंडों में विद्यमान है, विशेषकर 'समस्या' शीर्षक के छंदों में लेखक ने समाज की ज्वलंत समस्याओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। यथा-

माफिया मनगढ़ंत, तूती बजा रहे जहाँ।
ताज तख्त का अंत, होना निश्चित एक दिन।।

इसके अतिरिक्त श्री नगेन्द्र ने अपने शिक्षाधिकारी होने के कर्त्तव्य का भी इस संग्रह में यथोचित निर्वहन किया है। जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है-

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

कवि मेहता भी अपने इस संग्रह के अनेक सोरठों में उपदेश (शिक्षा) देने का लोभ संवरण नहीं कर पाए हैं-

जीवन है आनंद, गिला शिकवा क्यों इससे।
हावी होती चंद, बुराइयों को छोड़ दें।।

श्री नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य' के इस 'सोरठा सौरभ' में सात खंड है जो क्रमशः सदाचार, सोनचिरी, सौरभ नीति, स्नेह-सौहार्द्र, समाज, समस्या व सत्कर्म शीर्षक से विन्यस्त हैं।

सदाचार खंड से ग्रंथ का प्रारम्भ है जहाँ कवि ने गणेश वंदना के पश्चात 117 सोरठों में सदाचार से सम्बन्धित अपने उद्गार व्यक्त किए हैं। भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांत सर्वधर्म सद्भाव, सरलता, संत-सत्संग महिमा शान्ति, अंह का विगलन आदि से सम्बद्ध विचारों को साकार रूप में ढाला गया है-एक बानगी देखिए-

निश्चित इक दिन मौत, आ जाएगी समझकर।
जला ले आत्मजोत, भवसागर पार करने को।।

'सोनचिरी' शीर्षक से 91 सोरठे रखे गए हैं, जिनमें देश प्रेम का उबाल है तथा जन्मभूमि की महिमा का गान किया गया है। इन सोरठों में देश में बढ़ते भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक उन्माद-चमचागिरी, चीन की हड़प नीति, पाक समर्थित आतंकवाद व नेताओं की मौका परस्ती को लक्ष्य कर तीखे व्यंग्य किए गए हैं।

किरीट है कश्मीर, अंग अभिन्न भारत का।
सीना देंगे चीर, बुरी नजर देख ले यदि।।

'स्नेह सौहार्द्र' खंड में 82 सोरठों में यौवन जन्य प्रथम स्नेह तथा मन के कोमल भावों को अभिव्यक्ति मिली है। साथ ही कहीं-कहीं हास्य व्यंग्य के छींटे भी पड़े हैं यथा-

पत्र हो गए बंद, एस.एम.एस. कारण।
मतवाले अब चंद, लिखने से चूके नहीं।।

समाज शीर्षक खंड से भारतीय समाज की झाँकी 289 सोरठों में प्रस्तुत की गई है। इस खंड में एक तरफ समाज में व्याप्त बुराइयों पर करारा व्यंग्य किया गया है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक परम्पराओं, रीति-रिवाज, आपसी भाइचारे, परिवार आदि के महत्त्व का बखान भी बखूबी हुआ है। 'बेटी बचाओ' अभियान की अभिव्यक्ति देता एक सोरठा देखें-

बेटी बने चिराग, रोशन करे कुनबे दो।
माता-पिता बड़ भाग, लिछमी आई आँगने।।

इसी प्रकार समाज में व्याप्त दहेज रूपी दानव के अंत के अभिलाषा की अभिव्यक्ति कवि वाणी में इस प्रकार हुई है-

दहेज दानव अंत, मनुष्य समाज कर सके।
सब बन जाए संत, जग में ना रहे पशुता।।

'समस्या' शीर्षक से कवि ने 352 सोरठों में सामाजिक समस्याओं, आधुनिकता की अंधी दौड़, समाज में व्याप्त अजनबीपन, ऊब, अकेलापन आदि को वाणी में ढालने का प्रयास किया है। पैसे कमाने की होड़ ने कैसे हमारे जीवन की शान्ति को भंग किया है इसका एक उदाहरण कवि के शब्दों में देखें-

www.rajsevak.com

हवा चली संसार, पैसा कमाने के पीछे।
कौन समझे असार, माया मोह से बचकर।।

इसी प्रकार भारतीय समाज की ज्वलंत समस्या जिसने केन्द्र सहित सभी राज्य सरकारों की नींद हराम कर रखी है और जो सभी समस्याओं की जड़ है उसे कवि ने इस प्रकार शब्दों में ढाला है–

जनसंख्या विस्फोट, बढ़ाया बेरोजगारी।
दीक्षा में जब खोट, समस्या हल कैसे हो।।

'सत्कर्म' शीर्षक में कवि ने आदर्श समाज के आवश्यक उपकरण मानवता, पुरुषार्थ, स्नेह, करुणा, कर्मशीलता, संवेदना निष्ठा आदि की अभिव्यक्ति 127 सोरठों में की है। कर्म के प्रति समर्पण का उपदेश जैसा श्रीमद्भगवद् गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था। वैसा ही भाव कवि नगेन्द्र की वाणी में प्रस्फुटित हुआ है–

बनकर निष्ठावान, वर्जना से बचे सदा।
जगती दे सम्मान, कर्म समर्पण देखकर।।

वक्त की कीमत को जानने वाले कभी नाकामयाब नहीं होते इसी भाव की अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई है–

समय ही मूल्यवान, पाने को कामयाबी।
रहे यदि सावधान, मंजिल अवश्य पा सके।।

कवि श्री नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य' के इस 'सोरठा सौरभ' में कुल 1053 सोरठे हैं, जिनमें कवि ने आधुनिक ज्वलंत विषयों को ही वाणी दी है। आधुनिक काल में जहां मुक्त छंद की कविता का ही प्रसार कवि जगत में हो रहा है, ऐसे में मध्यकालीन कवियों की परिपाटी पर सोरठा लिखकर उसमें नवीन विषयों का आधान कवि प्रतिभा का परिचायक है। कुछ स्थानों पर अत्यंत संक्षिप्तता के कारण भावों की अस्पष्टता अवश्य पाठक को उलझन में डाल देती है, किन्तु ऐसा इस छोटे छंद के मात्रिक नियमों के कारण है। यह 'नगेन्द्र कुमार मेहता' (सोरठा सौरभ) पाठक के लिए एक निष्कर्ष है जिस पर वे अपनी बुद्धि, विचार एवं भावों को कसकर परख कर सकते हैं।

समीक्षक : **डॉ. श्रीनिवास शर्मा**
व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाँचू,
नोखा, बीकानेर (राज.) **मो: 9251031431**

सपनों के सच होने तक

कवि : **राजकुमार जैन 'राजन'** ; प्रकाशक: **अपन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली** ; पृष्ठ संख्या : **130** ; मूल्य : ₹ **260**

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कविता के द्वारा मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य के हृदय में भावनाओं का ज्वार सदैव उफान लेता रहता है। उन

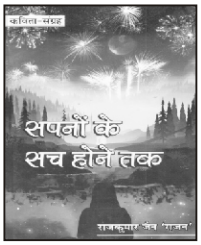

भावनाओं को शब्दों का जामा पहनाकर कवि कविता का सृजन करता है। इसीलिए कविता को हृदय की वस्तु तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति माना जाता है। कवि समाज में जीता है; अतः समाज की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं अव्यवस्थाओं से बच नहीं सकता और जब कवि ऐसी परिस्थिति जनित भावों को उकेरता है तो वह विद्रोही भी कहलाता है और जब संवेदनशील कवि अपनी कविता से सौन्दर्यानुभूति के साथ-साथ परमानन्द का बोध कराता है तो उसे सहृदय कवि कहा जाता है। अतः यह कहना स्वाभाविक है कि कवि समाज में घटित होने वाली सभी घटनाओं का साक्षी बनकर न केवल अवलोकन करता है अपितु तज्जनित भावों को कविता का रूप देकर पाठकों को प्रभावित करता है।

कवि राजकुमार जैन 'राजन' की कविताएं उपर्युक्त वैविध्य को आकार देती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। कवि की सद्यः प्रकाशित कृति 'सपनों के सच होने तक' 51 कविताओं का एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें भावों के विविध रंग भरे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। श्री 'राजन' मूलतः कवि नहीं है। वह स्वयं कहते हैं कि मैं अपने आपको कवि नहीं मानता हूँ और कविता के शिल्प से भी अनजान हूँ किन्तु मैं जो देखता हूँ, महसूस करता हूँ और अपने को अपनी संवेदनाओं के सहारे पाठकों को जोड़े रहता हूँ। श्री राजन की संभवतः 'खोजना होगा अमृत कलश' के बाद प्रस्तुत पुस्तक दूसरी काव्य कृति है। बाल साहित्य के श्री राजन सशक्त हस्ताक्षर है। बाल साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र को उन्होंने अपने पुरुषार्थ से समृद्ध किया है। बाल साहित्य लेखन, प्रकाशन, प्रसारण, विस्तारण, मूल्यांकन आदि सभी पक्षों को वे गति दे रहे हैं। निस्संदेह बाल साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान प्रशंसनीय ही नहीं, शानदार है किन्तु कवि न कहना या उनका स्वयं अपने को कवि न मानना अपने प्रति अन्याय है। किसी क्षेत्र में ज्यादा देने से पहचान नहीं बनती है अपितु अच्छा या गुणवत्तापूर्वक देने से पहचान बनती है। उनकी कविताएँ इस बात से साक्षी बनती हैं कि उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को बदलने का अथक प्रयत्न किया है। वह मानते हैं कि समाज में व्यक्ति अपने अस्तित्व से महत्त्वपूर्ण नहीं बनता अपितु वह अपने कृतित्व से महान कहलाता है। समीक्ष्य कृति में इसी भाव को दर्शाती कविता की प्रभावोत्पादकता देखिए–

फूल बन खिल जाता है
''सूरज बन चमकता है
पसीने का शृंगार बन
देह पर उभरता है
अपने अस्तित्व की सार्थकता
हमारी भावनाओं में
प्रवाहित होती है
और इस तरह
मानवता का जैसे
हो गया हो पुनर्जन्म।।''

अस्तित्व छोटा हो या बड़ा तो उसका आकलन उसके अस्तित्व के आकार से नहीं अपितु उसके कृतित्व के आकार से मापा जाता है। जुगनू का अस्तित्व छोटे जीव का है किन्तु अंधेरे से संघर्ष करते हुए उसका कृतित्व स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होता है, इसीलिए कवि उन तुच्छ जीवों को उनकी उपयोगिता का आभास कराते हुए कहता है–

जगमगाते हुए जुगनूओं ने
अन्धेरे के खिलाफ
लड़ाई छेड़ दी
और इस तरह कई घर
उजड़ने से बच गए।

कवि राजन के अनुसार अस्तित्व की खुशबू कृतित्व में है कृतित्व की पहचान विश्वास में है। अपने आप पर विश्वास ही व्यक्ति को कृतित्व की ऊँचाई तक ले जाता है। अपने आप पर विश्वास करने वाले विषम से विषम परिस्थितियों को अपने कदमों में कर लेता है। 'नया उत्कर्ष' कविता विश्वास युक्त पुरुषार्थ का स्वागत इस प्रकार करती है–

''रिसते हुए घाव
मेरी ओर देखकर मुस्कराए
संवेदनाएँ चेतन हो उठी
सूख गया था जो दुःख का बिरवा
बहुत दिनों बाद
फिर हरियल होने लगा
श्रम की सार्थक हवा पाकर
विश्वास बाहें फैलाकर
स्वागत कर रहा
फिर नए उत्कर्ष का।''

समीक्ष्य कृति की कविताओं में विषय का वैविध्य है, चित्त को आकर्षित करने वाला बहुरंगी

www.rajsevak.com

गुलदस्ता है, विसंगतियों एवं विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उन पर करारा प्रहार भी है। 'समय' कविता का प्रेरक मार्मिक चित्रण दृष्टव्य है-

''तब समय ने
एक गहरी साँस ली
और कहा
हार जाओ चाहे जिन्दगी में
सब कुछ
मगर फिर से
जीतने की उम्मीद
जिन्दा रखना
तब जानोगे मैं समय हूँ।''

संगत की अधिकांश कविताएं उदास, संभस्त एवं अवसाद ग्रस्त मन को झंकृत करने वाली हैं तथा नवचेतना से ऐसे मन को प्रफुल्लित करने वाली हैं। कविवर निराला की तरह प्रस्तुत संगत की कविताएं मुक्त छंद हैं। भाव प्रवणता गुण के कारण संग्रह की प्रायः सभी कविताएं पाठकों के अन्तर्मन को उद्वेलित कर नवाचार की दिशा में प्रस्थित कराने वाली हैं। अतः यह एक उत्कृष्ट काव्य कृति बन पड़ी है। शीर्षक 'सपनों के सच होने तक' पाठकों के लिए एक चुनौती है और प्रेरणा भी है कि जब तक सपने सच न हो जाएं तब तक कदम रूकने न पाएं, तन थकने न पाएं और मन अवसादग्रस्त न होने पाए। अच्छी कृति, अच्छे शीर्षक और उत्कृष्ट छपाई के साथ इसका प्रकाशन पाठकों के लिए पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

समीक्षक : **प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'**
निदेशक
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्व भारती संस्थान,
लाडनूँ, नागौर (राज.)-341306
मो: 9414870428

अंतस री आवाज

सिरजणकार : **डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत';** प्रकाशक: **राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या: **88;** मूल्य : **₹ 200**

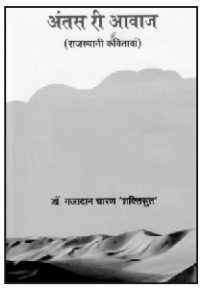

साहित आप सुभाव सूं संवेदनात्मक अनुभूति री सिरजणात्मक अभिव्यक्ति कहीजै। कोरी अनुभूति अर कोरी अभिव्यक्ति रै सा'रै साहित रा संस्कार ओपता आकार नी पा सकै। साहित नैं साहित होवण खातर अनुभूति नैं संवेदना सूं अर सबद नैं सिरजणात्मक अभिव्यक्ति सूं सींचणूं-पोखणूं पड़ै है। औ काम जिस्यो सो'रो दीखै है बिस्यो सो'रो है कौनी। खासतौर सूं कविता रै पेटै आ बात सोळै आना साच कही जा सकै है। कवि खातर कविता खुद रै अधूरैपण री खोज रै साथै उणनैं भरण रो सिरजाम भी हुवै है। आखै लोक रौ रिगत (खालीपण) कवि री संवेदना रै सा'रै कविता रौ कथ बणै अर सबद जीवण राग। औ ही कारण है कै कविता रौ न अथ है अर न इति। ज्यूं ही कवि अेक कविता रै लेखै काम पूरौ करै त्यूं ही बो नयै अधूरेपण रै मारग माथै आपरौ पग धरै। बो ऊँचे-नीचे टेढ़े-मेढ़े खुरदरे जथारथ रै मारग पर चालतो संभावित साच रौ सबद-संसार खोजै, जिणरो नाम है कविता। कवि होवण खातर सबसूं पैली अनुभूति रौ सागर अर उण सागर रै तळ तांई तैरण री मछली जैड़ी खिमता जरूरी है। इण सूं भी आगै काव्यभासा रै रूप में संप्रेषण रौ जाळ भी। औ जाल ही है, जिणरै सा'रै कवि सागर री कोख रै मोत्यां नैं पाठक री हथेळी माथै धरै। अब पाठक हथेळी माथै धर्‌योड़ै मोत्यां नै निहारतों रूपदरसी बण्यो लीलाधारी कवि री लीलावां रौ आंणद लेवै। ओ है कवि करतार रो कविता संसार, जिण रै मांय जड़ अर चेतण सब समावै। अैड़ी ही दीठ री हामळ भरती कवितावां रौ संग्रै है 'अंतस री आवाज'। इण कविता संग्रै रा सिरजणकार डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' छांदस कविता रै क्षेत्र मांय आपरी निकेवळी पिछाण राखै।

इण काव्यसंग्रै री कवितावां लोकजीवण री लहरां लेती कवि रै जुगबोध, भावबोध अर सबदबोध रै सा'रै पाठक रै अंतस मांय आपरी प्रभाव रेखा खींचे। 'अंतस री आवाज' संग्रै री कवितावां बांचणू अेक तरह सूं नयै अनुभव सूं गुजरणू है। साधारण सूं साधारण विषै माथै कविता करतौ कवि सबद री धार सूं पाठक रै हिवड़ै में हिलोळ पैदा करे। अेक तरह सूं कविता नैं कविता होवण री सगती अर सबद नैं लय री खिमता रो विस्तार देवण रौ नाम है 'अंतस री आवाज'। खुद कवि पोथी री भूमिका मांय आपरी दीठ सामै राखतां कह्यो है कै भलाई छंद रै बंधां सूं मुगती ले ली पण लोक-चित तो आज भी छंद रा बारणा लेवै। लोक रो मन परम निरपेखी हुवै, वो पखापखी सूं आंतरो राखै। लोक रा अै ई संस्कार म्हारी कवितावां रा आधार बण्या है। लोक री चाह अर राह म्हारी कवितावां रो तानो बानो बणावै।'

इण संग्रै मांय कुल बंयाळीस कवितावां है। भांत-भांत रै राग, रंग अर व्यंग सूं लबालब औ संग्रै पाठक नै वरतमान अर भविस री नयी दीठ देवण रै साथै इतिहास रै ऊजळै पानां रौ पाठ पढ़ावै। आजादी री इज्जत, लाखूं मात रुलाऊं ना, वाह पदमण बड़भागी, नमन धरा नागौर, चित्तौड़ दुर्ग, रंग-जोरावर रंग जैड़ी कवितावां वरतमान पीढ़ी खातर इतिहास री जात्रा ही नी तीरथ जात्रा कही जा सकै। अेतिहासिक कवितावां सीधी सपाट है। घटनावां अर चरित्रां री कीरत नैं कवि पाठक रै सामै राखतो लोक री लीक नैं सबद रै सहारै भाव विस्तार दियो है। कथ रै स्तर पर अरथ विस्तार री संभावना बणै भी कोनी ही अर न कवि अैड़ी सायास ल्यायोड़ी कारीगरी रौ हिमायती। जकी बात पाठक तक सीधी पहुँचणी चाहीजै, उणनै सीधी राखतो कवि पाठक सूं सीधो संवाद करै। भलां ही आलोचक-पख सारू इतिहासू कवितावां री दीठ ऊंडी नी बण सकी हो, पण इणरौ लोक पख ऊंडो भी है अर सांवठौ भी। कवि आपरै पाठक री इतिहास में बाँच्योड़ी बातां नै भावां री आँच में तपातौ गौरवगाथा रौ उद्‌घोष करै, उण बगत इतिहास आपरै खण्डहर खोळ सूं बारै निकळ जीवंत प्राणधारा रै रूप में राजस्थानी धरा री जै-जै कार करतो हाजिर हुवै। कवि अतीत रै व्यतीत नै वरतमान खातर संजीवणी रौ रूप देवै, जिणरै प्रमाण सारू औ दाखलो समीचीन निगै आवै-

म्हैं इतिहास में बाँच्योड़ी,
साचकली बात बताऊँ हूँ
घटना दर घटना भारत रै,
गौरव री गाथ सुणाऊँ हूँ
इण गौरवगाथा रै पानां में,
सोनलिया आखर म्हारा है
कटतोड़ा माथा धड़ लड़ता,
बख्तर अर पाखर म्हारा है
धारां धंसतोड़ा भड़ा बकां,
मर कर राखी है आजादी
सिंदूर दूध अर राखी री,
कीमत दे राखी आजादी
म्हे रीइया सिंधू रागां पर,
खागां री खनकां साखी है
इण आजादी री इज्जत नैं,
म्हैं राजस्थान्यां राखी है।।

(आजादी री इज्जत)

इतिहास री पटभूमि माथै कविता करतां थकां शक्तिसुत री कवि दृष्टि लोक सूं लगोलग जुड़्योड़ी रैवै है। इतिहास री घटनावां रौ लोकपख लाखूं मात रुलाऊं ना, वाह पदमण बड़भागी जैड़ी कवितावां मायं देख्यो जा सकै। युवा क्रांतिकारी प्रताप सिंह बारहठ पर काव्य गीत लिखतां कवि रै अंतस में आखै हिन्द री आवाज गूंजै। इण अंतस

www.rajsevak.com

गूंजती आवाज नै वाणी देवतो कवि राजस्थान री माटी रै कण-कण में बसी स्वाभिमान री सुगंध अर अमरत्व री अलख सूं पाठक रा संस्कार सिरजण करै। लाखूं मात रुलाऊं ना काव्य गीत पाठक रै सीधो कालजै ऊतरे। कविता बांचतौ पाठक अेक तरह सूं खुद रै भीतरं प्रताप रौ तप महसूस करै। आज रै भारत निरमाण खातर आपरी भूमिका तै करै। अेक तरह सूं आ कविता कर्त्तव्यबोध रौ काळजयी उद्घोष कही जा सकै है।

कविता रै सिरजण पख पर बात करां तौ इतिहास रै व्यक्ति चरित्रां पर कविता लिखणूं सबसूं अबखौ काम है। कारण औ है कै कविता री मूळ प्रवृत्ति सब्जेक्टिव हुवै अर व्यक्ति-चरित्र आपरै ऑब्जेक्टिव रूप रै मांय ही इतिहास रा अंग बणै। व्यक्ति-चरित्र पर कविता करतां पाठक-पकड़ ढीली होवण रौ खतरौ कवि रै सामै रैवै हे। पाठक नै इतिहास रै खण्डहरां सूं कविता रै जीवंत लोक मांय लावण खातर कवि नैं सबद, भाव अर संभावना रै स्तर पर घणी माथापच्ची करणी पड़ै। व्यक्ति-चरित्र पर कविता करणूं अेक तरह सूं सत्य सूं आगै संभावित सत्य री खोज हुवै है। इण खोज मांय पावण सूं ज्यादा खौवण रौ खतरो बण्यो रैवै। व्यक्ति-चरित्र पर कविता करण रौ काव्य-विवेक उण कवियां रै अंतस ऊपजै, जिकां कनैं आनंदवर्धन वाळी कवि दीठ हुवै-'अपारे काव्य संसारे कविरेकरू प्रजापतिय। यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते।'' (ध्वन्यालोक) अर्थात काव्य रौ संसार अपार हुवै है अर कवि उणरौ प्रजापति। औ विश्व उणनै जैड़ो रूचै वैड़ौ पळट देवै। इण दीठ सूं कवि शक्तिसुत री लाखूं मात रुलाऊं ना' जैड़ी कवितावां इतिहास री ओब्जेक्टिविटी रै साथै कविता री सब्जेक्टिविटी रौ जबरौ संतुलन साधै। मुग्ध पाठक नै इण बात रौ ठाह ही नी पड़ै कै कद वो इतिहास सूं आगै निकळ कविता री जमीं पर खड्यो माटी हित मरण री महिमा रौ साखीधर बणै-

है म्हारी जामण छत्राणी,
आँख्यां में पाणी नीं ल्यावै
वा दूध चूंघतै टाबर नैं,
माटी हित मरणो सिखलावै
माँ हालरिया हुलराती गाती,
उणरो दूध लजाऊँ ना
(इक) म्हारी मात हंसाबा खांतर,
लाखूं मात रुलाऊं ना।
(लाखूं मात रुलाऊँ ना)

आलोचकीय दीठ सूं म्हनैं इण संग्रै मांय लोक रै राग-रंग साथै व्यवस्था माथै व्यंग सूं जुड़ी कवितावां घणी आछी लागी है। कवि व्यक्ति, समाज अर सिस्टम री खामियां पर बात करतां आपरै अंतस री आवाज नैं दबाई नीं वरन खरी अर खारी बातां नै सबद-दुधारी बणावण में सफल हुयौ है। अनुभूति री जटिलता अर तनाव नैं अभिव्यक्ति देवतो कवि गीत अर गाळ रै अेक मुहावरै मायं कीरत अर अपकीरत री दीठ रौ दरपण पाठक रै सामै राखै। इण दीठ सूं 'अड़वां नै ओळभा' अर 'गीत लिखूं या गाळ लिखूं' जैड़ी कवितावां आपरै तीखै व्यंग रै साथै पाठक-मनोविज्ञान री ऊंडी समझ रौ-प्रमाण कही जा सकै है। कवि व्यवस्था री काळी करतूतां पर आँसू बहावण री जगह सीधो तकरार रौ अेलान करै। 'बीज अर माटी री बंतळ' रै बायनैं साहस रौ खुलौ आसमान पाठक री निजरां करै। 'मत करजे चूंकारो बापू' रै बायनैं कवि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी रै नाम माथै नकली गाँधी छाप राजनेता अर गांधी नाम री स्वारथ-सांकळां री पोल खोलतां गांधी रै जथारथ नै आपरा सबद देवतो कैवे-

धनवानां रै नोट रूप थूं/नेतावां रै वोट रूप थूं।
विद्वानां रै वाद-विमर्शां/दीन घरां लंगोट रूप थूं।

कविता री च्यार ओळ्याँ मायं कवि वर्तमान व्यवस्थ रै कूड़-कपट री खाल उधेड़'र राख दी। औ है कलम रो साच, जिणरी साख सरसावतौ कवि आपरी कलम नै 'हेली! कबहु न कूड़ कथीजे जैड़ी लोक-हामळ अर खुद नै बोल म्हनैं किण विध रोकैला जैड़ी लोक खातर तैयार करै। 'माणस अर माछर', 'चकवी अर चकवो' जैड़ी कवितावां मिनखपणै री गिरती साख रौ साफ संकेत करै तो 'बूढ़ा घर री साख हुवै' अर 'तीन कपूतां री महतारी' जैड़ी कवितावां पुराणी पीढ़ी रै बायनैं नयी पीढ़ी नैं साचकली दीठ रौ दरपण दिखावै। बूढ़ां-बड़ेरां रै मान-सम्मान री साख भरतो कवि बेबसी सूं आगै उकळती राख रौ भविस दरसण पाठक रै सामै राखै। कवि सुख खातर खाद बणन वाळां री हाय पर ल्यार आपरी कविता समेटै, ओ हैं शक्तिसुत री कवितावां रौ मिजाज जठै साच, साच ही नीं अंतस री आंच बण'र पाठक नैं भविस खातर वरतमान रौ जुगबोध करावै। सोभा, साख अर राख जैड़ा सबद कविता री लय सूं आगै जीवण री जथरथ अभिव्यक्ति रा सबदबाण बणै। अै सबद-बाण अैड़ा है जका ना अटकै, ना भटकै वरन ऊंडी मार करता सीधा काळजै रै आर-पार हुवै। कवि ठण्डी खाद नैं उकळती राख रौ रूप देवतौ साफ घोषणा करै-

कितरा समझौता स्वीकार्या,
जद आपां आबद हुया
आपां री सुख फसल फळाबा,
माटी रळ नैं खाद हुया
आं री दुआ सात सुखदायक,
हाय उकळती राख हुवै
(बूढ़ा घर री साख हुवै)

शक्तिसुत यथार्थ नै अभिव्यक्त करण रै साथै नये जथारथ रौ सिरजण करै। लोक रै कैबा नै नयो रूप देवै। लोक रै भीतर सूं कविता रौ नयो आलोक खोजै। दीखतै साच सूं संभावित साच री दीठ रचै। इण संग्रै मांय लोक आपरै कैबा सूं आगै पाठक रै भाव विस्तार रै साथै आपरौ अरथ विस्तार करै। 'अंतस री आवाज' री कवितावां अेक तरह सूं कथन री ही नी, कैबा री कवितावां भी कही जा सकै है। 'मरजादा मांदी व्हे बैठी', 'अंधियारै रो दास उजाळो', 'समदर नैं पाणी धमकावै' जैड़ा व्यंग रूप तो भाई मार भाभी रो नखरो, भांगण में भलियारी के' भलियारी के', 'आंख फोड़कर पीड़ मेटली, मेटण में मजदारी के' जेड़ा कैबा भाव रूप में पाठक रै अंतस बसै। शक्तिसुत रै कविता संसार मांय न अनुभव रौ तोटौ है अर न भासा रो भटकाव। कवि तनाव नैं सबद अर सबद नैं अरथ री असीम संभावना ताणी पुगावै। औ संग्रै कविता रै पाठकां खातर संग्रहणीय होवण रै साथै विचारणीय होवण री खिमता राखै। कथ अर कथन री सवाई सांख रै साथै आ पोथी कविता री पाठक तलास सूं आगै पाठक री कविता तलास नै पूरी करै। म्हनैं पतियारों है आ काव्यपोथी आज री राजस्थानी कविता रै छेत्र में आपरी ठावी ठौड़ कायम करसी। कवि 'शक्तिसुत' नैं म्हारी घणैमान बधाई।

समीक्षक : **डॉ. प्रकाशदान चारण**
सहायक आचार्य
03/01 काजरी आवास, काजरी, जोधपुर (राज.)
मो: 9829818922

मुगत आभौ

लेखक: **पुनीत कुमार रंगा;** प्रकाशक: **सुषमा प्रकाशन, नत्थूसर गेट के बाहर, बीकानेर (राज.)-334004;** संस्करण : **प्रथम, 2018;** पृष्ठ संख्या : **92;** मूल्य : **₹150।**

आकाश तो मुक्त ही होता है और शायद इसलिए असीम भी। बंधे बंधाएं तो हम होते हैं- अपने क्षुद्र विचारों की काराओं में, अपनी परिस्थितियों के पिंजरों में, आत्म को ना पहचान

www.rajsevak.com

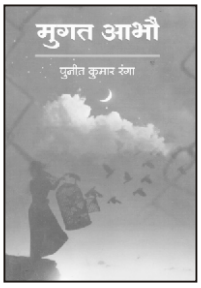

पाने की अपनी विवशताओं में। यही कारण है कि सीमाओं में तड़फड़ाते हमें उन्मुक्त आकाश का आह्वान उपलब्ध नहीं होता, पर युवा कवि पुनीत रंगा अपने पहले ही राजस्थानी कविता संग्रह 'मुगत आभौ' में आत्म को पहचान कर अपने पंखों की ताकत को तौलते हुए मुक्त आकाश में उड़ने के लिए बेचैन दिखाई देते हैं।

कविता संग्रह 'मुगत आभौ' में कुल 63 कविताएं हैं जो दो खंडों में विभाजित हैं। पहले खंड 'खोज मिनखपणे री' में कवि का भोक्ता पक्ष प्रबल है जो उसके जीवनानुभवों से जुड़ा है। इस खंड की कविताओं के गर्भ में एक संवेदनशील मन की पीड़ा अंतःसलिला नदी की भांति अनवरत प्रवाहमान नजर आती है तो दूसरे खंड 'अबै चावूं हूँ' में कवि का द्रष्टा पक्ष सामने आता है। कवि इस खंड में तकनीक के संसर्ग और बाजार के प्रभाव से बदल रही रिश्तों की गुणवत्ता की तरफ इशारा करता हुआ दिखाई देता है तो साथ ही बाहरी परिवर्तनों को भी रेखांकित करता है।

अनुभव उम्र का मोहताज नहीं होता। जीवन को जीने की त्वरा, समझ और परिस्थितियाँ कम उम्र में भी इंसान को अनुभवों का अनमोल खजाना बख्श देती है। ऊष्मा खो रहे आज के रिश्तों का सच कवि बहुत स्पष्टता के साथ 'रिश्ता' कविता में बयान करता है-'काल तांई/जिको/उफणतो हो/थारै म्हारै बिचै /एक महासागर/आज/उण माथै/जमगी है/ बरफ री/एक मोटी चादर/दूर-दूर तांई/एक अणटूटतौ सरनाटौ/अणभोग्यौ सूनोपण/ अणसैयो अणजाणोपण।' जब वह रिश्तों को परखना चाहता है तो एक बहुत कड़वा सच उसके सामने आता है जिसे वह 'खुद रो कुण?' कविता में कुछ इस तरह बयान करता है- 'जद बो/ओ परखणो चावै कै/आपणां में /कुण है आपणो/तद/बो चावै कै/उणी पल/आत्महत्या कर लूं।' परन्तु खुद को पकाने के लिए दरद नीं तो म्हैं नहीं कहता हुआ कवि यह भी स्वीकार करता है कि उसका भोगा हुआ दर्द ही उसे परपीड़ा अनुभव कर पाने की सामर्थ्य देता है। देखा जाए तो यही संवेदनशीलता मनुष्य होने की अनिवार्य शर्त है।

कवि जानता है कि सपने ही मनुष्य को जिंदा रखते हैं, तभी तो 'आंख्यां रा सुपना' कविता में वह कहता है-'बा आंख/ भगसाळी है/जिण में सुपना आवै।' पर उसे उन लोगों से भी गहरी सहानुभूति है जिनके सपने अधूरे ही टूट जाते हैं।

कवि की नजरें मानव व्यवहार के सामने उपस्थित सच ही नहीं देखती, बल्कि पीछे जाकर उन कारणों की भी गहराई से पड़ताल करती हैं जो उस व्यवहार के मूल में हैं तभी तो वह कह पाता है- 'जिंदगी री/घुटण-टूटण/अंतस में/ उगा देवै है/ एक नीम रो दरखत/जिण रो खारोपण/घुळतौ रैवे है/ हर सांस सांस में।'

अपने लक्ष्य का अनुगमन करने वाली एकलव्यी श्रद्धा का अभाव कवि को अखरता है और इसीलिए इंसान की समझौतावादी जीवन शैली पर तंज कसता वह कहता है-'आजकाले /आपा/चित्रा रै मुजब/कैनवास नी लावा/ कैनवास रे मुजब/चित्र रचा हां/बस/कैनवासी चित्र।'

जीवन के कड़वे अनुभवों के बावजूद कवि नकारात्मक नहीं है। वह आने वाले कल के लिए आस्थावान है। कविता 'नुंवो पत्तौ, नुंवौ विसवास' में वह कहता है- 'रोवण सूं ओ पत्तौ/ पूठो तो/नीं लाग सकै/फेर/नुंवै उगणवाळै/ पत्तै रै/ जनम अर जिंदगी नै/ आंसुवां सूं क्यों/भिजोऊ?' राजनीति में बढ़ती अवसरवादिता और स्वार्थ को देखकर आज आम आदमी खुद को छला हुआ सा महसूस करता है। आम आदमी की इसी पीड़ा को जुबान देते हुए कवि कहता है 'थूं मांगी/म्है सूं/म्हारी आवाज/म्हैं कर दियो/कापीराइट/म्हारी जुबान रो और फिर 'अबै बता म्है कठै हूँ' कहकर वह सत्ता से सीधा-सीधा जवाब मांगता है।

कवि साहित्यकारों की अपनी बिरादरी को भी नहीं बख्शता। कविता 'सबद संगति' में उन्हें उनके लेखकीय उत्तरदायित्व के प्रति सचेत करता हुआ वह पूछता है कि क्या उनकी कोई भी रचना किसी एक भी व्यक्ति को सही मार्ग दिखा पाई है? संवेदना का सूखता सरोवर कवि के लिए महती चिंता का विषय है। सामाजिक विसंगतियों और इंसान के दोगलेपन की बात करते हुए उसका स्वर व्यंग्य के स्पर्श से थोड़ा वक्र हो जाता है। कविताएं 'करमवीर आपां' और 'सांचै में ढाळ लै', 'पौसाकी दुनिया', 'हवाई दरद' इस वक्रता के सुन्दर उदाहरण हैं। कविता 'सिंथेसिस' तो आज की दुनिया का सत्य बयानती अंग्रेजी शब्दों के साथ बेहद प्रभावी कविता है। कुछ छोटी कविताएं जैसे 'घुटण', 'चुभण खार री', 'खुशामद', 'कुरसी', 'राजकुरसी' कम शब्दों में प्रभावशाली कविताएं हैं जो कवि की गहरी जीवन दृष्टि की साख भरती हैं।

सृष्टि के किसी प्राणी का दर्द कवि की संवेदनापूर्ण नजरों से अनदेखा नहीं रहता। यह उसके कविधर्म की मांग भी है और सार्थकता भी। नगों को तराशकर हीरा बनाने वाले मेहनती हाथों की अवहेलना और अनगिनत लोगों की प्यास बुझाने की चाहना से भरे 'अंधे कुंए' का दर्द भी कवि को चुभता है। 'जंगल ठूंठा रो' कविता में तो कवि का कथन कि 'आपां/बो रैया हां/बीज/सदाबहार/दरखतां रा/पण/उगता जा रैया है/ठूंठ एक बहुत गहरा और चुभने वाला सच बयान करता है और हमारे कर्मों का पुनरावलोकन करने की मांग करता है ताकि हम जांच सकें कि हमसे गलती कहाँ हो रही है। क्यूं हरे वृक्षों की जगह ठूंठ उग रहे है?

मनुष्य की कीमत 'वह क्या है' इससे नहीं आंकी जाती, बल्कि वह क्या होना चाहता है इससे आंकी जाती है। कवि का मोल भी उसकी इस चाहना से कई-कई गुना बढ़ जाता है तब वह 'मुगत आभो' कविता में अपनी काराओं से मुक्ति के लिए छटपटाहट अनुभव करता है और कहता है 'खुद रै छोटे से जीवन में/चावूं हूं/ चौफेर रै/वातावरण नै/रंग रंगीलो कर दूं/सौरभ फैलाय दूं/ताजगी बधा दूं/अर फेर/झर ही बण जाऊं/जड़ां री खाद/पूठो/नुंवो फूल/खिलावण नै।' कवि के अंतस का यह फैलाव ही उसे मुक्त आकाश में प्रवेश का अनुमति पत्र उपलब्ध करवा देता है, क्योंकि असीम में प्रवेश असीम होकर ही पाया जा सकता है और यह असीमता मन की उदारता में निहित होती है। कविताएं अतुकांत, गहरी और ताजगी लिए हुए हैं। बहुत सहज प्रवाह में लिखी गई ये कविताएं राजस्थानी भाषा की सौरभ पाठक मन के नासापुटों तक पहुँचाने में सक्षम हैं। अंततः कवि को बधाई देते हुए मैं मंगलकामना करती हूँ वे निरंतर रचें, उनकी कविताओं की अनुभूतियां और अधिक गहरी हों तथा राजस्थानी की मठोठ कविता के रोमछिद्रों महमह महके।

समीक्षक : **डॉ. रेणुका व्यास**
व्याख्याता, अंग्रेजी
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर (राज.)
मो: 9414035688

www.rajsevak.com

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

लकड़ियों का गट्ठर

किसी गाँव में एक जमींदार रहता था। वह इतना अमीर था कि गाँव के सभी इन्सान उसे सबसे अमीर और सुखी इन्सान समझते थे। उसके तीन बेटे थे, वो थे तो सुन्दर लेकिन वो आपस में हमेशा झगड़ते रहते थे, उनकी कभी नहीं बनती थी। एक दिन किसान के मन में एक विचार आया और वो एक लकड़ियों का गट्ठर ले आया।

उसने अपने बेटों को बुलाया और उसे बारी-बारी से तोड़ने के लिए कहा। प्रत्येक ने पूरी कोशिश की लेकिन नहीं तोड़ पाए और उन्होंने हार मान ली और जमींदार ने उस गट्ठर को खोल दिया और एक-एक कर तोड़ने के लिए कहा तो उन्होंने कहा ये कार्य तो सरल था और उन्होंने ये कार्य बहुत ही सुविधापूर्वक कर लिया। बड़े बेटे ने उत्सुकतापूर्वक पूछ ही लिया। बेबात आपने हमें तोड़ने के लिए क्यों कहा।

जमींदार मुस्कुराया और बोला बच्चों तुम भी इन लकड़ियों की तरह हो; तुम्हारा आपस में प्यार है तो किसी भी तरह के संकट का सामना कर सकते हो परन्तु यदि तुम इसी तरह लड़ते रहोगे और आपस में बंटे रहोगे तो इन्हीं लकड़ियों की तरह तुम भी टूट जाओगे। तीनों बेटों को बात समझ में आ गई कि उनके पिता उन्हें क्या समझाना चाहते हैं। उन तीनों ने कभी आपस में ना लड़ने का वचन लिया।

शिक्षा-एकता में बल है।

देव कंवर, कक्षा-12
रा.उ.मा.वि. बिशनगढ़, जालोर

शिक्षा

बहुत जरूरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा।
चाहे जितना पढ़ ले हम,
कभी न होती पूरी शिक्षा।।

शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर, शिक्षक।
वैज्ञानिक, मंत्री व्यापारी,
या साधारण रक्षक।।

कर्त्तव्यों का बोध कराती,
अधिकारों का ज्ञान।
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वोपरि सम्मान।।

बुद्धिहीन को बुद्धि देती है,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान।।

खुशबु कंवर
कक्षा-11
रा.उ.मा.वि., बिशनगढ़, जालोर

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।
-वरिष्ठ संपादक

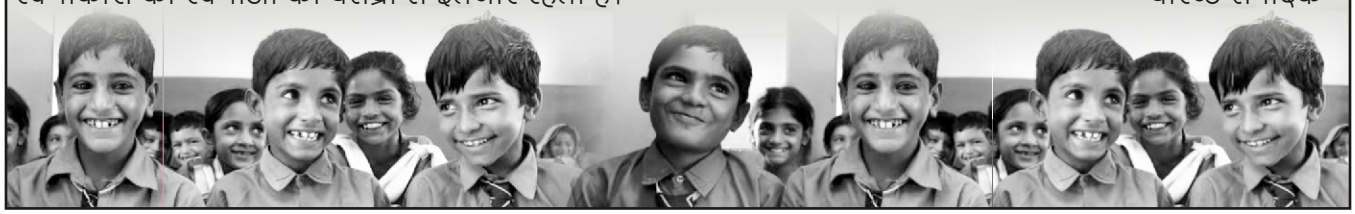

www.rajsevak.com

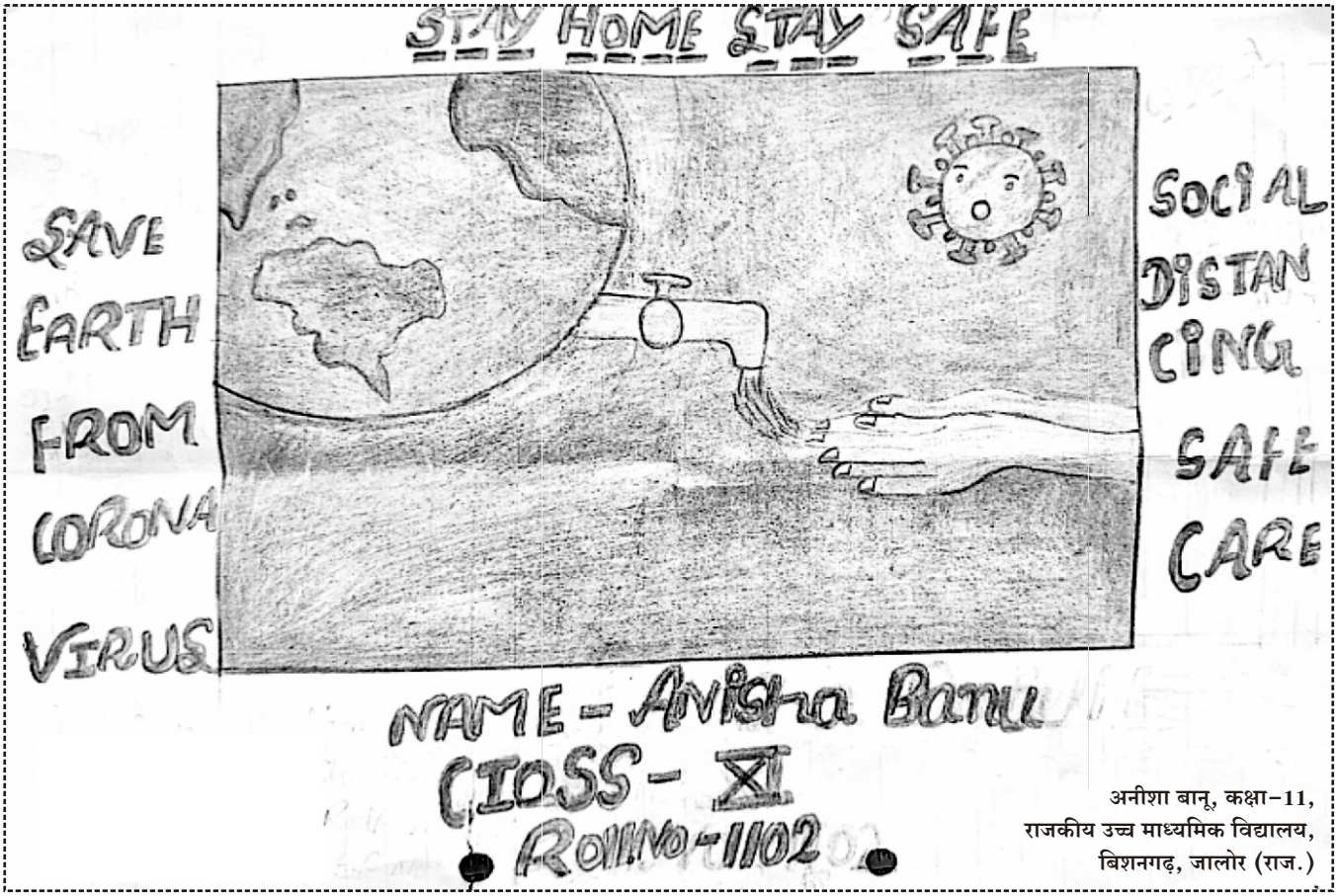

अनीशा बानू, कक्षा–11,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बिशनगढ़, जालोर (राज.)

सशक्त हुई है नारियाँ

भ्रूण हत्या, बाल विवाह से
ग्रसित हुई हैं नारियाँ
घरेलू हिंसा, ताना-बाना
सह रही हैं नारियाँ।

ऐसा कोई क्षेत्र नही जहाँ
नहीं पहुँची हो नारियाँ
सदियों पुरानी जंजीरों को
तोड़ रही हैं नारियाँ।

नारी सशक्तिकरण के दौर में
बढ़ रही हैं नारियाँ,
देश की सीमा या अंतरिक्ष में
सब जगह हैं नारियाँ।

बहुत सही है अपमान और
बहुत सही हैं गालियाँ,
वैश्यावृत्ति दास प्रथा से
दुःखी हुई हैं नारियाँ।

अपने हक की सब लड़ाई
लड़ रही हैं, नारियाँ
जो चाहा वो हर मंजिल
पा रही हैं नारियाँ।

गलत फहमी को दूर हटाओ
सशक्त हुई हैं नारियाँ
पहले जैसी अबला अब
नहीं रही हैं नारियाँ।।

एक शिक्षित महिला के पास ऐसी शक्ति होती है जिससे वह अपने परिवार को शिक्षित बना सकती है।

दीपिका गर्ग, कक्षा-12
रा.उ.मा.वि. बिशनगढ़, सायला, जालोर (राज.)

www.rajsevak.com

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

राज्यस्तरीय पर्यावरण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

जयपुर– महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय आदर्श नगर में राज्यस्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2020-21 का ऑनलाइन आयोजन किया गया। वर्चुअल विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान से दिनांक 23 मार्च से 26 मार्च को हुआ। अब तक आयोजित किए गए अपने ही भव्य स्वरूप को पीछे छोड़ते हुए नया इतिहास रचते हुए सजे हॉल में वर्चुअल विज्ञान प्रदर्शनी प्रधानाचार्य श्रीमती सर्वत घानो के संयोजन में आयोजित की गई। जिसमें सभी प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन करवाई गई। इसमें कुल प्रतिभागियों की संख्या लगभग 375 रही। माँ सरस्वती का माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ ही मुख्य अतिथि श्री रतन सिंह यादव, गरिमामय मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रियंका जोधावत (निदेशक आरएससीईआरटी), सना सिद्दीकी (उपायुक्त), समसा एवं रा. स्कूल शिक्षा परिषद ने कार्यक्रम का आगाज किया। इस कार्यक्रम में मुख्य संरक्षक माननीय श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा एवं संरक्षक श्रीमती अर्पणा अरोरा, प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा (राजस्थान), श्रीमान वी. सरवन कुमार, डॉ. भंवर लाल एवं श्रीमान सौरभ स्वामी निदेशक (माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान) रहे। मेल सचिव श्रीमती मन्जू कुमारी व्याख्याता महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय आदर्श नगर रही।

कोरोना वैश्विक महामारी के चलते राजस्थान में प्रथम समय ऑनलाइन राज्यस्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय आदर्श नगर में किया गया। इस वर्चुअल कार्यक्रम में प्रथम दिवस उद्घाटन के पश्चात क्विज प्रतियोगिता क्वालिफाइंग राउंड, प्रादर्श प्रतियोगिता (जूनियर वर्ग) रखी गई। द्वितीय दिवस को क्विज प्रतियोगिता, मौखिक अभिव्यक्ति फाइनल राउंड, प्रादर्श प्रतियोगिता (सीनियर वर्ग) हुई। तृतीय दिवस को वार्ताकार श्रीमती शुचि शर्मा (पूर्व सचिव उच्च एवं तकनीकी शिक्षा) एवं श्री सैयद एम. अली प्राचार्य (रामचन्द्र खैतान रा. पोलोटेक्निक महाविद्यालय जयपुर) द्वारा वर्चुअल वार्ता हुई। वार्ता का विषय 'दैनिक जीवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का क्रियान्वयन' रहा। विज्ञान मेले के समापन समारोह में माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्रीमान सौरभ स्वामी, आरसीईआरटी की निदेशक श्रीमती प्रियंका जोधावत ने वर्चुअल हिस्सा लेकर प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दी। प्रियंका जोधावत द्वारा प्रतियोगिता परिणाम की घोषणा की गई जिसमें 14 से 11 प्रतियोगिताओं में बालिकाओं का वर्चस्व रहा। समापन समारोह में अध्यक्ष एम. आर. बगडिया जी (अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक) रहे एवं उपनिदेशक आरसीईआरटी श्री ललित शंकर आमेटा जी ने आभार व्यक्त किया। अंत में प्रधानाचार्य श्रीमती सर्वत बानो द्वारा धन्यवाद ज्ञापित दिया गया।

राउमावि. बेरडों का बास में महिला दिवस पर माँ बेटी सम्मेलन का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेरडों का बास में माँ बेटी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त विद्यार्थियों की माताओं सहित विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती देवी बिजानी की माता श्रीमती सीता देवी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस सम्मेलन में विद्यार्थियों की माताओं से उनकी शैक्षिक प्रगति के बारे में चर्चा की गई साथ ही विद्यार्थियों की शिक्षा एवं समाज की प्रगति में महिलाओं के योगदान की चर्चा की गई तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती सीता देवी के हाथों विजेता माताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। प्रतियोगिताओं के एक राउंड में माताओं से उनके बच्चों के बारे में तथा सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे गए और बड़े ही हर्ष का विषय रहा कि अधिकतर महिलाएं अनपढ़ थी परंतु उन्हें एमएलए, मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री आदि का नाम पता था। इसके अलावा टंग ट्विटर तथा बिंदी लगाओ जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। समस्त माताएँ कार्यक्रम में बहुत उत्साहित थीं तथा अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही थीं।

कोविड-19 टीकाकरण अभियान में ग्रामवासियों ने उत्साहपूर्वक टीकाकरण करवाया।

सीकर–राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी में कोविड-19 टीकाकरण अभियान में ग्रामवासियों ने उत्साहपूर्वक टीकाकरण करवाया तथा विद्यालय स्टाफ के सदस्यों ने टीकाकरण करवाया तथा ग्रामवासियों को टीकाकरण के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर ग्राम पंचायत सांवलोदा धामलान सरपंच पति श्री बिजेन्द्रसिंह शेखावत ने सभी

www.rajsevak.com

को मास्क वितरण किए तथा कोरोना गाइडलाइन की पालना करने की ग्रामवासियों से अपील की। प्रधानाचार्य बीरबल सिंह, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शारीरिक शिक्षक भंवर सिंह, महिला चिकित्साकर्मी सर्वश्री/श्रीमती सुमिता, मीरा देवी, इन्दिरा देवी, चिरंजीलाल शर्मा, रामदेव सिंह थालौड़, जितेन्द्र, रामलाल गोदारा आदि ने टीकाकरण में सहयोग प्रदान किया तथा सभी ग्रामवासियों से टीकाकरण के लिए ज्यादा से ज्यादा वैक्सीन लगवाने के लिए प्रोत्साहित किया। जिससे ग्राम सांवलोदा लाडखानी को कोरोना मुक्त रखना है। कोरोना हारेगा भारत जीतेगा। कोरोना टीकाकरण अभियान को शत-प्रतिशत सफल बनाने की सभी ने अपील की। सबसे पहले टीकाकरण शिक्षक भंवर सिंह ने करवाया। टीका लगवाने के बाद प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत व समस्या नहीं हुई। उसके बाद टीकाकरण के लिए ग्रामवासियों को प्रोत्साहित किया। सभी स्टाफ सदस्यों ने तथा ग्रामवासियों ने उत्साहपूर्वक टीकाकरण करवाया।

भामाशाह द्वारा विद्यालय को प्रिंटर भेंट

नागौर- भामाशाह श्री रामकिशोर झींझा (कॉपरेटिव चेयरमैन) द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय किला (रिया बड़ी) नागौर को प्रिंटर भेंट किया। इस अवसर पर संस्थाप्रधान श्री चंद्रवीर सिंह राठौड़ ने बताया कि यह कार्य अनुकरणीय एवं सराहनीय है उनके द्वारा माला पहनाकर भामाशाह का स्वागत किया। इस मौके पर शिक्षक सर्वश्री कैलाश झींझा, रामनिवास हुड्डा, तुहिना प्रकाश, सुधा शेखावत, किशोर परसरिया, नाथूलाल, चेनाराम, रवि कुमार, रविन्द्र बड़गुजर व उपसरपंच बाड़ी घाटी शिवराज गुर्जर एसएमसी अध्यक्ष संपत राम, ग्रामीण हनुमान गुर्जर, संपतराम गुर्जर, सियाराम झींझा आदि मौजूद थे।

सांगरिया विद्यालय में जल मंदिर लोकार्पण

चित्तौड़गढ़-अखिल विश्व गायत्री परिवार हरिद्वार के तत्वधान में पूज्य गुरुदेव श्री राम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीय माताजी भगवती देवी शर्मा के आशीर्वाद एवं प्रेरणा स्वरूप गाँव-सांगरिया (बड़ीसादड़ी) में गोपाल सोनावा द्वारा हीरा-सूरज जल मंदिर बना कर स्कूल के छात्रों को लोकार्पण किया। उक्त जल मंदिर स्वर्गीय हीरा लाल जी सोनावा और उनके अनुज सूरज मल जी सोनावा की पुण्य स्मृति में बना कर जिसमे उपस्थित राष्ट्रीय प्रवक्ता साहू महासभा श्री जगनाथ सोलंकी एवं निम्बाहेडा पार्षद श्री बन्सी लाल जी राइवल, सांगरिया सरपंच श्री अंबालाल जी गुर्जर, प्रधान श्री नंद लाल जी मेनारिया, सांगरिया विद्यालय प्रधानाचार्य श्री सवाई लाल जी मीणा एवं सम्पूर्ण विद्यालय स्टाफ, गोपाल सत्संग आश्रम के पीठाधीश श्री श्री 1008 स्वामी सुदर्शनाचार्य जी एवं सोनावा जी परिवार से उनकी दाई माँ भागवंती देवी बाई एवं माताजी हीरा बाई, अनुज भ्राता नवीन सोनावा पार्षद बड़ी सादड़ी, श्री सोनावा जी धर्मपत्नी श्रीमती चंदा साहू, पुत्री श्री यशोदा-जमाई रवि जी, पुत्र श्री रवि कुमार साहू राजेश साहू एवं समस्त सोनावा परिवार की उपस्थिति में संरक्षण में शुभारंभ किया एवं सामाजिक एवं प्रेरणात्मक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहे।

'परिंडा लगाओ-परिंदा बचाओ' अभियान के तहत सेल्फी विद परिंडा की शुरुआत

मोकलसर-वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान दूसरी लहर के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए 'जन अनुशासन पखवाडा' के तहत लॉकडाउन में आमजन अपने घरों में सुरक्षित हैं। इधर ग्रीष्मकालीन में प्रकृति के वातावरण को रंगीनमय बनाने के लिए छोटे-छोटे पंछियों को तीक्ष्ण धूप में अन्न-जल की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वरिष्ठ अध्यापक श्री कुमार जितेन्द्र 'जीत' द्वारा संचालित सोशल मीडिया का चर्चित प्लेटफार्म जीत के अल्फाज़ यू ट्यूब चैनल पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत पंछियों की मदद करने के लिए परिंड़ा लगाओ-परिंदा बचाओ के तहत सेल्फी विद परिंडा अभियान की शुरुआत की गई। इस अभियान में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों और युवाओं ने अपनी भूमिका निभाई। घर में अनुपयोगी वस्तुओं एवं मिट्टी के परिंडे तैयार कर घर की छत और पेड़ पौधों पर परिंडे लगाकर सराहनीय कार्य किया। जिसमे बालिका विद्यालय मोकलसर की छात्राएँ भूमिका सोनी, गौरी सोनी, नीतू कुमारी, मोनिका वैष्णव, प्रज्ञा शर्मा और जसवंत मोकलसर, राकेश लीलावत जोधपुर, शिक्षक हुकमचंद जोधपुर, कृषि पर्यवेक्षक मोकलसर दीपक परिहार, कुमार जितेन्द्र जीत ने पंछियों के लिए चह-चहाने तथा उनके दाना-पानी की व्यवस्था में अपना अमूल्य योगदान दिया।

स्काउट्स द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह को नशा उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति का संदेश दिया

www.rajsevak.com

राजसमंद– कुंभलगढ़ पंचायत समिति के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमरवास में स्काउट द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह को नशा उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति का संदेश दिया गया। प्रधानाचार्य श्री जयप्रकाश स्वामी ने बताया कि प्रधानमंत्री स्काउट शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत स्काउट प्रभारी श्री विक्रम सिंह शेखावत के मार्गदर्शन में वर्षपर्यंत नशा उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति विषय पर कार्य कर रहे हैं इस संदर्भ में स्काउट प्रभारी एवं 20 स्काउट द्वारा उमरवास ग्राम पंचायत के महिला स्वयं सहायता समूह की तीस महिलाओं को नशा उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति विषय पर जन जागरूकता संबंधी कार्य करने के लिए संदेश दिया। स्काउट प्रभारी द्वारा स्वयं सहायता समूह की सदस्यों को समाज में नशे से होने वाली हानियाँ एवं दुष्परिणामों से अवगत कराया। वर्तमान समय में समाज से नशे की बुराई को दूर करने की महती आवश्यकता पर बल दिया। प्रधानाचार्य ने स्वयं सहायता समूह की सदस्यों से आग्रह किया कि स्वयं सहायता समूह के द्वारा ग्राम पंचायत में क्षेत्र में नशे की बुराई को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर अध्यापक श्री सुरेश चंद्र जाटव द्वारा कविता के माध्यम से नशा उन्मूलन का संदेश दिया। कार्यक्रम में स्काउट मास्टर श्री हेमराज सैनी ने महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्यों का स्वागत एवं आभार प्रकट किया। इस अवसर पर श्री दुर्गेश सिंह सोलंकी, श्री पवन कुमार भाट आदि उपस्थित थे।

स्काउट गाइड ने मनाया योग दिवस

डूँगरपुर– राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूंगरपुर के तत्वावधान में योग दिवस मनाया गया। सी.ओ. स्काउट सवाईसिह ने बताया कि योग दिवस पर स्काउट गाइड द्वारा कोविड 19 गाइड लाइन की पालना करते हुए योग किया। इस अवसर पर ऑनलाइन स्काउट गाइड को सम्बोधित करते हुए स्काउट मास्टर श्री ललित कुमार बरण्डा ने योग का जीवन में महत्त्व बताते हुए योग पर विस्तृत प्रकाश डाला और युवाओ से प्रतिदिन योग करने का आवाहन किया। जिले में योग प्रशिक्षक स्काउट मास्टर श्री पुरोशतम पुरोहित ने राउमावि नंदौड, श्री कारूलाल तेली राउमावि पाल निठाउवा, श्री सुभाष रावत प्रिसिपल राजकीय इग्लिश मीडियम स्कुल फलोज, श्री वासुदेव राउमावि बाबा की बार में एवं रोवर स्काउट विमेश सोमपुरा, अविनाश, कपिल ने अपने घर से योग किया।

अंतर्राष्ट्रीय एस्टेरोइड सर्च कैंपेन में भाग लिया

रा.उ.मा.वि. उन्हेल (सुनेल) की दो टीमों के कुल 10 विद्यार्थियों ने अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के अंतर्राष्ट्रीय एस्टेरॉइड सर्च कैंपेन में भाग लिया तथा 12 एस्टेरोइड की प्रेलिमिनेरी खोज की। कार्यवाहक

प्रधानाचार्य दिनेश कुमार ने बताया कि उक्त अभियान में टीम लीडर दिव्येन्दु सेन (व्याख्याता, जीव विज्ञान) समेत 2 टीमों, टीम 1 में कक्षा 11 के असफिया अली, दीपक कुमार, कविता कुमारी, शिमला कुमारी, शाहनवाज खान तथा टीम 2 में कक्षा 10 के हर्षिता दांगी, कोमल कुंवर, संजय कुमार तथा सुगंधा कुमारी ने भाग लिया जिन्हें नासा द्वारा जारी प्रमाण पत्र प्रदान किए। टीम लीडर एवं व्याख्याता दिव्येन्दु सेन ने बताया कि पृथ्वी पर पिछले कई दशकों में एस्टेरॉइड (उल्कापिंडों) के गिरने से कई बड़ी हानियाँ व जान माल का नुकसान हुआ है। इस हेतु नासा तथा आई ए एस सी आम नागरिकों/विद्यार्थियों/शोधार्थियों को ये अवसर देता है कि वो भी सिटीजन साइंटिस्ट के रूप में एस्टेरॉइड खोजे, जो जंगल और बृहस्पति ग्रह के बीच पाए जाते हैं। इसके लिए एस्ट्रोमीट्रिका सॉफ्टवेयर का प्रारंभिक ज्ञान आवश्यक है। नासा, आईएएससी के सहयोग से वर्षभर ऐसे कैंपेन का आयोजन करवाता है।

पिछले वर्ष आयोजित कैंपेन में देशभर में खोजे गए एस्टेरॉइड में से मात्र 2 एस्टेरॉइड ही गहन विश्लेषण के बाद मापदंड पूरा कर पाए तथा मेन बेल्ट एस्टेरॉइड की श्रेणी में सम्मिलित हुए। जिसमें से एक एस्टेरॉइड उन्हें की टीम अक्षिता कुमार, उषा कुमारी तथा कुसुमलता कुमारी ने खोजा। इसको नासा के माइनर प्लेनेट सेण्टर के डेटाबेस में दर्ज कर लिया गया है। ये टीम के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। अगले कुछ वर्षों में इसका ऑर्बिट (कक्ष) खोजा जाएगा फिर इसे अपना नाम देगी। टीम के अनुसार अंतरिक्ष में अपने नाम का तारा (एस्टेरॉइड) होना सुखद अनुभव होता है। व्याख्याता दिव्येन्दु सेन ने बताया कि भाग लेने वाली टीमों को सॉफ्टवेयर कुशलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के अलावा प्रारंभिक एस्ट्रोनॉमी की समझ का विकास तो होता ही है साथ ही नासा तथा आई ए एस सी द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं, अभियान की सबसे अच्छी बात ये है कि टीम अपने अनुसार खोजे गए एस्टेरॉइड को अपना नाम दे सकती है। इस एस्टेरॉइड के डाटा के आधार पर शोधार्थी अपना शोध पत्र भी प्रकाशित कर सकते हैं।

स्काउट्स द्वारा महाराणा प्रताप जयंति पर रक्तदान

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 481 वी जयंती पर स्काउटर्स द्वारा रक्तदान किया गया। सीओ. स्काउट छैल बिहारी शर्मा ने बताया कि आरके जिला चिकित्सालय में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय दिवेर के प्रधानाचार्य गणेशराम बुनकर एवं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मावा का गुड़ा कुंभलगढ़ के प्रधानाध्यापक विक्रम सिंह शेखावत ने रक्तदान किया। स्काउटर विक्रम सिंह शेखावत द्वारा पूर्व में 10 बार रक्तदान किया जा चुका है। स्थानीय संघ कुंभलगढ़ स्काउट्स के उपप्रधान राधेश्याम राणा

www.rajsevak.com

ने रक्तदान करने पर स्काउट का स्वागत सम्मान किया साथ ही अन्य स्काउट्स ने भी जरूरत पड़ने पर तत्काल रक्तदान का संकल्प लिया। इस अवसर पर मुख्य खंड शिक्षा अधिकारी कुंभलगढ़ मोहनलाल बलाई, ब्लड बैंक के डॉक्टर महावीर प्रसाद मीणा, श्रीमती सुमन शर्मा, मुकेश कुमावत आदि उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर लाइव प्रश्नोत्तरी का आयोजन

मोकलसर– 21 जून सोमवार को 7वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव पर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जीत के अल्फाज़ यू ट्यूब चैनल द्वारा योग दिवस पर आधारित लाइव प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जीत के अल्फाज़ यूट्यूब चैनल के संचालक वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र जीत ने बताया लाइव प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में योग दिवस पर आधारित प्रश्न पूछे गए। जिसमें विद्यार्थियों और युवाओं ने भाग लेकर प्रश्नों के उत्तर दिए गए। लाइव योग दिवस प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में प्रथम स्थान पर बालिका विद्यालय मोकलसर की कक्षा 9 वीं की छात्रा नीतू कुमारी, द्वितीय उर्मिला प्रजापत कक्षा 10 वीं, तृतीय मोनिका वैष्णव कक्षा 9 वीं रही है। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में भूमिका सोनी, गौरी सोनी, चेतन मेघवाल का कार्य भी सहरानीय रहा। बालिका विद्यालय मोकलसर के प्रधानाचार्य सुरेश कुमार सोलंकी द्वारा सभी विजेता बालिकाओं का हौसला अफजाई किया गया। इस अवसर व्याख्याता श्री जगदीश विश्नोई, श्री भरत कुमार सोनी, श्री फरसा राम मेघवाल, वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र, अध्यापिका सजना कुमारी, सुधा रैया, लिपिक जेठु सिंह, मुकेश कुमार सहित विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहे तथा जीत के अल्फाज़ यू ट्यूब चैनल की ओर से सभी बालिकाओं को पुरस्कार किया गया।

वर्चुअल मनाया ब्लॉक स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-2021

जयपुर– दिनांक 21.06.2021 को राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स स्थानीय संघ बस्सी द्वारा गूगल मीट पर ब्लॉक स्तरीय अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस–2021 'योग के साथ रहो, घर पर रहो (Be with Yoga, Be at Home)' थीम पर योगाचार्य डॉ. सुधीर भारद्वाज एवं योगाचार्यों द्वारा प्रोटोकोल के अनुसार योगाभ्यास करवाया। स्थानीय संघ के प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर (स्काउट) श्री दामोदर प्रसाद तिवाड़ी ने अपने उद्बोधन में योग की महत्ता पर प्रकाश डाला और इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के संयोजक श्री पवन शर्मा, सचिव स्थानीय संघ बस्सी ने योगाचार्यों द्वारा प्रदर्शित किए गए सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम एवं योगासनों के लिए योगाचार्यों का एवं मीटिंग में उपस्थित हुए सभी संभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही सचिव श्री शर्मा ने बताया कि वर्चुअल कार्य करने वाले सभी संभागियों की डिजिटल प्रमाण पत्र जारी किए गए। कार्यक्रम में जयपुर जिला स्काउट गाइड के सी.ओ. श्री ब्रजसुन्दर मीणा, स्थानीय संघ बस्सी के चैयरमेन श्री फूलचंद दुलारिया, सहायक सचिव श्री प्रकाश शर्मा, स्काउटर श्री नरेश भारद्वाज सहित ब्लॉक बस्सी के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधान, स्काउटर, गाइड कैप्टन, स्काउट–गाइड, रोवर एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शिविरा - एक परिचय

राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित मासिक शिविरा पत्रिका (Shivira Patrika) जूलाई, 1966 से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में शिक्षा विभागीय मासिक आदेश–परिपत्र एवं दिशा–निर्देश, साहित्यकारों व शिक्षकों तथा शिक्षा अधिकारियों के आलेख, नवाचार एवं शैक्षिक चिन्तन संबंधी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। स्थाई स्तम्भों में नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा, शाला प्रांगण के माध्यम से विद्यालयों में आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों का प्रकाशन, हमारे भामाशाह के अन्तर्गत विद्यालयों में भामाशाहों के दिए गए सहयोग का जिलेवार प्रकाशन। बाल शिविरा के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनाएँ भी हाल ही में प्रारम्भ की गई हैं। विशेषांक में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, बाल साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य की श्रेष्ठत्तम रचनाओं का प्रकाशन कर, संग्रहणीय अंक प्रतिवर्ष जयपुर में राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस समारोह में विमोचन किया जाता रहा है । प्रत्येक माह प्रकाशित शिविरा का मई–जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार कुल 11 अंकों का नियमित प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित करने का सम्पादक मण्डल सार्थक व सकारात्मक प्रयास नियमित रूप से करता है। शिविरा पत्रिका को क्रय करने की तीन केटेगरी निर्धारित की गयी हैं, प्रत्येक की दर अलग है।

व्यक्तिगत – Rs. 100/– वार्षिक, राजकीय संस्थान – Rs. 200/– वार्षिक, गैर–राजकीय संस्थान – Rs. 300/– वार्षिक

निर्धारित भुगतान प्राप्ति के पश्चात, अगले माह से शिविरा पत्रिका दिए गए पते पर पोस्ट कर दी जाती है। यह प्रत्येक माह की 5 अथवा 6 तारीख को साधारण डाक से सदस्यों को भेजी जाती है। इस बाबत किसी भी नुकसान की जिमेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

आवेदन प्रक्रिया :

- शिक्षा विभाग के किसी भी पोर्टल यथा शालादर्पण पर दिए गए लिंक शिविरा पत्रिका हेतु ऑनलाइन आवेदन पर क्लिक कर सर्विस–प्लस पोर्टल को एक्सेस कीजिए।
- लेफ्ट साइड में दिए गए मेनू से पूर्व में पंजीयन नहीं किया हुआ है तो 'Register Yourself' मेनू आइटम के द्वारा पंजीयन करवाएँ।
- एक बार पंजियान होने के पश्चात दाईं और दिए गए लिंक 'Login' के माध्यम से पंजीकरण के समय दिए गए लोगिन/पासवर्ड द्वारा लॉग इन कीजिए।
- लोगिन के पश्चात बाएं और दिए गए मेनू आइटम के 'Apply Service' लिंक द्वारा आवेदन करें एवं चाही गयी सभी जानकारी ध्यान से भरें।
- पासवर्ड आदि भूलने की स्थिति में होम पेज के दायीं और दिए गए लिंक 'Forgot Password' बटन का इस्तेमाल करें ।
- ग्राहक के प्रकार एवं मासिक चाही गयी प्रतियों की संख्या का सही से चयन करें।
- आवेदन समाप्ति/ आवेदन पत्र प्रिंट पश्चात दिए गए लिंक द्वारा राज्य सरकार के पेमेन्ट पोर्टल 'eGRass' के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करें। दिए गए लिंक पर क्लिक के पश्चात प्रोग्राम स्वयं ही इग्रास लिंक पर ले जाएगा। भुगतान के समय दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

–शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर **फोन: 0151–2528875, मो: सम्पादक : 9460618809, वरिष्ठ सम्पादक: 9461074850**

www.rajsevak.com

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/वृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/वृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

साल का सबसे बड़ा धूमकेतु गुजरा, अब 2052 में लौटेगा

नई दिल्ली– धरती के पास से इस साल का सबसे बड़ा धूमकेतु (एस्टेरॉयड) 27 मार्च, 2021 को गुजर गया। इसे पृथ्वी को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा। अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के मुताबिक यह एस्टेरॉयड एफिल टॉवर से तीन गुना बड़ा है। यह पृथ्वी से करीब 20 लाख किमी. की दूरी पर 34.4 किमी प्रति सैकण्ड की रफ्तार से गुजरा। इसका नाम 2001 एफओ-32 रखा गया है। नासा ने बताया कि इस धूमकेतु का व्यास करीब 900 मीटर है बताया गया कि यह पृथ्वी करीब से गुजरा तो चमकता हुआ दिखाई दिया। यह अब 2052 में फिर पृथ्वी के निकट आएगा।

ऑनलाइन स्कूल से मिलेगी क्वालिटी एजुकेशन

भारत के पहले ऑनलाइन स्कूल (21के स्कूल) ने छात्रों को हर हाल में क्वालिटी एजुकेशन देना तय कर लिया है। मार्च 2020 में चार अनुभवी प्रोफेशनल और डोमेन एक्सपर्ट-संतोष कुमार, दिनेश कुमार, जोशी कुमार और यशवंत राज पारसमल ने मिलकर इस स्कूल को शुरू किया। यह स्कूल उपमहाद्वीपों, मिडिल ईस्ट और अफ्रीका जैसे देशों में छात्रों को व्यवस्थित तरीके से चाइल्ड एजुकेशन प्रोग्राम उपलब्ध कराता है। www.21kschool.com सेकेंडरी और हायर क्लासेज के लिए ऑनलाइन स्कूलिंग देता है। जून 2020 में स्थापना के बाद से लेकर अब तक इस स्कूल ने आठ देशों के 30 शहरों में 750 से भी ज्यादा छात्रों को 35 क्वालिटी एजुकेशन उपलब्ध कराने में मदद की है। भारत के नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क को फॉलो कर आसान फीस पर किंडर गार्डन से ग्रेड 8 तक बच्चों को घर से ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व डेटा एनालिटिक्स के प्रयोग से लर्निंग प्लेटफार्म देता है। यह बच्चों को जरूरत के अनुसार लर्निंग कंटेट देता है।

क्या होता वैक्सीन पासपोर्ट और क्यों जरूरी है

वैक्सीन पासपोर्ट एक तरह को डिलिटल डॉक्यूमेंट होता है, जो कि कोरोना का हैल्थ सर्टिफिकेट भी होता है। इसमें संबंधित व्यक्ति की कोरोनो से जुड़ी सभी जानकारी दर्ज होती है। इसमें व्यक्ति की आरटीपीसीआर की रिपोर्ट के साथ वैक्सीन का भी विवरण दर्ज होता है। जिन लोगों को वैक्सीन की दो डोज लग गई है। वे इसके लिए योग्य होते हैं। इसका उपयोग विदेश जाने पर होता है। विदेश जाने पर संबंधित व्यक्ति को होटल, रेस्टोरेंट, जिम, काम करने वाले जगहों के साथ सार्वजनिक स्थानों पर जाने की अनुमति मिलती है। इजरायल दुनिया का पहला देश है जिसने वैक्सीन पासपोर्ट फरवरी में ही शुरू कर दिया था। इसको लेकर कई देशों ने विरोध भी किया था।

कार्बन नैनोट्यूब से बनाई बिजली, छोटे रोबोट को चलाने के लिए कर सकते हैं उपयोग

मैसाचुसेट्स– अमरीका के मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआइटी) के इंजीनियरों ने छोटे कार्बन कणों (कार्बन नैनोट्यूब) का उपयोग करके बिजली पैदा करने का एक नया तरीका खोजा है। ये नैनो कार्बन कण आसपास के तरल के साथ मिलकर करंट बना सकते हैं। तरल (कार्बनिक विलायक) के कणों से इलेक्ट्रॉन खींचने से करंट उत्पन्न होता है। शोध के मुताबिक प्रति कण लगभग 0.7 बोल्ट बिजली उत्पन्न कर सकता है। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने यह भी दिखाया कि वे एक छोटी टेस्ट ट्यूब में सैकड़ों कणों का पैक बेड बना सकते है। यह पैक बैड रिएक्टर अल्कोहल ऑक्सीडेशन नामक एक रासायनिक प्रतिक्रिया को शक्ति देने के लिए पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न करता है।

सौरमंडल के बाहर खोजी पृथ्वी से मिलती-जुलती 'नई धरती'

वॉशिंगटन– अमरीकी वैज्ञानिकों ने सौरमंडल के बाहर किसी तारे की परिक्रमा करने वाले नए ग्रह (एक्सोप्लेनेट) की खोज की है। पृथ्वी से 90 प्रकाश वर्ष दूर इस अद्भुत ग्रह के बारे में कहा जा रहा है कि इस पर पृथ्वी की तरह पानी के बादल मिल सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो यह सदी की सबसे बड़ी खोज होगी। एक्सोप्लेनेट को टीओआइ-1231 बी नाम दिया गया है। यह 24 दिन में अपने तारे की एक परिक्रमा पूरी करता है। नए एक्सोप्लेनेट का तारा एलएनटीटी 24399 नाम से जाना जाता है। यह सूर्य से काफी छोटा और मंद है। न्यू मैक्सिकों विश्वविद्यालय में भौतिकी और खगोल विज्ञान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डायना ड्रैगोमिर का कहना है कि सूर्य और पृथ्वी की दूरी के मुकाबले एक्सोप्लेनेट अपने तारे के आठ गुना करीब है।

भारतीय बाजार के लिए एपल बोलेगा हमारी भाषाएँ

न्यूयॉर्क– एपल की नजर भारतीय बाजार पर है। उसने घोषणा की है कि उसका आर्टिफिशियल वर्चुअल असिस्टेंट सिस्टम यानी सीरी (स्पीच इंटरप्रेटेशन एंड रिकॉग्निशन इंटरफेस) अंग्रेजी के साथ नौ भारतीय भाषाओं हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, तमिल, बांग्ला, गुजराती, मलयालम और पंजाबी भाषाओं को सपोर्ट करेगा। अंग्रेजी के साथ चार बहुभाषाई शब्दकोष भी अपडेट होंगे।

जय हिंद की सेना... हमारी फौज दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली

नई दिल्ली– दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में भारतीय सेना चौथे नंबर पर है। इसमें तीसरे स्थान पर रूस, दूसरे स्थान पर अमरीका और पहले स्थान पर चीन की सेना है। यह खुलासा रक्षा मामलों की वेबसाइट मिमिट्री डायरेक्ट की जारी अल्टीमेट मिलिट्री स्ट्रेंथ इंडेक्स स्टडी में हुआ है। दुनिया का सबसे बड़ा सैन्य बजट होने के बावजूद अमरीका 100 में से 74 प्वाइंट हासिल कर सका है, जबकि भारत को 61 प्वाइंट मिले है। गौरतलब है कि दुनिया की सबसे ताकतवर चीनी सेना को भारतीय सेना ने पूर्वी लद्दाख में घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

पाली

रा.उ.मा.वि. आसरलाई, पं.स. जैतारण में अंबुजा सीमेंट कम्पनी CSR फण्ड 2,500 ट्रोली मिट्टी से मैदान का लेवल 2-2 फीट ऊँचा करवा दिया जिसकी अनुमानित लागत 4 लाख रुपये, सभी स्टाफ से 2,100-2,100 रुपये कलेक्ट करके विद्यालय भवन का कलर करवा दिया है। गाँव की सरपंच महोदया श्रीमती सरला मेवाड़ा ने जेसीबी से लेवलिंग कार्य करवाया जिसकी लागत 30,000 रुपये, श्री रतन वैष्णव से लोहे की अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 8,000 रुपये, श्रीमती सुमित्रा शर्मा (से.नि. अध्यापिका) से आठ लॉकर की अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये।

राजसमंद

रा.प्रा.वि. मानसिंह जी का गुड़ा, पं.स. कुंभलगढ़ को श्री सुनील जसोदिया से एक प्रिन्टर प्राप्त जिसकी लागत 10,750 रुपये, निर्मला देवी कुमावत से एक कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 10,750 रुपये।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. कुराड़िया तह. जहाजपुर में श्री रामपाल मीणा (से.नि. शा.शि.) द्वारा सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया तथा दिनांक 16.02.2021 को प्राण प्रतिष्ठा करवाया गया जिसकी कुल लागत 36,000 रुपये।

सीकर

रा.मा.वि., राजपुरा (डांसरोली) तह. दांतारामगढ़ को श्री नटवर लाल शर्मा से विद्यालय को एक ठण्डे पेयजल हेतु वाटर कूलर भेंट जिसकी लागत 25,165 रुपये।

श्रीगंगानगर

रा.उ.मा.वि. कालवासिया में श्री रामकुमार मूण्ड (से.नि. प्राध्यापक) द्वारा 54,700 रुपये की लागत से 20x16x4.75 फीट मय रेम्प मंच का निर्माण करवाया गया।

चूरू

रा.सी. सैकण्डरी स्कूल सादासर, सरदारशहर को श्री गोविन्द सिंह राठौड़ द्वारा एक लाख ग्यारह हजार रुपये विद्यालय को दान दिया। **रा.सी.सै. स्कूल जीवन देसर सरदारशहर** को श्री महेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा एक लाख पन्द्रह हजार एक सौ रुपये का दान दिया। **रा.उ.मा.वि. पिचकराई ताल** में श्री दिलीप सिंवर द्वारा मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में दो कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 8,00,000 रुपये मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में चैक द्वारा जमा करवाए हैं।

बाँसवाड़ा

रा.सी.सै. स्कूल, मोती बस्सी ब्लॉक अर्थुना को श्री गणेश लाल उपाध्याय द्वारा 51,000 रुपये विद्यालय को दान दिया।

हनुमानगढ़

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अजीतपुरा तह. भादरा को हाजी अलीबक्श कुरैशी की स्मृति में उनके सुपुत्र जनाब उम्रदराज कुरैशी एवं डॉ. अब्दुल गफ्फार कुरैशी द्वारा 2 लाख रुपये की लागत से सम्पूर्ण विद्यालय परिसर में 25 H.D. C.C.T.V. कैमरे लगवाए गए। श्री सतवीर से लाखलाण सरपंच ग्राम पंचायत अजीतपुरा ने 1,11,000/- अक्षरे

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

एक लाख ग्यारह हजार रुपये का आर्थिक सहयोग ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से नकद प्रदान किया।

नागौर

रा.उ.मा.वि. छोटी खाटू, डीडवाना में श्री कपूर चन्द बैताला द्वारा चार दिवारी का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 52,000 रुपये, सर्वश्री सुखवीर डूडी (प्रधानाचार्य), दयालाराम कडवासरा (पुस्तकालयाध्यक्ष), प्रेमचंद मारोठिया से प्रत्येक से चार दिवारी का निर्माण हेतु 31,000-31,000 रुपये प्राप्त हुए, सर्वश्री कल्याण सिंह राठौड़ (पूर्व सरपंच), सुरेन्द्र कुमार सारडीवाल, किशन सिंह खंगारोत, बाबू लाल गहलोत, रामूराम ठोलिया (से.नि. प्र.अ.) प्रत्येक से चार दिवारी के निर्माण हेतु 2,100-2,100 रुपये प्राप्त हुए, श्री नरेन्द्र राव से चार दिवारी निर्माण हेतु 15,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री शरबत चन्द धारीवाल, मेधाराम (पूर्व सरपंच), हेमाराम बेनिवाल, देवाराम जाखड़, शुभकरण कुरडिया, निर्भयराम गहलोत, डॉ. बी.डी. चारण, भंवर सिंह राठौड़, भंवर सिंह राठौड़, श्रीमती सीता देवी मुंदड़ा, सोहन लाल सांखला, घनश्याम सारडा प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये चार दिवारी निर्माण हेतु प्राप्त, सर्वश्री प्रेमराज सोनी, राधेश्याम सोनी तिलोक चन्द मारोठिया, रामेश्वर लाल खिचड़ (से.नि. ACDEO) नन्दकिशोर सोनी से चारदिवारी निर्माण हेतु प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये प्राप्त, श्री सोनराज सोनी से चार दिवारी निर्माण हेतु 3,100 रुपये प्राप्त, श्री हनुमान चन्द से चार दिवारी के निर्माण हेतु 2,100 रुपये प्राप्त। श्री मोती लाल नवल (से.नि. अति. जि.शि.अ. नागौर) द्वारा पानी की टंकी का निर्माण (10x10) जिसकी लागत 60,000 रुपये, श्री मुन्नालाल वर्मा (निदेशक महादेव बी.एड. कॉलेज, छोटी सादड़ी) से 2 कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 54,200 रुपये, श्री गोपी लाल सारडा से प्रधानाचार्य कक्ष का नवीनीकरण कराया गया जिसकी लागत 41,000 रुपये, श्री सुरेन्द्र कुमार (उड़ीसा) से 50 लोहे की टेबल स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 52,500 रुपये, श्री मनसुख सेठिया से लोहे की टेबल-स्टूल 25 नग प्राप्त जिसकी लागत 26,250 रुपये, श्री महेश कुमार सेठिया से टेबल-स्टूल 13 नग प्राप्त जिसकी लागत 13,650 रुपये, श्री बच्छराज बैताला से लोहे की टेबल-स्टूल 13 नग प्राप्त जिसकी लागत 13,650 रुपये, श्री सेठ नेमीचंद तोषनीवाल से कम्प्यूटर सैट मय प्रिन्टर प्राप्त जिसकी लागत 35,000 रुपये, वाटर कूलर भी प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री फूलचंद सारडीवाल से कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 27100 रुपये, श्री नवरतन मल सोनी से कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 27,100 रुपये, श्री मदनलाल सारड़ा व श्री नेहा एंटरप्राइजेज से एक-एक प्रिंटर प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 11,000-11,000 रुपये, सर्वश्री पूनमचन्द टाक, नोरतमल जोशी, त्रिलोकचंद सांखला (पूर्व प्रधानाध्यापक), श्री प्रताप सिंह राठौड़ प्रत्येक से स्टील 3टी चेयर नग 2 प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 10,400 रुपये, श्री रणवीर सिंह राठौड़ (सरपंच) गार्डन हेतु ईंटे प्राप्त जिसकी लागत 7,100 रुपये, श्री कालात प्रॉडक्ट छोटी खाटू से तार बंधी खंभा 10 नग प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये। संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जुलाई, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : जुलाई, 2021

बालशिविरा

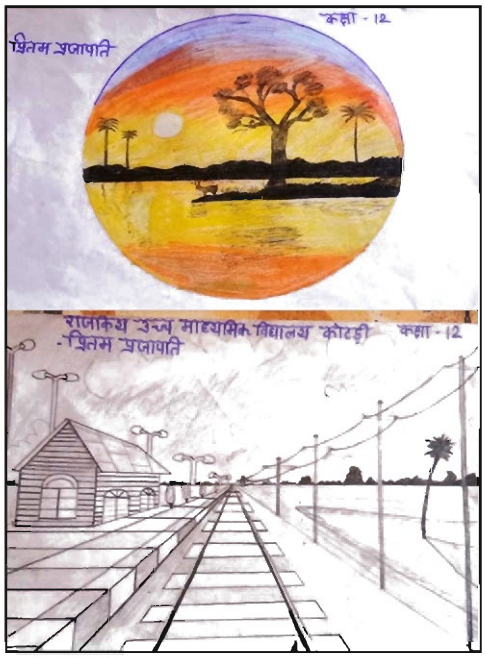

रा. उ. मा. वि. कोटड़ी में व्यवसायिक शिक्षा के अन्तर्गत हुनर है तो कदर है कार्यक्रम अन्तर्गत छात्र छात्राओं द्वारा बनाई गई पेंटिंग, चित्रकारी,कपड़ों पर उकेरी गई रंगोली, मेंहदी आदि कक्षा 12 के विद्यार्थी ।

अमिष सैनी, कक्षा - VI
एम.एस.एस.पब्लिक स्कूल
किशनगढ़ (अजमेर)

जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय बीकानेर में कार्यरत कनिष्ठ सहायक श्री दौलत सिंह पंवार द्वारा भेंट वाटर फिल्टर का उद्घाटन करते मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बीकानेर देवीसहाय सैनी एवं अन्य कार्मिक।

रा उ मा वि उन्हेल(सुनेल), झालावाड़ के विद्यार्थियों ने नासा के एस्टेरोइड खोज अभियान में भाग लिया और एस्टेरोइड खोजे। कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री दिनेश कुमार एवं प्रतिभागी विद्यार्थीगण।

मेराम चंद हूंडिया रा.बा.उ.वि. मोकलसर के शिक्षक ने शुक्रवार को घर जाकर स्माइल 3.0 अंतर्गत विद्यार्थियों को गृह कार्य वितरण एवं मूल्यांकन करते हुए।

रा उ मा वि नन्दौड़ जिला डूंगरपुर (राज.) के शाला प्रांगण में योग दिवस 21 जून को स्काउट प्रतिनिधी के सानिध्य में योग करते हुए शाला परिवार ।

www.rajsevak.com

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • जुलाई, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 जुलाई, 2021 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : जुलाई, 2021

(बाएं से दाएं) श्रीमती सी.एम. मूंदड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से निर्मित नापासर विद्यालय में माननीय शिक्षा मंत्री श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासर के पधारने पर हार्दिक अभिनन्दन पत्र से सम्मान करते हुए श्री कृष्ण मूंधड़ा।(मध्यम में)गौ सेवी संत पद्माराम कुलरिया (सुथार)ट्रस्ट के द्वारा विभाग के साथ एम.ओ.यू. हुआ जिसमें कक्षा 03 से 08 तक के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी माध्यम पाठ्यक्रम के अनुसार e-कक्षा के माध्यम से वीडियों बनवाए जाएंगें ।(अन्त में) श्री सौरभ स्वामी आइएएस निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा को निदेशालय में वैब साईट के उदघाटन अवसर पर पुस्तकों का सैट भेंट कर सम्मान किया गया साथ हैं शिक्षा अधिकारी एवं कार्मिकगण।

राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित आवासीय विद्यालय, बीकानेर में नव निर्मित छात्रावास भवन का उद्घाटन किया गया। इसका निर्माण कार्य नयवेली लिग्नाइट कॉरपोरेशन इण्डिया लिमिटेड, बरसिंहसर द्वारा 58 लाख की लागत से सीएसआर (कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व)के तहत करवाया गया।

श्रीमती गीता देवी बागड़ी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, नापासर, बीकानेर के भवन का नव निर्माण श्रीमती सी.एम. मूधड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा किया गया।श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा विद्यालय भवन का अवलोकन किया गया।